छत्तीसगढ़ का आधार-स्तंभ

पं. सुन्दरलाल शर्मा

छत्तीसगढ़ का आधार-स्तम्भ

पं. सुन्दरलाल शर्मा

●

संपादक-मंडल

पद्मश्री डॉ. महादेव प्रसाद पाण्डेय

डॉ. आभा रूपेन्द्र पाल

डॉ. सुपर्ण सेन गुप्ता

डॉ. व्यास नारायण दुबे

डॉ. जवाहर तिवारी

परामर्श

डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ का आधार-स्तम्भ

पं. सुन्दरलाल शर्मा

अनुक्रम

1.	छत्तीसगढ़ी के गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा	पद्मश्री डॉ. महादेव प्रसाद पाण्डेय	6
2.	पं. सुन्दरलाल शर्मा: राजनीति और समाज के दर्पण में	प्रो. आभा आर. पाल	9
3.	छत्तीसगढ़ी गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा	ललित मिश्रा	19
4.	साहित्य के पुरोधा : पं. सुन्दरलाल शर्मा	डॉ. रश्मि चौबे	21
5.	पं. सुन्दरलाल शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	श्रीमती प्रतिमा तिवारी	35
6.	छत्तीसगढ़ के स्वप्नदर्शी : पं. सुन्दरलाल शर्मा	डॉ. गोधूलि दुबे	42
7.	मेरे प्रेरणास्रोत पं. सुन्दरलाल शर्मा	श्री रेशमलाल जांगड़े	45
8.	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सूरज सक्सेना जी का संस्मरण	अर्चना कोरी	46
9.	छत्तीसगढ़ के गाँधी : पं. सुन्दरलाल शर्मा	डॉ. सविता मिश्रा	48
10.	साक्षात्कार : (1) डॉ. दुर्गा सिंह सिरमौर	साक्षात्कारकर्ता :	51
	(2) श्री रेशम लाल जांगड़े	आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र	52
11.	पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा हस्तलिखत : श्रीकृष्ण समाचार पत्र	आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र	56
12.	राष्ट्रीय जागरण के प्रणेता पं. सुन्दरलाल शर्मा	केयूर भूषण	59

पं. सुन्दरलाल शर्मा जयन्ती समारोह, दिनांक 21 दिसम्बर, 2009 के अवसर पर प्रकाशित, प्रकाशक : कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा प्रकाशित, मुद्रक साई वैभव प्रिंटर्स, सुन्दरनगर, रायपुर.

दो शब्द

• प्रो0 शिव कुमार पाण्डेय

"छत्तीसगढ़ के गाँधी' के नाम से विख्यात पं0 सुन्दरलाल शर्मा उन बिरले महापुरुषों में से एक है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से छत्तीसगढ़ का नाम भारतीय मानचित्र पर अंकित कराया और इस क्षेत्र को एक विशिष्ट पहचान प्रदान की । राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रणेता, भावुक कवि और अदम्य साहस के धनी पं0 सुन्दरलाल शर्मा राजनीति, समाज और साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर थे। एक ओर जहाँ वे स्वदेशी बहिष्कार और सत्याग्रह के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को दिशा दे रहे थे, तो दूसरी ओर उनका हृदय गरीब किसानों और समाज के दबे, कुचले अस्प्रश्यता का दंश झेलती निम्न जातियों के लिए धड़कता था । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के काकीनाड़ा अधिवेशन में भाग लेने के लिए नारायण राव मेधावाल में साथ राजिम से काकीनाड़ा तक की 700 कि0मी0 की पदयात्रा करने वाले संभ्रात ब्राम्हण जमीदार परिवार में जन्में पं0 सुन्दरलाल शर्मा कंडेल नहर सत्याग्रह के दौरान महात्मा गांधी को पहली बार 20 दिसम्बर 1920 का छत्तीसगढ़ लाए थे । छत्तीसगढ़ में सतनामी समाज से आत्मीय अंतरंगता स्थापित कर उन्हें यज्ञोपवीत धारण करा के, 1924 में राजिम के सुप्रसिद्ध राजीव लोचन मंदिर में हरिजन प्रवेश के माध्यम से हरिजनोद्धार का बीड़ा उठाने वाले और ताउम्र अपनी उदारता का, मन की विशालता का "दंड" भुगतने वाले पं0 सुन्दरलाल शर्मा किसी ऋषि से कम न थे । "अपरिग्रह" और "प्रत्याहार" का वे जीवित उदाहरण थे । धन्य है छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम, धन्य है भारत का ह्रदय छत्तीसगढ़, धन्य है ऋषियों की भूमि भारत, जहाँ तपस्वी, महादानी और कलम के धनी पं0 सुन्दरलाल का जन्म हुआ था ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा बहुभाषाविद थे । छत्तीसगढ़ी और हिन्दी के अलावा उन्हें संस्कृत, बंगला, उड़िया, मराठी और उर्दू का भी अच्छा ज्ञान था । उनकी भावना भाषा की मोहताज नहीं थी । गद्य और पद्य लेखन, दोनों में उनका समान अधिकार था लेकिन उन्हें कवि रूप में ही अधिक ख्याति प्राप्त हुई । उन्होंने ब्रजभाषा, खड़ी बोली और छत्तीसगढ़ी दोनों भाषाओं में रचनाएँ की है।

छत्तीसगढ़ी में लिखी " छत्तीसगढ़ी दान लीला" (1908, नरसिंह प्रेस, कलकत्ता) छत्तीसगढ़ी भाषा की प्रथम साहित्यिक कृति है । अपनी मातृभाषा से बेहद प्यार और लगाव था उन्हें, तभी तो 'दानलीला' के प्रथम संस्करण में ग्रंथ रचना का उद्धेश्य बताते हुए वे लिखते है "मुझे वास्तविक आनंद तो उस दिन से प्राप्त होगा जिस दिन हमारी यह प्यारी मातृभाषा भी देश की अन्य भाषाओं की भाँति अपनी उन्नति का सन्मार्ग अवलम्बन होगी ।" उनका यह सपना सन् 2008 में पूरा हुआ । वे छत्तीसगढ़ी पत्रकारिता के भी अग्रदूत थे । असहयोग आंदोलन के दौरान जेल गए पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने रायपुर जेल से हस्तलिखित पत्रिका निकाली थी, जिसका नाम भी "श्री कृष्ण जन्म–स्थान समाचार पत्र" सर्वथा उपर्युक्त था । श्रृंगार रस प्रधान दानलीला का रसिक कवि मानव मात्र की समानता का पुजारी भी था जो बेखौफ लिखता है:–

"भले बदनाम करैं बदलोग, अरे बरबाद चाहे होय जावे।

देश के हेव से देश निकाल रै, हर्ज नहीं कछु हंसत जाव ।"

वह भारत की स्वाधीनता का सिपाही भी था –

"जिस दिन उबाल बत्तीस करोड़ दिल का होगा
कौन है ऐसी ताकत, जवाब जिसका होगा ?"

पं0 सुन्दरलाल शर्मा जयंती के अवसर पर पं0 सुन्दरलाल शर्मा शोधपीठ और पं0 सुन्दरलाल शर्मा, ग्रंथागार पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के संयुक्त प्रयास से प्रकाशित इस पुस्तक में पं0 सुन्दरलाल शर्मा के बहुआयामी व्यक्तित्व के कुछ पक्षों को उजागर किया गया है । वैसे भी पं0 सुन्दरलाल शर्मा जैसे व्यक्तित्व को भाषा में कौन बांध सकता है ? पूर्णतः बंधन मुक्त, त्यागी, तपस्वी, कलाकार, साहित्यकार, राष्ट्रवादी, समाज सुधारक पं0 सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ के गाँधी ही नहीं छत्तीसगढ़ के भामाशाह भी थ ।

■ कुलपति
पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर

प्रकाशकीय

पं. सुन्दरलाल शर्मा निर्भिक, वक्ता, गंभीर चिंतक, सिद्धांतवादी, कट्टर समाज सुधारक एवं भविष्य दृष्टा थे। आजादी के आंदोलन के सिलसिले में उन्हें अनेक बार जेल यात्राएँ करनी पड़ीं । देश-सेवा के कार्य में उनकी माता एवं पत्नी का पूर्ण सहयोग उन्हें प्राप्त था । उन्होंने हरिजनों आदिवासियों के जागरण का जो कार्य किया है, वे सदैव स्मरणीय रहेगा । छत्तीसगढ़ में नवीन सामाजिक चेतना और नवीन जन-जागरण का कार्य करने का प्रथम श्रेय स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा को है । पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में सतनामी तथा अन्य अस्पृश्य जातियों के उद्धार का कार्य गाँधीजी के भारत आगमन के पूर्व कर दिया था । शर्मा जी ने जो क्रांति सामाजिक क्षेत्र में की, उस से छत्तीसगढ़ के पिछड़ो-वंचितों को अपने अधिकारों का ज्ञान हुआ ।

पं. सुन्दरलाल शर्मा के साहित्य में जो आधार छत्तीसगढ़ी साहित्य को दिया, वही आधार अन्य कार्यों से राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों को समाजसेवी और राजनीतिज्ञ किस प्रकार विविध क्षेत्रों में कार्य करते हुए आदर्श को प्राप्त कर सकता है, यह आज की पीढ़ी पं. सुन्दरलाल शर्मा से सीख सकती है ।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में विश्वविद्यालय को दिए गए सहयोग के प्रति मैं सभी लेखकों और संपादक-मंडल का आभार प्रकट करती हूँ । आशा है इन आलेखों से छत्तीसगढ़ की राजनीति, समाज और साहित्य को नई ऊर्जा मिलेगी ।

डॉ. इन्दु अनंत

कुलसचिव

संपादकीय

पं0 सुन्दरलाल शर्मा परिचय के मोहताज नहीं, फिर भी उन पर जितना लिखा जाए उतना कम है । साहित्य, समाज, राजनीति, कला हर क्षेत्र के स्थापित हस्ताक्षर थे वे । छत्तीसगढ की पृष्ठभूमि राजिम में जन्मे पं0 सुन्दरलाल शर्मा जी की किशोरावस्था कांकेर में बीती । वे सृजन का सूत्रधार थे –सृजन समाज का, सृजन राष्ट्र का, सृजन मानव–मात्र का । उनका लेखन सर्वग्राही नहीं था, अपितु सर्वहितकारी था । लेखन का उद्देश्य सौंदर्य, शांति, समानता और राष्ट्रहित परोसना था । लेखन उनका जीवन से जुड़ा था, जीवन की कठोर भूमि से, जीवन के सत्य से । 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' यही उनका काव्य था, यही जीवन का उद्देश्य था । अपने उद्देश्य के यज्ञ पर उन्होंने अपना जीवन भी होम कर दिया । होम करने हाथ नहीं अपने को ही भस्म कर डाला । उनके जीवन और लेखन व्यक्तित्व और कृतित्व को एक बार फिर प्रस्तुत करने का प्रयास है यह ।

संपादक मण्डल

छत्तीसगढ़ के गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा

• पद्मश्री डॉ. महादेव प्रसाद पाण्डेय

एक भारतीय वैचारिक मान्यता यह भी है कि कालजयी युग पुरुषों केसाथ ही साथ, उनके आदर्शों, उद्देश्यों में सहभागिता, सहकारिता के लिए अन्य व्यक्तियों का भी आविर्भाव होता है। उन्नीसवीं सदी में स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गाँधी इन दो व्यक्तियों को ही राष्ट्रीय एवं वैश्विक मान्यता प्राप्त है। सरदार पटेल, पंडित नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, विनोबा भावे, खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे व्यक्तित्वों की सहभागिता से महात्मा गाँधी के आदर्श सिद्धांत जन जन को प्रभावित किया। छत्तीसगढ़ क्षेत्र गौरवान्वित है कि पं. सुन्दरलाल शर्मा को खान अब्दुल गफ्फार खाँ सीमान्त गाँधी की तरह छत्तीसगढ़ के गाँधी के नाम से जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ अंचल की पवित्र भूमि में स्वामी विवेकानंद अपने बाल्यकाल में रायपुर में 2 वर्ष तक रहे। गाँधीजी 1920 में पं. सुन्दरलाल शर्मा जी के व्यक्तिगत आग्रहपूर्ण निवेदन के कारण, कंडेल नहर सत्याग्रह में दिशा-निर्देशन के लिए लाए गए थे।

कंडेल नहर सत्याग्रह की कार्यशैलीजन्य सफलता के लिए गाँधीजी ने पं. सुन्दरलाल शर्मा की प्रशंसा भी की थी तथा उनके अछतोद्धार के कार्य से अत्यंत प्रभावित हुए थे और उन्होंने इस क्षेत्र में उन्हें अपना गुरु माना था। गाँधीजी ने पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा अछूतोद्धार के लिए किए गए कार्यों पर अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था - ''इस क्षेत्र में सुन्दरलाल शर्मा जैसे प्रतिभावान, आदर्शों केलिए समर्पित व्यक्तित्व हैं, उस अंचल को कौन पिछड़ा कह सकता है।'' उनकी कर्मठ कीर्ति गाथा के कारण ही उनकी जन्मस्थली राजिम में महात्मा गाँधी 1933 में आए तथा इंदिरा गाँधी तीन बार आ चुकी हैं। पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने उनकी प्रतिमा का अनावरण किया था।

छत्तीसगढ़ में गाँधी का आगमन तथा छत्तीसगढ़ में गाँधी की कार्यशैली के अनुरूप कर्मठता तथा अछूतोद्धार के प्रति पं. सुन्दरलाल शर्मा के समर्पण के कारण उन्हें छत्तीसगढ़ का गाँधी कह कर संबोधित किया गया।

दक्षिण अफ्रीका में कहा जाता है कि भारत ने साऊथ अफ्रीका को मोहन दास गाँधी दिया और दक्षिण अफ्रीका ने भारत को महात्मा गाँधी के रूप में लौटाया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की जटिल समस्या के समाधान के लिए मोहनदास गाँधी ने सफल प्रयोग किया। भारत आकर यहां की समस्याओं तथा पराधीनता से मुक्ति की दिशा में अफ्रीका के अनुभवों का लाभ लेते हुए सफल हुए। एक विचारक की उक्ति थी कि भारतवर्ष के मानचित्र में आप जहाँ भी ऊंगली रखें वह क्षेत्र समस्याग्रस्त मिलेगा। भारत में वर्ण व्यवस्था की जन्मना मानकर ऊंच-नीच, छूत-अछूत की जटिल समस्या बन गई थी। पं. सुंदरलाल शर्मा ने सतनामियों को जनेऊ पहनाकर इस दिशा में श्लाघनीय कार्य किया। सतनामियों के घरों में प्रगतिशील विचारधारा के पंडित के द्वारा श्रीमद्‌भागवत का पाठ करवाया, सतनामी छात्रावास तथा कन्याशाला की स्थापना में उनका प्रभावी योगदान रहा। यद्यपि उनकी भागीदारी के कारण रुढ़िग्रस्त समाज ने 'सतनामी ब्राह्मण' की उपाधि देकर अपमानित किया।

भारत कृषि प्रधान देश है। विदेशी शासन एवं देशी रजवाड़े अपने कारिन्दों द्वारा किसानों एवं आदिवासियों का शोषण करते तथा उन्हें आर्थिक सामाजिक कष्ट पहुँचाते थे। पं. सुन्दरलाल शर्मा की जन्मस्थली राजिम थी, किंतु उन्होंने अपनी कर्मस्थली धमतरी तथा सिहावा नगरी के अरण्य क्षेत्र को बनाया। महात्मा गाँधी ने सन 1916-17 में बिहार के चम्पारण्य क्षेत्र में प्रथम सफल किसान आंदोलन चलाया था। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 1920 में पं. सुन्दरलाल शर्मा के नेतृत्व में कंडेल नहर सत्याग्रह हो चुका था। सन 1921 में महात्मा गाँधी असहयोग आंदोलन की घोषणा की। छत्तीसगढ़ में 1922 नगरी में संभवत: देश में प्रथम जंगल सत्याग्रह पं. सुन्दरलाल शर्मा की सहभागिता में हुई। इस सिलसिले में पं. शर्मा पर राजद्रोह का मुकदमा चला और उन्हें एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा भी दी गई। इस तरह इस क्षेत्र के वे प्रथम राजनैतिक स्वतंत्रता सेनानी का गौरव प्राप्त कर रायपुर जेल में यातना सही।

ब्रिटिश शासन के प्रोत्साहन तथा स्वार्थी दूषित राजनीति के कारण स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता में हिंदू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता बड़ी बाधा थी। इसके कारण साम्प्रदायिक दंगे छत्तीसगढ़ में पं. सुन्दरलाल शर्मा के प्रयासों से नहीं हो पाए। धमतरी क्षेत्र में हिंदू-मुस्लिम सौहार्द्र बेमिसाल थी। गाँधीजी ने एक मुस्लिम व्यवसायी को अपने कंधों पर बैठाकर उन्हें सभास्थल तक ले गए थे। जिस मोटरकार से वे धमतरी आए थे, उनका ड्राइवर भी मुस्लिम था। उनकी कार की वैध परमिट आरंग तक था। इस अवैध कारनामे से, धमतरी कार्यक्रम के बाद उनका परमिट निरस्त कर दी गई थी।

ऐसे स्वातंत्र्य आदर्शों में लिप्तता के कारण पं. सुन्दरलाल शर्मा जी को जेलयात्रा के साथ-साथ आर्थिक संकट भी जूझना पड़ा था। शर्मा जी का परिवार सम्पन्न मालगुजार परिवार था। कांकेर क्षेत्र में उनके 22 गाँव तथा राजिम क्षेत्र में 3 गाँव थे। आर्थिक दण्ड, कुर्की आदि में उनके परिवार को 18 एकड़ ही शेष रहा। लेकिन इससे वे विचलित नहीं हुए और अपने कर्तव्यों के प्रति संलग्न रहे। ऐसे त्यागी तपस्वियों के कारण ही यह देश स्वतंत्र हुआ। इसका श्रेय ऐसे छत्तीसगढ़ के महापुरुषों को है।

पंडित सुन्दरलाल जी में सत्याग्रह के बीच बाल्यकाल से ही लक्षित होते हैं। महात्मा गाँधी को उनकी बैरिस्टरी शिक्षा केलिए विदेश जाने की सशर्त अनुमति उनकी माताजी के द्वारा तब मिली जब उन्होंने यह स्वीकार किया कि वे मद्यपान एवं मांसाहार नहीं करेंगे।

पंडित सुन्दरलाल जी के परिवार में देवी के प्रसाद के रूप में मांसाहार की परम्परा थी। 9 वर्ष की उम्र में ही बालक ने अनशन कर दिया कि जब तक मांसाहार की परम्परा समाप्त नहीं होगी वे अन्न ग्रहण नहीं करेंगे। बालहठ के सामने परिवारजन झुके और मांसाहार की परम्परा समाप्त हुई।

उनकी प्राथमिक शिक्षा पाँचवीं तक राजिम में ही हुई। इसके पश्चात कुछ अवधि तक कांकेर में जहाँ उनके पिताश्री वकील थे, राजकुमारों के साथ उन्हें वैविध्य, वैभवशाली शिक्षा मिली। उन्होंने हिंदी के अतिरिक्त, बंगला, उड़िया, मराठी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत का भी अध्ययन किया। इसका प्रभाव उनकी वैचारिक प्रतिभा के विकास में हुआ। वे हिंदी के विरोधी नहीं थे, किंतु उन्होंने छत्तीसगढ़ी में रचना करके छत्तीसगढ़ी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को प्रकाशित किया। छत्तीसगढ़ी में उनकी 'दानलीला' जन-जन के मस्तिष्क में छा गई थी। अपनी इस शिक्षा के कारण ही उन्होंने रींवा राजा की जीवनी तथा अंग्रेजों के श्लाघनीय चरित्रों की प्रशंसा में 'विक्टोरिया वियोग' की रचना की। उनकी लेखनी ने समाज को 22 कृतियाँ दीं।

महात्मा गाँधीने जन-आंदोलन एवं विसंगतियों के निराकरण की दिशा में वैचारिक दृढ़ता के लिए पत्रकारिता एवं लेखों का माध्यम लिया। साउथ अफ्रीका में उन्होंने 'इंडियन ओपिनियन' नामक पत्र निकालकर वहाँ प्रबुद्धजनों को प्रेरित करने में सफलता पाई थी। पं. सुन्दरलाल शर्मा ने भी जेल कारावास के समय 'दुलरुवा' तथा 'राजिम प्रेम पीयूष' पत्रिका निकाली। उन्होंने नाटक, जीवनी, कविता, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। पं. सुन्दरलाल शर्मा का तत्कालीन प्रसिद्ध साहित्यकारों जैसे माखनलाल चतुर्वेदी, रामदयाल तिवारी, लक्ष्मीधर वाजपेयी, सोमदेव परिव्राजक, माधवराव सप्रे, लोचनप्रसाद पाण्डेय आदि से जीवंत संपर्क था।

उन्होंने राजिम में 'कवि समाज' की स्थापना भी की थी। पं. सुन्दरलाल शर्मा ऋषि-परम्परा के भविष्यद्रष्टा व्यक्तित्व के धनी थे। ऋषि की एक परिभाषा ''ऋषयो हि मन्त्रद्रष्टार: हे'' मंत्र ऋषियों के समक्ष प्रत्यक्ष उपस्थित होते थे। छत्तीसगढ़ राज्य की अवधारणा उनके लेखनी से बहुत पूर्व ही अभिव्यक्त थी। उन्होंने ब्रिटिश शासन काल में ही अपनी कर्मस्थली धमतरी को जिला बनाने की माँग उठाई थी, जो स्वतंत्र भारत में छत्तीसगढ़ राज्य में अब चरितार्थ हुई है।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी साधक यात्रा सुगम नहीं रही। उन्हें सामाजिक अपमान, आर्थिक कष्ट, जेल यातना, आदि विभिन्न कण्टकाकीर्ण मार्गों से आगे बढ़ना पड़ा। सर्वाधिक कष्ट उन्हें अपने योग्य, प्रतिभासम्पन्न पुत्र पं. नीलमणि शर्मा के असामयिक निधन से हुआ, जिसके कारण वे अंदर से बहुत टूट चुके थे। इन संत्रासों का प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा और वे केवल 59 वर्ष की

अवस्था में सन 1940 में दिवंगत हो गए। पंडित जी की कीर्तिगाथा इस क्षेत्र के कण-कण में व्याप्त है। संक्षिप्त संस्मरण के रूप में यहाँ अभिव्यक्त है। उनकी मृत्यु के समय लेखक स्वयं 11 वर्ष की वय का बालक ही था।

भारतीय संस्कृति अपने आपमें सम्पूर्ण संस्कृति है। रविशंकर विश्वविद्यालय तथा अन्य संस्थाएँ उनके जन्म दिवस 21 दिसम्बर 1881 (पौष अमावस्या तिथि संवत 1938) को मानती है। विभिन्न संस्थाओं का नामकरण उनके नाम पर किया जा रहा है। उनके संबंध में पर्याप्त साहित्य प्रस्तुत हुए हैं। उन पर और भी कार्य किए जाने की आवश्यकता आज भी है। उन्होंने डायरी भी लिखी है। उसका भी प्रकाशन होना चाहिए।

यह भी तथ्य है कि छत्तीसगढ़ के ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, राष्ट्रीय व्यक्तित्व के बारे में जानकारी छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन के प्रति जन आकर्षण के लिए विगत 25 वर्षों से हो रही है। ऐसे परिमल, प्रेरणादायी आयोजनों के प्रति एक दीप काली छाया भी मंडराने लगी है। जिसके प्रति सतर्कता वांछनीय है।

स्वतंत्रता प्राप्ति तथा छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद यह उल्लेख होने लगा है कि स्वराज्य तो मिल गया पर सुराज नहीं मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अल्पकाल में ही महात्मा गाँधी जी तथा छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बहुत पूर्व ही पं. सुन्दरलाल शर्मा जी दिवंगत हो गए। पं. सुन्दरलाल ने स्वतंत्र भारत की व्यवस्था के संदर्भ में 'हिन्द स्वराज' नामक छोटी सी पुस्तिका लिखी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन दिशा-निर्देशों पर समय के अनुसार आवश्यक संशोधन के साथ यदि उसका पालन होता तो ये विसंगतियाँ नहीं होतीं जो कि भारत की ऋषि संस्कृति का अवमूल्यन करते हुए, उद्योग-संस्कृति पर आधारित हो गई है। उद्योग संस्कृति मूलतः अर्थ आधारित संस्कृति है। भारतीय संस्कृति में आर्थिक पक्ष को नकारा नहीं गया है। उद्योग संस्कृति उपभोक्तावादी संस्कृति है। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा पृथक राज्य बनने के बाद सुराज की विसंगति तभी दूर होगी जब महात्मा गाँधी तथा छत्तीसगढ़ के गाँधी के त्याग, तपस्या, संयम, नैतिकता पर आधारित स्वतंत्रता तथा स्वतंत्र भारत में उनकी उदिष्ट कल्पना आधारित व्यवस्था स्थापित होगी। तभी इन आत्माओं को संतुष्टि होगी एवं उनके जन्म दिवस के आयोजन की सार्थकता प्रमाणित होगी। अन्यथा, यह ऐसे आयोजन औपचारिकता की परिधि से बाहर नहीं निकल पाएंगी।

यह एक प्रसिद्ध उक्ति है कि जो समाज अपने अतीत या इतिहास को स्मरण नहीं करता, वह उन्नति नहीं कर सकता। वस्तुतः इस उक्ति को इतिहास के घटनात्मक पक्ष से भ्रमवश माना जाता है जो कि कुछ काल के बाद औपचारिकता एवं विस्मरण में परिणत हो जाता है। इतिहास का दूसरा पक्ष जीवन मूल्य आधारित चारित्रिक आकलन का पक्ष होता है। शाश्वत का अर्थ उसके गतिहीनता (स्टेटिक) नहीं अपितु समयानुसार संशोधनसहित गतिशीलता का द्योतक है। पं. सुन्दरलाल शर्माजी का जन्मोत्सव आयोजन इसी परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए। ■

पं. सुन्दरलाल शर्मा

पं. सुन्दरलाल शर्मा: राजनीति और समाज के दर्पण में

• प्रो. आभा आर. पाल

भूमिका :

राष्ट्रीय मुख्य धारा से कुछ दूर कुछ अलग-थलग होते हुए भी छत्तीसगढ़ क्षेत्र सभी राष्ट्रीय घटनाओं से जुड़ा रहा। ब्रिटिश शासन काल में जो सामाजिक भेद-भाव और आर्थिक शोषण समूचे भारत को आहत किए हुए था, वहीं छत्तीसगढ़ क्षेत्र के लोगों को भी खून के आँसू रुला रहा था। सन् 1857 की क्रांति की दस्तक यहाँ भी सुनाई दी। सोनाखान के जमींदार नारायण सिंह ने यहाँ की भूखी जनता (1856 में छत्तीसगढ़ में अकाल पड़ा था) के लिए अनाज भंडारों के ताले तोड़ दिए।[1] तत्पश्चात् कुछ ऐसा घटनाक्रम चला कि रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट ने उनकी गिरफ्तारी के लिए वारंट जारी किया। एक लंबे संघर्ष के बाद वे गिरफ्तार हुए। देशद्रोह और विद्रोह के आरोप में मुकदमा चलाकर उन्हें फांसी की सजा दी गई।[2] इस प्रकार 6 दिसंबर 1857 को छत्तीसगढ़ का प्रथम शहीद नारायण सिंह इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गए। इसके पश्चात मेगजीन लश्कर हनुमान सिंह ने तीसरी टुकड़ी के सार्जेंट मेजर सिडवेल की 18 जनवरी 1858 को उनके घर में घुसकर हत्या कर दी।[3] इसके बाद वे उत्तेजित स्वर में चिल्लाते हुए अपने साथियों को क्रांति के लिए प्रेरित करते रहे। हनुमान सिंह का कोई विवरण इसके बाद नहीं मिलता परंतु उनके 17 साथी गिरफ्तार किए गए और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया।[4]

छत्तीसगढ़ में 1857 के बाद लगातार राष्ट्रीयता का विकास होता रहा जिसके संदर्भ शासकीय रिपोर्टों में मिलते हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात राष्ट्रवादी भावना को एक निश्चित मंच मिला। कांग्रेस का सातवाँ वार्षिक अधिवेशन नागपुर में हुआ। इस सम्मेलन में पहली बार छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय पहचान मिली जब यहाँ के किसानों पर लगाए गए नहर कर पर चर्चा की गई और मालगुजारों तथा किसानों द्वारा इसका तीव्र विरोध किया गया। उन्होंने मांग उठाई कि लगान निश्चित और स्थाई हो। साथ ही किसानों को न्यूनतम ब्याज पर कर्ज देने की व्यवस्था की जाय।[5]

नई शताब्दी (सन् 1900) का प्रारंभ वंदे मातरम् युग था। छत्तीसगढ़ की जनता को राष्ट्र की घटनाओं से अवगत करा उनमें राष्ट्रीयता की भावना भरने के लिए पं. माधव राव सप्रे ने वामन राव लाखे और रामराव चिंचोलकर के सहयोग से छत्तीसगढ़ मित्र का प्रकाशन किया। सन् 1901,1902,1903 एवं 1904 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में पं. माधवराव सप्रे एवं रामराव चिंचोलकर उपस्थित थे। सन् 1904 के अधिवेशन में पं. रविशंकर शुक्ल भी उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूतों में पं.सुन्दरलाल शर्मा का नाम अग्रणी है। उनके कार्यक्षेत्र का मुख्यालय राजिम था परंतु उन्होंने समूचे छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व किया। वे छत्तीसगढ़ के राजनीतिक चेतना के अग्रदूत थे। राजनीतिक जागरण का कारण सामाजिक आंदोलनों की पृष्ठभूमि में होता है। इस गूढ़ तथ्य को समझने वाले पं. सुन्दरलाल शर्मा बीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधारों के भी प्रणेता माने जाते हैं। इस शताब्दी के प्रारंभ में उन्होंने छत्तीसगढ़ में सामाजिक सुधारों और राष्ट्रवाद की नींव रखी। तिलक युगीन नेताओं का प्रभाव पं.सुन्दरलाल शर्मा पर गहरा पड़ा था। केसरी और मराठा के नियमित पाठक पं. सुन्दरलाल शर्मा में किशोरावस्था से ही राजनीतिक चेतना का प्रस्फुटन हो चुका था। पीपुल टीचर्स ऐसोसिएशन, कवि समाज, छत्तीसगढ़ बाल समाज जैसी राष्ट्रवादी संस्थाएँ भी इस अंचल के युवा वर्ग को राष्ट्रीयता की ओर प्रेरित किया था।[6]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही भारत में राष्ट्रीय आंदोलन एक विशिष्ट दिशा प्राप्त करता है। सन् 1897 में कांग्रेस की 13 वीं वर्षगांठ अमरावती में समारोह के साथ मनाई गई। 13 वर्ष के जीवन में कांग्रेस ने पूर्ण रुप से यह सिद्ध कर दिया था कि वह एकमात्र राष्ट्रीय संस्था इस देश में है। किसी राष्ट्रीय संस्था के लिए यह आवश्यक नहीं प्रत्येक जाति और प्रत्येक मनुष्य व्यवहारिक रुप से उस संस्था से संबद्ध हो। संस्था के राष्ट्रीय होने के लिए यह पर्यक्त है कि उसका स्वरुप प्रतिनिधि रुप हो,

उसमें राष्ट्रीय भाव हो और उसका आदर्श राष्ट्रोन्नति तथा इसी उद्देश्य के अनुसार उसके द्वारा कार्य हो। राष्ट्रीय संस्था राष्ट्रीय लाभों को जनता के सामने रखकर सबका ध्यान उस ओर केन्द्रित करे। इस तरह राष्ट्रीय संगठनों से जागृति होते आई है।[7.] पं. सुन्दरलाल शर्मा का कांग्रेस के साथ जुड़ना अत्यंत स्वाभाविक था। सन् 1906 में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता भी ग्रहण कर ली। छत्तीसगढ़ में स्वदेशी आंदोलन के भी प्रणेता थे। सन् 1906 में ही उन्होंने संमित्र मंडल की स्थापना की इसका उद्देश्य समाज सुधार के साथ छत्तीसगढ़ की जनता में राष्ट्रीय भावना का प्रसार करना था। यह बंगाल के स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित था।[8.] इस संस्था के तत्वावधान में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने राजिम,धमतरी और रायपुर में स्वदेशी वस्तुओं की दुकानें खोली। उनके साथ इन दुकानों में पं. नारायण राव मेघावाले, ठाकुर पूरणसिंह यादव, राव जी तथा रामाधीन ने भी अपनी पूंजी लगायी। पं. सुन्दरलाल शर्मा देश के विभिन्न भागों से स्वदेशी वस्तुएँ खरीदकर इन दुकानों में बेचते थे। इन दुकानों के माध्यम से वे लोगों में स्वदेशी और राष्ट्रवाद जागृत करने का प्रयास करते रहे। उनके लिए यह एक मिशन था। व्यापार नहीं फलतः उन्हें नुकसान हुआ, इस ओर पूरा ध्यान देने के कारण उन्हें वे कृषि में भी समय न दे सके। इस प्रकार यह नुकसान बढ़ता गया। भरपाई करते-करते वे कर्ज में डूब गये। अनुमान है, कि व्यक्तिगत रुप से उन्हें 10,000 रुपए का घाटा हुआ, जिसकी पूर्ति हेतु नवापारा स्थित अपनी राईस मिल और चमसूर गाँव बेच दिया। यही स्थिति पं. नारायण राव मेघावाले की भी थी। उन्हीं के साथी रामाधीन ने पं. सुन्दरलाल शर्मा पर मुकदमा चलाया था क्योंकि वे ही इन स्वदेशी दुकानों के मुख्य प्रबंधक थे। बदकिस्मती से वे ये मुकदमा हार गये और अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति गँवा बैठै।[9.] यह एक महान त्याग था। छत्तीसगढ़ के लिए राष्ट्रीयता की वेदी पर वे इस काल के भामाशाह थे।

सन् 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व किया। उसी कांग्रेस का प्रांतीय सम्मेलन रायपुर में हुआ, जिसकी अध्यक्षता केलकर ने की थी। हरी सिंह गौड़ इस स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। इस सम्मेलन में पं. सुन्दरलाल शर्मा की उपस्थिति का कोई उल्लेख नहीं मिलता। सूरत में कांग्रेस की फूट का असर रायपुर अधिवेशन में स्पष्ट दिखाई देता है। रायपुर सम्मेलन में भी कांग्रेस दो दलों में विभाजित थी।[10.]

पं. सुंन्दरलाल शर्मा की एक अहम् भूमिका छत्तीसगढ़ में कृषक सभाओं के आयोजन में भी थी। स्वयं एक जमींदार घर में जन्म लेने के बावजूद उनका हृदय किसानों की समस्याओं के लिए धड़कता था। इतिहास में ऐसा कोई बिरला ही होगा, जिसने स्वेच्छा से समाज व राष्ट्र के विकास के लिए दरिद्रता का वरण किया हो। साहूकारों और अंग्रेजी शासन के दोहरे शोषण से ग्रसित किसानों की गहरी पीड़ा का वे अनुभव करते थे। 1915 में उन्होंने राजिम में किसान सभा का आयोजन किया, जिसके अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शुक्ल थे। कालांतर में उन्होंने किसानों को साहूकारों के चंगुल से मुक्त करने के लिए ऋण मुक्ति सहायक फंड की भी योजना बनाई। कंडेल नहर सत्याग्रह में उनकी भूमिका की यह पृष्ठभूमि मानी जा सकती है।

कण्डेल नहर सत्याग्रह :

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाए गए आंदोलन की तरह छत्तीसगढ़ में भी, किसानों की समस्या को लेकर ही आंदोलन प्रारंभ हुआ। धमतरी तहसील के कण्डेल ग्राम का नहर-सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिपिबद्ध हैं। पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले व बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव जनजागरण के अग्रदूत रहे।

धमतरी तहसील के अंतर्गत माड़मसिल्ली गाँव के निकट सैलयारी नदी पर बांध बनाया गया, जिससे संपूर्ण धमतरी तहसील को सिचाई के लिये पानी मिल सके। इसका पानी महानदी में प्रवाहित कर रुद्री गाँव के पास दूसरा बांध बनाया गया अंग्रेजों ने तत्काल लाभ कमाने के उद्देश्य से कृषकों के साथ 10 वर्षीय समझौता करके लगान वसूलना चाहा। जनता इस निर्णय से सहमत नहीं थी। फलतः जनता पर नहर के पानी की चोरी का झूठा आरोप लगा दिया गया।[11.] गाँव वालों ने इस आरोप का खण्डन किया, लेकिन अंग्रेजों ने उन पर 4303 रुपयों का कर लगाया और ना देने पर किसानों के मवेशी कुर्की के वारंट

जारी कर दिये। जुलाई माह के आरंभ में पं.सुन्दरलाल शर्मा, श्री मेघावाले तथा छोटेलाल बाबू ने अंग्रेजी शासन की इस मनमानी के विरुद्ध जनता को फैसला दिया कि हम सत्याग्रह करेंगे और किसी भी परिस्थिति में रकम नहीं चुकायी जाएगी। फलस्वरुप गाँव वालों का दमन आरंभ हुआ। शासन ने मवेशियों पर अधिकार कर लिया और नीलामी के लिये बाजार ले जाया गया पर उन्हें कोई खरीददार नहीं मिला। परिस्थिति दिन पर दिन गंभीर होती जा रही थी। 2 दिसंबर 1920 को पं. सुन्दरलाल शर्मा गाँधीजी से मिलने कलकत्ता गए और कण्डेल ग्राम की स्थिति और अंग्रेजों की दमन नीति का वर्णन करके, आंदोलन में मार्गदर्शन व सहयोग मांगा। गाँधी जी ने पं. सुन्दरलाल शर्मा को रायपुर आने का वचन दिया। [12.] और उनके साथ 20 दिसंबर 1920 को महात्मा गाँधी रायपुर आये। उसी दिन उन्होंने गाँधी चौक में एक विशाल जन सभा को संबोधित किया। वहाँ से वे धमतरी और कुरुद गए। गाँधी जी के आने पर प्रशासन सकते में आया और आक्रोश और वस्तुस्थिति की जानकारी व निरीक्षण करके उसने पाया कि किसान किसी कीमत पर झुकने को तैयार नहीं, तब सरकार ने वसूली रद्द करने की घोषणा कर दी। कण्डेल नगर सत्याग्रह स्थगित हो गया। गाँधी जी धमतरी से ही वापस लौट गए और वापसी पर पुनः रुके।

इस प्रकार ये कृषकों की जीत थीं, जिन्हें नेतृत्व और आत्मबल पं. सुन्दरलाल शर्मा, छोटेलाल श्रीवास्तव और नारायण राव मेघावाले ने प्रदान किया था। जिनके नेतृत्व में यह आंदोलन पूर्णरुपेण सफल रहा। यह राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का पूर्व सूचक सत्याग्रह था।

असहयोग आंदोलनः - भारत में जन आंदोलन का प्रारंभ एक पूर्व निर्धारित योजनानुसार गाँधीजी के नेतृतव में असहयोग आंदोलन से प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय चेतना का विकास हो चुका था और कण्डेल नहर सत्याग्रह के माध्यम से आम जनता क्षेत्रीय नेताओं के नेतृत्व में आंदोलन का अनुभव प्राप्त कर चुकी थी असहयोग आंदोलन के प्रमुख कार्यक्रम स्वदेशी, बहिष्कार,राष्ट्रीय शिक्षा के अंतर्गत रायपुर में 5 फरवरी 1921 को राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई जिसमें संचालक समिति का अध्यक्ष बनाया गया।[13.] विद्यार्थियों की शिक्षा का स्वदेशी प्रबंध करने के लिए छत्तीसगढ़ में स्थापित होने वाले राष्ट्रीय विद्यालय ने गाँधीवादी स्वतंत्रता संग्राम के प्रसार तथा गाँधीवाद के प्रचार का केन्द्र बनकर रायपुर जिले सहित संपूर्ण छत्तीसगढ़ ने सत्य, अहिंसा, चर्खा, खादी तथा असहयोग का परचम लहराया। इस मुहिम यहाँ शुरु करने का श्रेय पं. सुन्दरलाल शर्मा जैसे मनीषियों को जाता है। पं. सुन्दरलाल शर्मा ने जिले का दौरा कर गाँव-गाँव में असहयोग का मंत्र फूँका। धमतरी तहसील उनका विशेष कार्यक्षेत्र था। दस गाँवों में असहयोग आंदोलन के प्रचार हेतु केन्द्र खोले गये उनके तथा सहयोगगियों के प्रयास से धमतरी तहसील में 4553 कांग्रेस सदस्य बनाये गये जो जिले की सब तहसीलों से अधिक संख्या थी। [14.]

1 अगस्त 1921 को रायपुर में स्वदेशी प्रचार तथा विदेशी सामानों के बहिष्कार के लिये एक जुलूस निकाला गया, यह अपने समय का सबसे बड़ा जुलूस था। 6 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक खादी प्रदर्शनी सप्ताह का आयोजन किया गया। नगर के सभी व्यापारियों ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया। साथ विदेशी वस्तुओं की बिक्री ना करने की प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कियें। [15.]

स्वराज, स्वदेशी और गाँधी-इन शब्दों का जादू गाँवों की गलियों तक पहुँच गया तथा पं. सुन्दरलाल शर्मा, श्री मेघावाले, मौलाना अब्दुल रऊफ खाँ, पं. भगवती प्रसाद मिश्र मौलाना हामिद अली को जेल की सजाएँ भुगतनी पड़ी।[16.]

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि पं. सुन्दरलाल शर्मा एक ऊँचे दर्जे के साहित्यकार भी थे। राष्ट्रवादी भावना को स्वराज के संदर्भ में उन्होंने काव्य रुप में प्रस्तुत किया। उनकी अनेक रचनाओं में से एक की कुछ पंक्तियाँ स्वराज गीत नाम से लिखी गईं, जो अप्रकाशित हैं-

छोड़ो-छोड़ो ये नौकरी को, मेरे प्यारे भारत भाई।
सब धन को खो बैठे हैं, छोड़े हैं सारी कमाई।
छोड़ो-छोड़ो...।।
धर्म छूटा-ये कर्म छूटा, भारत को हो गई ये दुख भारी।
तुमरे बिना छोड़े से, पूरी न होगी कमाई।
छोड़ो-छोड़ो...।।

गौ माता को देखो, लाखों ने मुड़ कटाई।
ऐसे गाँवों की पापों से भारत माता थर्राई।
छोड़ो-छोड़ो...।।
शराब छोड़ो, कपड़ा विदेशी छोड़ो, खादी रुप बनाई।
स्वतंत्रता को ले लो, भारत की होगी भलाई।
छोड़ो-छोड़ो...।।

सन् 1920 का वर्ष संपूर्ण राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत महत्वपूर्ण रहा, छत्तीसगढ़ में भी इसकी प्रतिध्वनि सुनायी दी। स्थानीय स्तर पर नेतृत्व मिला और जनसाधारण की भागीदारी और योगदान बढ़ता गया भविष्य में होने वाली राजनीतिक हलचलों के लिये जनमानस प्रशिक्षित हो गया था।

सिहावा जंगल सत्याग्रह :

जनवरी 1922 में वन-विभाग की नादिरशाही के विरोध में सिहावा जंगल सत्याग्रह आरंभ किया गया। इस सत्याग्रह के प्रणेता भी पं. सुन्दरलाल शर्मा ही थे। निस्तार के लिये जंगल से जलाऊ लकड़ी काटने का कार्यक्रम बनाया गया इसमें श्यामलाल सोम आनंदराय, हरखराम, पंचम सिंह, समेदास, श्रीराम सोम, मंगलू केवट, पं. गिरधारी लाला, शोभाराम साहू, विश्वंभर मरार, रामजीवन सोनी, नोहरसिंह आदि सत्याग्रहियों ने भाग लिया इसमें से अधिकांश नगरी निवासी थे। नगरी और आसपास के गाँवों पर सामूहिक जुर्माना किया गया। जिसे चुकाने से इंकार कर दिया गया। इस आरोप में मार्च 192 को पं. सुन्दरलाल शर्मा तथा श्री नारायण राव को गिरफ्तार किया। [17]

बैजनाथ पंड्या ए.डी.एम की अदालत से पं. शर्मा को 1 वर्ष की सजा तथा नारायण राव मेघावाले जी को 8 माह की कठोर सजा सुनायी गयी। 1922 में जेल में रहते हुये भी उन्होंने ब्रिटिश शासन का विरोध जारी रखा और उनकी गलत नीतियों और कार्यो को कृष्ण-जन्म-स्थान समाचार पत्र नाम से एक हस्तलिखित पत्रिका निकालना आरंभ किया। सारांश यह कि वे ब्रिटिश नीतियों का विरोध करने का कोई अवसर खोना नहीं चाहते थे। जीवन के हर समय का उपयोग करके, देश सेवा पर अर्पित करना चाहते थे।

असहयोग आंदोलन की प्रथम शर्त सत्य और अहिंसा का मन,वचन और कर्म से पालन करना था। परंतु 5.2.1922 को चौरी-चौरी की घटना ने गाँधीजी को निराश किया फलत:उन्होंने 12 फरवरी को बारदोली में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में आंदोलन स्थगित करने की घोषणा कर दीं। इस समय सिहावा में जंगल-सत्याग्रह चल रहा था। केन्द्र की तरह क्षेत्रीय स्तर में भी गिरफ्तारियाँ हुई। कार्यकर्ताओं ने जेल से भी आम जनता को प्रेरणा दीं। उनकी बहादुरी और त्याग की भावना ने हजारों और लोगों को भी आंदोलन से जोड़ा और आम जनमानस को उद्वेलित किया। 11 जनवरी 1923 को पं. सुन्दरलाल शर्मा को रायपुर जेल से मुक्ति मिली। अंग्रेज सरकार उन्हें सीखचों में रखकर भी कैद नहीं कर पायी उनके विचार पत्रिका के माध्यम से जनता तक पहुँचते रहे।

1923 में पं. सुन्दरलाल शर्मा और नारायण राव मेघावाले के नेतृत्व में 100 स्वयं सेवकों का जत्था काकीनाड़ा अधिवेशन में भाग लेने के लिए रवाना हुआ। 700 मील पैदल यात्रा करके यह दल काकीनाड़ा पहुँचा। पं. सुन्दरलाल शर्मा और नारायण राव मेघावाले ने आदिवासी अंचल में गाँधी जी के आंदोलन का जमकर प्रचार किया। [18]

इस प्रकार गाँधी जी द्वारा संचालित व निर्देशित प्रत्येक कार्यक्रम का क्षेत्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार और सफलतापूर्वक संचालन करने में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने सहर्ष और सुसंगठित योगदान दिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन:-भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में सविनय अवज्ञा आंदोलन महात्मा गाँधी द्वारा चलाया गया दूसरा आंदोलन था। जिसकी पृष्ठभूमि 1929 के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण-स्वराज्य की घोषणा से तैयार हुई थी [19] जिसमें असहयोग, बहिष्कार के साथ सविनय अवज्ञा एक प्रभावी अस्त्र के रुप में प्रयोग किया गया। 30 जनवरी को महात्मा गाँधी ने अपना 11 सूत्रीय मांग पत्र इरविन को भेजा जिसमें नमक कर हटाने, भूराजस्व की दर को कम करने, विदेशी वस्त्र पर कर लगाने, पूर्ण शराब बंदी राजनीतिक बंदियों की रिहाई एवं स्वयं की रक्षा के लिये लाइसेंस सहित हथियार रखने की मांग की थी। [20] प्रत्युत्तर ना मिलने पर सविनय अवज्ञा आंदोलन की प्रथम कड़ी के तौर पर 11 मार्च को नमक-कानून तोड़ने की घोषणा की गयी। इस

प्रकार गाँधी जी और ब्रिटिश शासन के बीच एक सुसभ्य युद्ध का प्रारंभ हुआ। [21]

संपूर्ण छत्तीसगढ़ गाँधीजी के आह्वान पर आंदोलन के लिये तैयार हो गया। रायपुर जिले की धमतरी तहसील राष्ट्रीय आंदोलन की गतिविधियों में अग्रणी थी। यहाँ 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। यहाँ से पं. सुन्दरलाल शर्मा और नारायण राव मेघावाले ने लाहौर कांग्रेस में भाग लिया था। उन्होंने धमतरी लौटकर स्वतंत्रता दिवस की रुपरेखा निर्धारित की। पूरे नगर को तोरण पताकाओं से सजाया गया, प्रवेश द्वार बनाये गए। छोटेलाल श्रीवास्तव के मकान के सामने स्थित चौक में नारायण राव मेघावाले ने झण्डा फहराया तथा स्वाधीनता प्राप्ति के लिये किये जा रहे संघर्ष पर भाषण दिया। [22] महाकौशल राजनीतिक परिषद की बैठक के पश्चात धमतरी के प्रखर कार्यकर्ता नारायण राव मेघावाले ने धमतरी लौटकर 2 तोला नमक बनाकर नमक कानून की अवहेलना की तथा सभा में उपस्थित लोगों को प्राचीन तरीके से नमक बनाने की जानकारी भी दी। उनके द्वारा बनाया गया नमक करण तेजपाल ने 6 रुपयों में खरीदा। [23]

1 मई 1930 को नत्थुजी जगताप द्वारा धमतरी में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की गई जिसके प्रमुख पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। स्वयं सेवकों को यहाँ निःशुल्क आवास और भोजन दिया जाता था। यहाँ सत्याग्रहियों को प्रशिक्षण दिया जाता था। चरित्र, नैतिकता, राष्ट्रीयता, एकता तथा ईमानदारी की शिक्षा दी जाती थी। प्रशिक्षण अवधि एक सप्ताह थी। यहाँ से 3 माह में लगभग 1300 स्वयंसेवक प्रशिक्षित हुए। प्रशिक्षण देने का कार्य नारायण राव मेघावाले, नत्थुजी जगताप, पं. सुन्दरलाल शर्मा, छोटेलाल श्रीवास्तव आदि किया करते थे। प्रत्येक स्वयं सेवक एक तिरंगा, एक गाँधी-टोपी और एक केसरिया झोला लेकर शहर के भीतर राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार करते थे। विदेशी शराब की दुकानों पर धरना देने और जंगल सत्याग्रह के कार्यक्रम को घर-घर पहुँचाने का कार्य तथा सक्रिय भागीदारी इन स्वयंसेवकों ने सफलतापूर्वक निभायी। [25] इन्हें प्रशिक्षण और प्रेरणा देने का महत्पूर्ण कार्य पं. सुन्दरलाल शर्मा ने किया। उनके प्रयासों और प्रेरणा की सफलता इस आंदोलन की तीव्र होती गति में स्पष्ट तौर पर परिलक्षित हो रही थी और आंदोलन का प्रत्येक कदम हमें स्वराज्य के और करीब ले जा रहा था।

रुद्री जंगल सन्याग्रह :- 22 अगस्त 1930 को शासकीय सुरक्षित वन समूह क्रमांक 1 के क्षेत्र का चयन जंगल कानून तोड़ने के लिए किया गया ।26. इसमें नवागाँव शामिल था। रुद्री नवागाँव धमतरी से 2 किमी. दूर था। यहाँका वन सरंक्षित था। जंगल सत्याग्रह के अंतर्गत प्रतिदिन 5 सत्याग्रही, घास काटकर वन कानून का उल्लंघन करते थे। इस सत्याग्रह के डिक्टेटर नारायण राव मेघावाले और प्रथम जत्थे के नेतृत्वकर्ता नत्थूजी जगताप को चुना गया था। [27] सत्याग्रहियों का जो जत्था रुद्री पहुँचने वाला था, उसे पुलिस ने बीच में रोक लिया और धारा 144 लगाने की सूचना दी गई। नहीं मानने पर सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया गया। [28]. समाचार मिलते ही पं. सुन्दरलाल शर्मा राजिम से धमतरी के लिए रवाना हुए, लेकिन उन्हें अभनपुर में गिरफ्तार कर लिया गया। परंतु इनकी देशभक्ति में तनिक भी कमी नहीं आई।

पं. सुन्दरलाल शर्मा की कार्यप्रणाली सुसंगठित, इनके भाषण त्याग, तपस्या की भावना से ओत-प्रोत तथा देशभक्ति अनुपम थी। गाँव-गाँव में चर्खा, स्वदेशी, गाँधी-टोपी, को लोकप्रिय बनाकर अहिंसा, असहयोग, बहिष्कार और विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के कार्यक्रम, गाँधीवादी आंदोलन पूरे भारत के समान ही विलक्षण गति छत्तीसगढ़ में भी सर्वत्र सफल हुए। सत्याग्रह, धरना, बहिष्कार, जेलयात्रा और कानून उल्लंघन में देश का यह हिस्सा भी भागीदार बना। राजनीतिक गतिविधियों के दौरान जनमानस को अनुशासित रखने का कार्य पं. सुन्दरलाल शर्मा जैसे नेतृत्वकर्ताओं ने किया।

प्रखर राष्ट्रवादी भावनाएँ रखते हुए पं. सुन्दरलाल शर्मा ने यह भी अनुभव किया कि समाज-सुधार के बिना राजनीतिक आंदोलनों में, विशेषकर जनआंदोलन में वह गति नहीं आ सकती कि देश स्वाधीन हो सके। तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं कुप्रथाओं की वजह से आम जनता का एक बहुत बड़ा हिस्सा आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी नहीं निभा पा रहा था। वर्ण, जाति व्यवस्था के कठोर नियमों व प्रथाओं की जंजीरों से जकड़े समाज को मुख्यधारा से

जोड़ने के लिये पं. जी ने अपना लक्ष्य समाज सुधार को बनाया ताकि नवजागृत समाज का नवयुवक, स्वतंत्रता का नवविहान लाने में अग्रसर होवें।

वस्तुत: पं. सुन्दरलाल शर्मा का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान उनकी अद्‌भुत सामाजिकता और राष्ट्रवाद का ही शिशु है। अतीव राष्ट्रवादी होते हुए भी वे कभी राजनैतिक व्यक्ति नही बन सकते थे। अत्यंत सरल, दयालु और दानवीर थे वे, जिनमें राजनीतिक समझ से अधिक प्रबल जनसाधारण की सेवा करने की भावना थी उनका मानना था कि यदि समाज सुधरेगा, उन्नति के रास्ते पर चलेगा और सामाजिक न्याय के सिद्धांत स्वीकार करेगा तो स्वयमेव ही राष्ट्र आगे बढ़ेगा।

सामाजिक योगदान :

पं. सुन्दरलाल शर्मा जी के जीवन के दो उद्देश्य थे। देश को पराधीनता से मुक्त करवाना और छत्तीसगढ़ की सर्वांगीण उन्नति करना। किसी भी क्षेत्र की उन्नति का निर्धारण वहां के समाज को देखकर ही लगाया जा सकता है। इसी अवधारणा के साथ शर्मा जी ने छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन में सुधार लाने का निश्चय किया और तत्कालीन समाज की राष्ट्रीय आवश्यकता को युगीन संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर के मान्य नेतृत्व से भी जल्दी समझा और छत्तीसगढ़ में सामाजिक न्याय के सिद्धांत पर आधारित सामाजिक क्रांति का बीजारोपण किया। गाँव-गाँव जाकर समाज सुधार के अपने लक्ष्य को पूर्ण करने का उन्होंने प्रयत्न किया। प्रदेश में रुढ़ीवादिता, संकीर्णता और जातिवाद के विरुद्ध वे एक सामाजिक परिवर्तन चाहते थे ताकि राष्ट्रीय एकता और आंदोलन को बल दिया जा सके।

पं. सुन्दरलाल शर्मा जी चिंतन शील व्यक्ति थे। उनकी सोच स्पष्ट थी कि समाज के दलित वर्ग को भी सवर्णों की भाँति सामाजिक और धार्मिक अधिकार है, जिन्हें ईश्वर ने बनाया है। उसे प्राकृतिक अधिकारों से वंचित करने का अधिकार किसी अन्य मानव को नहीं हो सकता। जल, जमीन और वायु की तरह मंदिरों पर भी सभी का समान अधिकार है। किसी को जाति के आधार पर कुँए में रोकना परमात्मा के प्रति अपराध है। इन्हीं विचारों से प्रेरित सुन्दरलाल शर्मा जी ने निर्भयतापूर्वक अंधविश्वासों, कुरीतियों और रुढ़ियों पर प्रहार करना शुरु कर दिया। इसके लिए जरुरी था लोगों को विशेष कर युवा वर्ग को एक जगह एकत्र कर सर्वकल्याणकारी भावना के लिए प्रेरित किया जाये। इसके लिए शर्मा जी ने सभी संभव प्रयास किये।

ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना :

1904 में पं. जी ने ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना राजिम में की, यहाँ ब्रह्मचारी रहते थे, संस्कृत में अध्ययन अध्यापन होता था। पढ़ाई के साथ-साथ समाज सुधार और जनजागृति का कार्य ये युवा किया करते थे। गाँवों में खाली हण्डियाँ इस आश्रम के सहयोग हेतु टांगी गई थी जिससे ग्रामवासी दो मुट्ठी चावल डालते थें और इसी सहयोग और समाज के समर्थन से ये आश्रम चलता था।[29] इसके माध्यम से समाज में भटके युवाओं को जागृति और दिशा देने का सफल प्रयास शर्मा जी ने किया भावी पीढ़ी को भटकाव से बचाने का कार्य किया।

वाचनालय की स्थापना :

1904-05में ही सुन्दरलाल शर्मा के सद्‌प्रयासों से राजिम में एक वाचनालय की स्थापना की गई जिसमें कवियों एवं साहित्यकारों की गोष्ठियाँ हुआ करती थीं। इस वाचनालय के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार किया और अनेक लोकपयोगी कार्य किये। 15 जुलाई 1923 को वाचनालय की कार्यकारिणी बैठक में पं. सुन्दरलाल शर्मा के सभापतित्व में 100 सदस्यों ने हस्ताक्षर करके कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये एवं रायपुर सत्याग्रह में कारावास की पीड़ा भोगने वाले कन्हैया लाल तमेर की माँ को तीस रुपये प्रतिमाह की आर्थिक सहायता देने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई।[30] इस निर्णय से पता लगता है कि पं. जी ने असहाय और असुरक्षित लोगों के प्रति भी पूरा ध्यान दिया ताकि वे भी समाज में अपना जीवन-यापन बिना किसी तकलीफ के कर सकें और देश के लिए अपना जीवन देने वाले युवा अपने परिवार के आर्थिक भविष्य के लिये चिंततित ना होंगे।

1915 में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने समाज के महत्वपूर्ण अंग किसानों को ऋण के जाल में बुरी तरह फँसा देखकर उन्हें निजात दिलाकर कर्जदार और भूमिहीन किसान के बजाय खुशहाल बनाने के उद्‌देश्य से ऋण मुक्ति सहायता

फण्ड की स्थापना की। वे समाज के प्रति नई सोच और तकनीक के हिमायती थें। 1914 में उन्हें आधुनिक पद्धति से कृषि करने के लिए शासन ने सम्मानित भी किया था। [31.]

पं. सुन्दरलाल शर्मा सामाजिक न्याय एवं मानवतावाद के प्रणेता थे, उन्होंने तात्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया जिसमें जातपात, छुआछूत, ऊँचनीच का भाव प्रमुख था। इसके लिए उन्होंने कई सामाजिक संगठनों के माध्यम से कार्य किया। रायपुर में बालसमाज ग्रंथालय, राजिम में ग्रंथालय तथा धमतरी आदि अन्य क्षेत्रों में भी वाचनालय आदि के माध्यम से लोगों से विचार-विमर्श कर वे सामाजिक उपेक्षा के शिकार वर्ग को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास करते रहे। पुरानी बस्ती रायपुर में हरिजन छात्रावास, राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना तथा हिन्दी-विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में सतनामी तथा अन्य अस्पृश्य जातियों के उद्धार का कार्य गाँधीजी के भारत आगमन के पूर्व से ही शुरु कर दिया था। [32.] 1918 में सतनामियों को सामूहिक रुप से यज्ञोपवीत धारण करवाने का कार्यक्रम तो बेहद सनसनीखेज था। मद्य निषेध और मांसाहार के खिलाफ उनका आंदोलन भी अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में पूर्णत: सफल रहा। राजीवलोचन मंदिर में कहारों का प्रवेश भी लगभग इसी समय करवाया गया। इसी वर्ष मुंगेली में सतनामी समाज का विराट सम्मेलन आयोजित करवाकर समाज में व्याप्त विषमता के वातावरण को खंडित करने का प्रयास किया। जब समाज में कुछ नया घटित होने लगता है, तब बुद्धिजीवी वर्ग भी उसमें स्वप्रेरित भाग लेने लगता है। 1924 में सतनामी आश्रम की स्थापना की गईं। इस कार्य में ठाकुर प्यारेलाल सिंह और प्रखर आर्य समाजी दुर्ग के घनश्याम सिंह गुप्त ने पं. जी से प्रेरणा लेकर हरिजनों का मंदिर में प्रवेश करवाया। [33.] पं. सुन्दरलाल शर्मा ने राजिम में 1917 में दक्षिण दिशा की ओर ईट व चूनें के द्वारा रावण बनाकर पक्की प्रतिमा का निर्माण करवाया जो आज भी विद्यमान है। इसका उद्देश्य भी सभी जाति-धर्म के लोगों को उत्सव के बहाने एक जगह एकत्र करके भेदभाव मिटाना था। राजीवलोचन मंदिर की एक ट्रस्ट कमेटी थी जिसके पदाधिकारी पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। मंदिर प्रवेश के कार्य को क्रियान्वित करने के लिए 8 नवंबर 1925 के दिन अछूतोद्वार हिन्दू सभा की एक विराट बैठक का आयोजन राजिम में किया गया। इसमें छत्तीसगढ़ के प्रमुख हिन्दू गृहस्थ, धर्मगुरु, आचार्य, महंत व समाजसुधारकों ने भाग लिया। इस बैठक की अध्यक्षता नारायण राव मेघावाले ने की थी। उन दिनों भोई, चौहान, झिरिया, महरा, पनिका, भरेवा, गाड़ा, बया तथा बजनिया जाति के लोगें को अस्पृश्य माना जाता था तथा इनका मंदिर प्रवेश निषिद्ध था। इस बैठक में निर्णय लेना था कि क्या इन्हें मंदिर में प्रवेश दिया जा सकता है? इस प्रश्न को उठाने वाले पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। घण्टों विचार विमर्श हुआ। शर्मा जी ने धर्मगुरुओं से शास्त्रार्थ किया। तदोपरांत फैसला हुआ कि इन्हें मंदिर प्रवेश दिया जा सकता है। महंत लक्ष्मीनारायण दास, पं. चंद्रकांत, पं. मुक्तादत्त, पं. कमलाकांत आदि की साक्षी में श्री सुन्दरलाल शर्मा ने घोषणा की, कि वे 15 दिनों के भीतर अस्पृश्य जाति के लोगों को लेकर राजीवलोचन मंदिर में प्रवेश करेंगे। जब भोई, कहार व सनातनी जाति के लोगो की भीड़ को लेकर सुन्दरलाल शर्मा राजीवलोचन मंदिर के प्रवेश द्वार पर पहुँचे तो उन्हें फिरंगियों की सशस्त्र, पुलिस और मजिस्ट्रेट का सामना करना पड़ा। वे इससे विचलित नहीं हुए उन्होंने पड़ोस के रामचन्द्र-मंदिर में (जो अब पुरातत्व विभाग के अधीन है) अस्पृश्य जाति के लोगों के साथ प्रवेश किया। उनकी विजय हुई क्योंकि उनका उद्देश्य केवल मंदिर तक इन अछूत कही जाने वाली जाति के लोगों को पहुँचना था जो पूरा हुआ। गरीब हरिजनों ने भगवान राम के दर्शन किये और कुछ स्वर्णाभूषण अर्पित किये। [34.] पं. सुन्दरलाल शर्मा के सिद्धांतों की जीत हुई। वे उसी जोश और उत्साह के साथ अपने समाज सुधार के कार्यक्रम जारी रखें। मंदिर कमेटी के उपमंत्री होते हुए भी उन्हें कमेटी के मंत्री एवं सनातन हिन्दू साथियों से ज्यादा महत्वपूर्ण सामाजिक उत्थान का कार्य लगा ऐसा कोई बिरला ही समाज सेवी और समाज सुधारक होना जिसने अपनी, मान, प्रतिष्ठा, धर्म और यहाँ तक की एक उज्जवल भविष्य भी समाज के लिये न्यौछावर कर दिया हो।

समाज सुधार की इसी कड़ी में 1933 में उन्होंने अनाथालय की स्थापना की। उनके मार्गदर्शन में समाजसुधार की जो चेतना जागृत हुई, वह लगातार विकसित होती

गई।[36] उनका प्रयास हर जाति में सुधार आंदोलन प्रारंभ करने का था। कुर्मी-समाज, तेली समाज, ब्राह्मण समाज को जोड़कर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का उन्हेंाने हरसंभव प्रयास किया। छत्तीसगढ़ में स्त्रीयाँ ब्लाउज नहीं पहनती थीं। वे अपनी साड़ी से ही पूरे शरीर को ढांके रखती थी। पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में ब्लाउज पहनने की प्रथा शुरु करवाई और सबसे पहले अपनी पत्नी को पोलका पहनाया। मृत्यु भोज-बंद करवाया। कुर्मी समाज की तरफ से ब्राह्मण आश्रम खोलकर सभी जातियों में परस्पर सहयोग की भावना को बढ़ाया।[37]

पं. सुन्दरलाल शर्मा एक महान समाज सुधारक थे उन्होंने जीवन पर्यन्त दलित, शोषित और पिछड़ी जातियों को आगे बढ़ाने और समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया। यही नहीं वे हिन्दू मुस्लिम एकता के भी प्रबल समर्थक थे। उन्हीं के प्रयासों से 1924 में धमतरी में एक भीषण साम्प्रदायिकता दंगा टल गया। प्रसंग भोजली विसर्जन का था। हिन्दू-मस्जिद के सामने से बाजे-गाजे के साथ जाना चाहते थे और मुस्लिम उन्हें रोकने को तत्पर हो गये। घटनाक्रम ने गंभीर मोड़ ले लिया। हजारों हिन्दू मंदिर में और मुसलमान मस्जिद में एकत्र होने लगे। दूसरे दिन समाचार पाकर पं. सुन्दरलाल शर्मा आये और दोनों पक्षों को समझाकर, समझौता करवाया कि मस्जिद से 5 कदम दूरी पर बाजा बंद करके उदारता दिखानी चाहिए।[38]. दोनों पक्ष मान गये और भीषण संघर्ष टल गया केवल शर्मा जी के प्रयास व सूझबूझ से। अन्यथा संघर्ष कोई नहीं रोक सकता था। इस घटना से पता चलता है कि केवल हिन्दू ही नहीं मुस्लिम भाई भी सुन्दरलाल शर्मा जी का सम्मान करते थे। उन्होंने उनकी बात मानकर उनका अभिनंदन किया था।

समाज सुधार व ऊँच-नीच का भेदभाव मिटाने के लिये पं. सुन्दरलाल शर्मा ने जीवन पर्यंत कार्य किया। छत्तीसगढ़ में अछूतों के उद्धार के कार्य का बीड़ा सवर्ण हिन्दू होने के बावजूद समस्त विरोध झेलकर भी उठाया था। उन्होंने 5 गाँवों में घूम-घूम कर हरिजनों की हीनभावना दूर करने के लिए उन्हें जनेऊ पहनाने का कार्य शुरु किया और अकेले मुंगेली तहसील में आम सभाएँ लेकर लाखों जनेऊ का वितरण किया। वे सतनामियों के घर में बैठकर उनका दिया हुआ दूध निं:संकोच पिया करते थे। इन अस्पृश्य जातियों के घरों में सत्य-नारायण कथा एवं भागवत बाँचने के लिये उन्होंने अपने सहयोगियों के बीच से प्रगतिशील पैराणिक भी तैयार कर लिये थे।[39]

पं. सुन्दरलाल शर्मा के समाज सुधार के इन क्रांतिकारी कदमों से पूरे छत्तीसगढ़ के रुढ़ीवादी सनातन धर्मी हिन्दुओं में खलबली मच गई। उनकें स्वजातीय लोगों ने उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया, किंतु पं. जी ने इस उपेक्षा और तिरस्कार की रंच मात्र भी चिंता नहीं की और अपने उद्देश्य से भटके नहीं। अन्याय, गलत परंपरा और संकुचित मनोवृत्ति का उन्होंने हमेशा निर्भीकता के साथ विरोध किया। उनका उद्देश्य ब्राह्मण धर्म का विरोध करना कदापि नहीं था अपितु ब्राह्मणत्व का बोध कराना था, ताकि सामाजिक असमानता को दूर किया जा सके। शर्मा जी के प्रयासों से छत्तीसगढ़ में सामाजिक चेतना का विकास हुआ जिसने आने वाली पीढ़ियों, जनमानस व जननेतृत्वकर्ताओं को प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया। राजनीतिक छल-कपट और स्वार्थ से कोसों दूर रहने वाले पं. सुन्दरलाल शर्मा जी निर्भीक वक्ता, गंभीर चिंतक, सिद्धांतवादी, कट्टर समाज सुधारक एवं भविष्यदृष्टा थे। समस्त छत्तीसगढ़ को इनसे साहित्य, कला, राष्ट्रीयता और हरिजन उद्धार की प्रेरणा मिली। उन्होंने अपना तन-मन धन देश सेवा के लिए अर्पित कर दिया और यह सब करते हुए वे विपरीत परिस्थितियों से भी जूझते रहे। उनमें प्रखर ऊर्जा थी परंतु धीरे-धीरे उनका शरीर साथ छोड़ने लगा। अंग्रेजी प्रशासन के विरुद्ध उनके कार्यों से शासन उनके विरुद्ध हो गया। उन्हें प्रताड़ित करने के लिए उनकी मालगुजारी के कार्यों में हस्तक्षेप होने लगा। अछूतोद्धार और दलितों के साथ के कारण स्वजनों ने उनका साथ छोड़ दिया। लगातार परिश्रम का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा। अपनी धन संपदा को बचानें का भी उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया फलस्वरुप उन्हें धन-संपदा, स्वास्थ्य सबसे हाथ धोना पड़ा।[40] 28 दिसंबर 1940 को इनका देहावसान हो गया जो छत्तीसगढ़ के लिए अपूर्णनीय क्षति थी। छत्तीसगढ़ में नवीन सामाजिक चेतना और जनजागरण का कार्य करने का प्रथम श्रेय पं. सुन्दरलाल शर्मा को ही है। सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियाँ एक दूसरे की पूरक व सहयोगी होती हैं। पं. जी के त्याग व

आदर्श के बाद क्षेत्र में सामाजिक जागृति को तैयार राह मिली जिस पर उन्हें केवल चलना था। पृष्ठभूमि में पं. सुन्दरलाल शर्मा जी का अभूतपूर्व योगदान था। एक निर्भीक व्यक्ति, सिद्धांतवादी, गंभीर चिंतक, कट्टर समाज सुधारक और राष्ट्रवादी पं. सुन्दरलाल शर्मा ने अपने मन वचन और कर्म से इस क्षेत्र की अपूर्व सेवा की है। उनकी काव्य मैं वाणी में भी वहीं निर्भिकता गुंजती थी। निम्नलिखित पंक्तियाँ इसका सजीव उदाहरण है, जो उनकी स्वरचित हैं-

सबको परतीत जरुर ही है,
हम झूठ बनाय, कहेंगे नहीं।
धड़ से सिर कट जाय न क्यों,
सच को कहने से डरेंगे नहीं।
कवि सुन्दरलाल जू हम ठीक कहें,
हमारे व्रत जीवन के केर यहीं।
खुस होउ कोउ रिस होउ कोउ,
चापलुसी की चाल चलेंगे नहीं,

पं. सुन्दरलाल शर्मा की वाणी और कर्म में एकरुपता थी। डरना उन्हें आता ही नहीं था और स्वार्थ से वे कोसो दूर थे। उनके जैसे समाज सुधारक और राष्ट्रवादी चिंतक और कर्मठ योद्धा कोई बिरला ही होगा। अपने तमाम विशेषताओं, गुणों एवं उदार कार्यों के लिए छत्तीसगढ़ उनका सदैव ऋणि रहेगा।

संदर्भ सूची -

1. छत्तीसगढ़ डिवीजनल रिकार्डस्, ग्रंथ 11, पृ.8, दिनांक 29-1-1857,
2. वही, पृ. 57, दिनांक 9-12-1857
3. वही, ग्रंथ 21, पृ. 687, दिनांक 25-3-1858
4. वही
5. शुक्ल, प्रयागदत्त, क्रांति के चरण, जबलपुर,1960, पृ. 44-45.
6. वही, पृ. 57
7. वही, पृ. 84
8. फाइल क्र.आर.II 19/2 कांग्रेस सेशन एट नागपुर
9. ठाकुर हरि, पं. सुन्दरलाल शर्मा, अप्रकाशित लेख पृ. 5
10. शुक्ल प्रयागदत्त 1947 पृ. 137
11. म.प्र.संदेश 1947 पृ. 85
12. म.प्र. और गाँधीजी
13. होम पोलिटिकल फाइल नं. आर II 5/3 ब्रीक हिस्ट्री ऑफ राष्ट्रीय विद्यालय, रायपुर, पृ.7
14. ठाकुर हरि, पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा, अप्रकाशित लेख पृ. 2
15. रायपुर नगर निगम रिपोर्ट 1971, 72, पृ. 32, 33
16. होम पोलिटिकल, फाइल क्र. आर II 5/3 पृ. 3
17. ठाकुर हरि, फ्रीडम मुवमेंट इन धमतरी तहसील, पृ. 3
18. पाण्डेय त्रिभुवन, छत्तीसगढ़ के गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा और धमतरी, पृ. 33
19. इण्डियन क्वाटरली रजिस्टर, खण्ड 2, 1929, पृ. 299
20. इंडियन ऐनवल रजिस्टर, खण्ड 1, 1930, पृ. 24
21. एस.गोपाल, द वायसरायल्टी ऑफ लार्ड इरविन, 1926-31 पृ. 61
22. तिवारी आभा, छत्तीसगढ़ में कृषक आंदोलन एक ऐतिहासिक अनुशीलन 1905-1947, अप्रकाशित शोध-प्रबंध, पृ. 97
23. ठाकुर हरि, धमतरी में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास हस्तलिखित पाण्डुलिपि
24. संदर्भ छत्तीसगढ़, रायपुर, 1993, पृ. 23
25. देवांगन शोभाराम, धमतरी नगर व तहसील का स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन, अप्रकाशित पांडुलिपि, पृ. 52-53
26. पोलिटिकल एण्ड मिलट्री डिपार्टमेंट, सी.पी.सी.डी.एम. फाइल न. 187, 1930, पृ. 7
27. म.प्र. संदेश,15 अगस्त 1987, स्वाधीनता आंदोलन विशेषांक, पृ. 136
28. फाइल न. ५/३ फारेस्ट सत्याग्रह एट रुद्री नवागाँव, पृ. 252

29. साक्षात्कार, श्री सूरज प्रसाद सक्सेना, स्वतंत्रता सेनानी, रायपुर, दिनांक 21-12-08

30. वाचनालय की कार्यकारिणी की पंजी, राजिम, 15-7-1923

31. आशीष सिंह, छत्तीसगढ़ की विभूतियाँ पं. सुन्दरलाल शर्मा, छत्तीसगढ़ दर्शन, 2003 पृ. 74

32. नायक, ठ.भ., छत्तीसगढ़ में गाँधी जी, पृ. 14

33. आशीष सिंह, पं. सुन्दरलाल शर्मा के अवदानों का मूल्यांकन, छत्तीसगढ़ के गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा, 2004, पृ. 53

34. राजीव लोचन कमेटी का पत्र-व्यवहार 7-11-1925

35. राजीव लोचन कमेटी को पत्रव्यवहार पं. रविशंकर 7-11-1925

36. भुवन प्रसाद मिश्र-छत्तीसगढ़ गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा, पृ. 6

37. पं. सुन्दरलाल शर्मा की जीवनी गाथा, छत्तीसगढ़ सेवक, वर्ष 38, अंक 33, 20 दिसंबर 2001

38. साक्षात्कार, केयूर भूषण, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, रायपुर, 30-09-09

39. भुवन प्रसाद मिश्र, वही, पृ. 19

40. आचार्य सरयूकांत झा, पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा एवं महात्मा गाँधी, छत्तीसगढ़ के गाँधी पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा, 2004, पृ. 19

■ विभागाध्यक्ष, इतिहास अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय रायपुर ।

पं. सुन्दरलाल शर्मा

छत्तीसगढ़ी गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा

• ललित मिश्रा

गाँधी जी को सन् 1920 में छत्तीसगढ़ में पहली बार लाने का श्रेय स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा को हैं। स्वर्गीय शर्मा जी ने इस कार्य के लिए लाहौर, पटना तथा काशी की यात्राएं कीं तथा बापू को अंततोगत्वा इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे इस भूमि की गरीबी और शोषण का दर्शन करें तथा जन-मानस को असहयोग आंदोलन के लिए प्रेरित करें। गाँधी जी 20 दिसंबर सन् 1920 में रायपुर पधारे और उन्होंने आनंद समाज वाचनालय के बाजू में महती सभा को संबोधित किया। इसके बाद स्वर्गीय शर्मा जी उन्हें लेकर धमतरी गए, जो उन दिनों छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम को पुनीत केंद्र था। वहाँ भी महात्मा गाँधी ने एक विराट सभा को संबोधित किया। दुबारा सन् 1933 में छत्तीसगढ़ में गाँधी जी का आगमन हुआ तब वे पं. सुन्दरलाल शर्मा की जन्म-भूमि राजिम भी गए। राष्ट्रपिता गाँधी ने अपने सार्वजनिक भाषण में पं. सुन्दरलाल शर्मा को हरिजन उद्धार का कार्य के संदर्भ में अपना गुरु निरूपित किया था क्योंकि छत्तीसगढ़ के सतनामी तथा अन्य अस्पृश्य जाति के उद्धार का कार्य स्वर्गीय शर्मा जी ने महात्मा गाँधी के बहुत पूर्व प्रारंभ कर दिया था।

गाँधी जी तथा स्वर्गीय सुन्दरलाल शर्मा दोनों ही सत्य के पुजारी थे। एक दिव्य आत्मा का प्रादुर्भाव साबरमती में हुआ था तो दूसरे का छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक नगर राजिम में। एक भारत केशरी था तो दूसरा माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में छत्तीसगढ़ी केशर दोनों ने दलित पीड़ित और शोषित जातियों को हृदय से लगाया। दोनों अमर हैं।

प्रथम महायुद्ध सन् 1914-1918 के समय गाँधी जी विदेशी साम्राज्य की रक्षा के लिये सेना में भरती होने की अपील करते हुए घूम रहे थे। इसकी बड़ी आलोचना हुई। स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा सन् 1902 के लगभग 'विक्टोरिया-वियोग' नामक काव्य की रचना की थी जिसमें महारानी विक्टोरिया के शासन की प्रशंसा की गई थी, किन्तु आगे चलकर दोनों महापुरुषों ने अंग्रेजों की दासता के विरुद्ध संघर्ष किया।

सन् 1916-17 में जब महात्मा गाँधी बिहार प्रांत के चम्पारन के किसानों के सत्याग्रह का अभूतपूर्व नेतृव कर रहे थे, तब स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा सिहावा के दुर्गम वन एवं कंदराओं में पहुँचकर वहाँ के आदिवासियों को संगठित कर जंगल विभाग तथा पुलिस के शोषण एवं दमन-चक्र के विरुद्ध कर रहे थे।

सन् 1924 में बेलग्राम कांग्रेस के पश्चात् महात्मा गाँधी ने अछूतोद्धार, खादी प्रचार तथा हिन्दू, मुस्लिम एकता के कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया। मार्च 1925 में गाँधी जी ने त्रावणकोर के 'बाइसकोम' ग्राम में प्रसिद्ध महादेव मंदिर में हरिजनों के प्रवेश के लिए नम्बूद्रीपाद ब्राह्मणों के शास्त्रार्थ किया एवं हरिजनों के मंदिर प्रवेश का नेतृत्व किया। इधर आठ नवंबर सन् 1925 के दिन स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा ने राजिम में 'अछूतोद्धार हिंदू सभा' के विराट बैठक का आयोजन किया जिसमें छत्तीसगढ़ के देशभक्तों ने, समाज सुधारकों एवं धर्मगुरुओं ने भाग लिया। एक ऐतिहासिक बैठक में यह निर्णय लिया गया कि अस्पृश्य जातियों को लेकर राजिम लोचन के प्रसिद्ध देवालय में प्रवेश करना शास्त्रोक्त है। 23 नवंबर सन् 1925 को स्वर्गीय पं. सुंदरलाल शर्मा ने अस्पृश्य लोगों के एक विशाल जुलूस का नेतृत्व करते हुए बंदूकधारी पुलिस तथा कट्टर सनातनी हिंदुओं के तनावपूर्ण मौजूदगी के बावजूद भी राजिम के रामचंद्र मंदिर में प्रवेश किया। इस घटना का प्रभाव समूचे छत्तीसगढ़ में पड़ा।

हिन्दू, मुस्लिम एकता के लिए गाँधी ने जी अपना उत्सर्ग ही कर दिया। स्वर्गीय शर्मा जी भी हिन्दू, मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। सन् 1924 में धमतरी में एक भीषण साम्प्रदायिक दंगा होते-होते रूक गया प्रसंग भोजली विसर्जन का था। हिन्दू लोग भोजली के जुलूस को मस्जिद के सामने से बाजा गाजा बजाते हुए ले जाना चाहते थे। मुसलमान भाई उन्हें रोकने पर तुल गए। घटना चक्र ने गंभीर मोड़ ले लिया। धमतरी आस-पास के गाँवों के हजारों हिंदू धमतरी आ धमके। इसी प्रकार आसपास के गाँवों के मुसलमान धमतरी आकर मस्जिद में जमा हो गए। रायपुर और धमतरी

के बड़े-बड़े नेता देशभक्त नारायणराव मेघावले के घर इकट्ठे बैठकर रास्ता निकालने की कोशिश कर रहे थे, किन्तु असफल रहे। दूसरे दिन समाचार पाकर स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा धमतरी आए और देशभक्त नत्थू जी जगताप के निवास में हिन्दुओं की बैठक बुलवाए। उन्होंने हिन्दुओं को समझाया और कहा कि मुसलमान हमारे छोटे भाई है इसलिए हमें उनकी बड़ी मस्जिद के सामने पांच कदम और छोटी मस्जिद के सामने दो कदम दूरी पर बाजा बजाना बंद कर उदारता दिखानी चाहिये। हिन्दु और मुसलमान दोनों ने शर्मा जी के सलाह को मान लिया। साम्प्रदायिक दंगा के फलस्वरूप जो रक्तपात हुआ होता वह इस प्रकार रूक गया। दोनों संप्रदाय के लगभग तीस-चालीस हजार लोगों ने स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा की जय-जयकार की एवं उनका अभिनंदन किया सब अभूतपूर्व था।

सन् 1920 में स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा ने धमतरी के पास कंडेल नहर सत्याग्रह का नेतृत्व किया तथा इस संघर्ष में उनके अन्यतम सहयोगी श्री नत्थूजी जगताप, श्री नारायण मेघावले, बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव इत्यादि भी साथ थे। इस सत्याग्रह में अंग्रेजी हुकूमत से अपनी जिद्द छोड़कर किसानों की मांग को पूरा किया। यह पूरे देशभर में अपने ढंग का एक अपूर्व सत्याग्रह था तथा शासन को स्वर्गीय शर्मा जी के जुझारू नेतृत्व के सामने झुकना पड़ा।

गाँधी जी तथा स्वर्गीय पं.. सुन्दरलाल शर्मा दोनों अत्यजों के हमसफर थे। इस सिद्धांत के प्रतिपालन के लिए वे अपने छोटे-छोटे आचरण तक का ख्याल रखते थे। दोनों रेल में यात्रा करते समय तृतीय श्रेणी में सफल करते थे। राजिम में सन् 1904 में स्वर्गीय शर्मा जी ने एक वाचनालय स्थापित किया था जिसका नाम स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा वाचनालय है। इस वाचनालय के सन् 1928 से 1937 तक के चंदा रजिस्ट्रर के अवलोकन से पता चलता है कि स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा का नाम प्रथम या द्वितीय श्रेणी के सदस्यों के साथ कभी नहीं लिखा गया है। उनका नाम सदा तृतीय श्रेणी के सदस्यों के अगुवा के रूप में अंकित किया गया है। जो वाचनालय का स्वयं संस्थापक हो, निर्माता हो, सर्वेसर्वा हो उसी का नाम तृतीय श्रेणी के सदस्यों में लिखा जावें यह निःसंदेह आश्चर्यजनक है स्वर्गीय पं.. सुन्दरलाल शर्मा ने सदा अपने को आम आदमियों के साथ रखा ताकि वे उनके सख और दुःख के भागीदार बन सके इसी प्रकार वाचनालय के सन् 1930 के लिए किए गए ग्रुप फोटो में स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा सबसे पीछे खड़े हुए हैं तथा प्रथम पंक्ति में उनके कनिष्ठ कार्यकर्ता कुर्सी में बैठे हुए हैं। एक अन्य चित्र में जो सन् 1935 में ब्रम्हचर्य आश्रम राजिम में सामूहिक व्रतबंद के अवसर पर लिया गया है । उन्हें जमीन में पद्मासन लगाकर बैठे हुए देखा जा सकता है जबकि छोटे-छोटे बटुक लोक कुर्सी में बैठे हुए हैं। सत्ता, पद और कुर्सी से दूर भागना उनका स्वभाव सा बन गया था तथा छोटे-छोटे आयोजन तक में इससे दूर भागने की प्रवृत्ति जो इस वीतरागी महापुरुष में थी। आज जब सत्ता पद, यश, कुर्सी के लिए देश भर में होड़ सी लगी हुई हैं तब स्वर्गीय शर्मा जी जैसे त्यागी एवं कर्मवीर महापुरुषों का आचरण विस्मयकारी लगता है।

सन् 1923 में एक वर्ष के कारावास की सजा भुगतकर जब स्वर्गीय शर्मा जी जेल से बाहर आए तब रायपुर, धमतरी, राजिम आदि स्थानों में उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया। उसी अवसर पर उनके जेल का आदमकद चित्र छपवाकर वितरित किया गया था। इस चित्र के नीचे स्वर्गीय पं. सुन्दरलाल शर्मा का नारा भी छपा हुआ था- 'सत्य के लिए मर डरो, चाहे जियो या मरो।' इसे संयोग कहिए और कुछ किन्तु इस नारा का अंतिम पद ही सन् 1942 में गाँधी जी के नाम पूरे देश का नारा बन गया -'डू आर डाई'। स्वर्गीय शर्मा जी एक कवि साहित्यकार थे। उनका सिद्धांत उनकी काव्य मय वाणी में भी मुखरित होता था। एक उदाहरण नीचे उद्धत किया जाता है :-

'सबको परतीत जरूर ही है, एक झूठ बनाय कहेंगे नहीं
धड़ से सिर हूं कटि जाय न क्यों, सच को कहनो से डरेंगे नहीं।
कवि सुन्दरजू हम ठीक कहें, हमारे व्रत जीवन केर यही,
खुश होउ कोउ, रिश होउ कोउ, चापलूसी की चाल चलेंगे नहीं।'

ऐसे ही सत्यवती और पराक्रमी जन नेता छत्तीसगढ़ी गाँधी की आज छत्तीसगढ़ को आवश्यकता है।

■ अध्यक्ष, पं. सुन्दरलाल शर्मा
स्मारक एवं वाचनालय समिति,
रायपुर (छ.ग,)

साहित्य के पुरोधा पं. सुन्दरलाल शर्मा

• डॉ. रश्मि चौबे

अर्वाचीन युग में उन्नसवीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक जिन मनीषियों ने जन चेतना को विकसित किया, उनमें पं. सुन्दरलाल शर्मा का योगदान महत्वपूर्ण है। राजिम में पं. सुन्दरलाल शर्मा के सद्‌प्रयत्नों से 20वीं शताब्दी की नयी सुबह में उनकी साहित्यिक कृतियाँ अज्ञानता के अंधकार को दूर करते हुए इस अंचल में ज्ञान रश्मि के रूप में प्रस्फुटित हुई, जिसमें न केवल बौद्धिक चेतना को प्रस्फुटित किया, अपितु समसामयिक राजनीतिक चिंतन को एक नयी दिशा दी वस्तुतः यह छत्तीसगढ़ के इतिहास में बौद्धिक जागृति का शुभारंभ माना जा सकता है।

पं. सुन्दरलाल शर्मा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, कुशल राजनीतिज्ञ, सजग समाज सुधारक एवं उत्तर भारतेंदुकालीन पृष्ठभूमि को स्पर्श करते हुए साहित्य सृजन करने वाले साहित्यकार इस राष्ट्र के लिए जाज्वलमान नक्षत्र के समान सुशोभित है। छत्तीसगढ़ की माटी का वंदन करने वाले भारत माता के लाडले सपूत ने अपने दो हाथों से करोड़ों हाथों का नेतृत्व किया। वे वास्तव में देवदूत थे, जिन्होंने देश की जनता को पितृ-तुल्य स्नेह दिया। हर एक विद्यार्थी के पठन-पाठन में जिन्होंने अपनी सम्पत्ति तक की परवाह नहीं की।[1]

शर्मा जी के व्यक्तित्व को राजिम का अनुकूल वातावरण मिला। वे लिखते हैं, कि राजिम में कहीं संगीत कहीं सितारवादन होते ही रहता था। शंभु साब की साधु भक्ति पं. मुरलीप्रसाद का विद्वतापूर्वक वेदांत प्रवचन, कामता भगत की निश्चल प्रेम-भरी भक्ति बड़ी प्रेरणास्पद होती थी।[2]

किशोरावस्था में पहुँचते-पहुँचते उन्होंने कविता लिखना आरंभ कर दिया। इसी बीच विश्वनाथ प्रसाद दुबे उपनाम 'भूषण कवि' भी अध्यापक होकर राजिम आये एवं इनके सहयोग से राजिम में कवि समाज की स्थापना हुई तथा शर्मा जी उक्त समाज के महामंत्री बने। कवि समाज राजिम के द्वारा उन्होंने साहित्य की सेवा आरंभ कर दी।

शर्मा जी ने अधोलिखित काव्य, नाटक, कथा एवं उपन्यास की रचना की :

1. छत्तीसगढ़ी दानलीला (काव्य)
2. राजिम प्रेम पियुष (काव्य)
3. सीता परिणय (नाटक)
4. पार्वती परिणय (नाटक)
5. काव्यामृत वार्षिणी (काव्य)
6. प्रहलाद चरित (नाटक)
7. ध्रुव आख्यान (नाटक)
8. करुणा पचीसी (काव्य)
9. श्री कृष्ण जन्म आख्यान (नाटक)
10. सच्चा सरदार (उपन्यास)
11. विक्रम शशिकला (नाटक)
12. कंसवध (खंडकाव्य)
13. विक्टोरिया वियोग (काव्य)
14. श्री राजिम क्षेत्र महातमय
15. स्फूट पद्य संग्रह
16. स्वीकृति भजन संग्रह
17. रघुराज गुण कीर्तन
18. प्रलाप पदावली
19. ब्राह्मण गीतावली
20. श्री भूषण कवि विश्वनाथ प्रसाद पाठक का काव्यमय जीवन चरित्र।[3]

इसके अतिरिक्त शर्मा जी ने "छत्तीसगढ़ी रामायण" की रचना भी की, जो अप्रकाशित है। इन्होंने "दुलरुवा" नामक छत्तीसगढ़ी पत्रिका का संचालन भी किया था। जेल में इन्होने "श्री कृष्ण जन्म स्थान" नामक द्वैमासिक पत्रिका का भी संपादन किया।

इस प्रकार पं. सुन्दरलाल शर्मा की कृतियों की सूची से स्पष्ट है कि उन्होने चार नाटक, दो उपन्यास, एक जीवनी छत्तीसगढ़ी में तीन प्रबंध काव्य, दो संगीत आख्यान लिखे। इन पन्द्रह वर्षों में उन्होने 22 ग्रंथों का सृजन कर अपनी

अद्भुत साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। उनकी काव्य प्रतिभा की झलक इस प्रकार है -

पं. सुन्दरलाल शर्मा के जीवनी लेखन में अधिकतर ऐतिहासिक पुरुषों का चरित्र देखने को मिलता है। विश्वनाथ प्रसाद पाठक की काव्यमय जीवनी, रींवा महाराज रघुराज सिंह की काव्यमय जीवनी'' प्रकाशित रुप से उपलब्ध है।

विश्वनाथ पाठक की काव्यमय जीवनी (1905 में प्रकाशित)

पं.सुन्दरलाल शर्मा ने जीवनी लेखन के क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई। विश्वनाथ पाठक विश्वनाथ प्रसाद दुबे (उपनाम भूषण कवि) की काव्यमय शैली में जीवन चरित्र को लिखा है। जिसमें काव्यमयता के संपूर्ण गुण विद्यमान हैं। [४]

पं. विश्वनाथ प्रसाद पाठक के उपरोक्त जीवनी लेखन में साहित्यकार की अभिरुचि ऐसे कला के पुजारी जो साहित्य को निरंतर उच्च पद पर ले जाने के लिए अग्रसर रहा करते थे, उनकी जीवनी उनका साहित्य (रचना) इसका संकलन करना एवं उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने की अभिरुचि रखना दिखाई देता है। वैसे भी उन्होंने ऐसे कई साहित्यकारों की रचनाओं की सूची एवं फोटो एकत्र कर रखी थी, जो समय आने पर लोगों के सामने उनकी योग्यता को रख सके एवं जनमानस का ध्यान साहित्य के श्रीवर्धन की ओर आकृष्ट कर सके।[५]

रींवा महाराज रघुराज सिंह गुण कीर्तन

रघुराज गुण कीर्तन में शर्मा जी ने कविता व सवैया छंद के माध्यम से श्री रघुराज के उत्तम गुणों और उनकी उपलब्धियों को गीत शैली में प्रस्तुत करके लोकप्रिय बनाया है इसका रचनाकाल सं.1964 है। [६]

उपरोक्त जीवनी लेखन प्रशंसा के पद्य हैं। इसमें आद्योपांत यशोगायन किया गया है एवं बान्ध देश का सम्बोधन किया गया है। इसका प्रारंभ कवित्त से होता है - जिसे पढ़कर रीतिकालीन कवि 'पद्माकर' एवं 'भूषण' की स्मृति हो जाती है।

कवितांश सुंदर सुकवि कवितान पै कलान पै
गियान पै औ दान पै जहान पै पसरगे।
टरगे यहां ते पे हुँ, करगे कहां ते नाम
कीरति करोरन धरा के बीच धरगे॥ [७]

छत्तीसगढ़ी रामायण

अप्रकाशित छत्तीसगढ़ी रामायण के प्रणयन के कारण डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा ने - पं. सुन्दरलाल शर्मा को छत्तीसगढ़ का महाकवि माना है। ''छत्तीसगढ़ी रामायण'' में उन्होंने रामकथा को छत्तीसगढ़ी में लिखकर जन-जन तक पहुँचाया है। कथा के माध्यम से समाज में नैतिकता का प्रसार करना उनका मुख्य उद्देश्य था, जिससे सामाजिक राजनैतिक, धार्मिक एवं व्यक्तिगत हर एक मनुष्य की नैतिक धरातल प्रबल हो, यही वे चाहते थे। पं. सुन्दरलाल शर्मा ने सन् 1907 में छत्तीसगढ़ी रामायण एवं कंसवध की रचना की थी, जो अप्रकाशित है। [८]

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ी रामायण में छत्तीसगढ़ की विशिष्ट ग्रामीण संस्कृति और सभ्यता को समेटे हुए है, तथा काव्यात्मक औदात्य के गुण इसमें भरे पड़े हैं। दुर्भाग्य से अप्रकाशित रहने के कारण यह ग्रंथ विशेष प्रसिद्ध नहीं हो पाया है। [९]

छत्तासगढ़ी रामायण में पं.सुन्दरलाल शर्मा की गाँधीवादी विचारधारा दृष्टव्य है। राजा दशरथ के माध्यम से अपनी समाज सेवा की प्रवृत्ति अपनी छत्तीसगढ़ी बोली की प्रियता को प्रकट किया है। साथ ही छत्तीसगढ़ी व्याकरण के लिए एक मार्गदर्शिका है।

छत्तीसगढ़ी रामायण की कथा वैसी ही है जैसे वाल्मिकी रामायण एवं तुलसीकृत रामचरित मानस में है। इसमें अंतर इतना ही है कि यह ग्रामीण परिवेश में है। इसमें उन्होंने अपनी छत्तीसगढ़ी के प्रति प्रेम और छत्तीसगढ़ी संस्कृति का बोध कराया है। छत्तीसगढ़ी रामायण अप्रकाशित है। इसमें छत्तीसगढ़ी भाषा का जो प्रयोग हुआ है, वह अत्यंत सरस और सुगठित है। रामायण का प्रारंभ मंगलाचरण से होता है -

दोहा-

जनम देवैया जगत के, जगपति लाकर जोर,

बेर बेर विनती करौं, होव सहायक मोर

रामचंद्र भगवान के, कहिहौं कथा बनाय,

भगवत के चरचा समुझि, सुनिहौ चित्त लगाय ॥[१०]

कृष्ण जन्म आख्यान

कृष्ण जन्म आख्यान पं.सुन्दरलाल शर्मा की छत्तीसगढ़ी काव्य कृति है, इसमें कृष्ण जन्म एवं उनकी बाल लीलाओं का वर्णन है, जो वर्णन हम उनकी दानलीला में देखते हैं, वह किशोरावस्था का दृष्टांत प्रस्तुत करता है, लेकिन कई पत्रिकाओं में इसका नामोल्लेख प्राप्त होता है। जिसमें पं. शर्मा जी की रचनाओं का उल्लेख प्राप्त होता है, इसी में 'श्री कृष्ण जन्म आख्यान' भी उद्‌धृत किया गया है।[११]

इसके माध्यम से उनकी छत्तीसगढ़ी बोली का प्रचार-प्रसार करना एवं यहाँ के लोगों में साहित्य के प्रति रूझान पैदा करना साथ ही छत्तीसगढ़ी व्याकरण को पुष्ट करने के लिए छत्तीसगढ़ी का पथानुगमन करवा रहा है।

श्री ध्रुव चरित्र आख्यान

पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा रचित श्री ध्रुव चरित्र आख्यान कीर्तन शैली पर आधारित काव्य संग्रह है। यह कीर्तनकारों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसका रचनाकाल 1965 विक्रम संवत् (तद्नुसार 1908 ई. सन्) माना गया है। उपर्युक्त काव्य संग्रह के संबंध में प्रकाशक श्री नीलमणि शर्मा ने कथन किया है - 'नव वर्ष पूर्व यह क्षुद्र आख्यान राजिम के भूतपूर्व सब पोस्टमास्टर रामचंद्र राव सिद्धांती के आग्रह से, जो प्रायः कीर्तन किया करते थे, लिखा गया था और स्थानीय सज्जनों ने इसे पसंद किया था, अतः उक्त महाशय को अनेक धन्यवाद करते हुए इसे मैं प्रकाशित करता हूँ।'[१२]

श्री ध्रुव चरित्र आख्यान का आरंभ ईश वंदना से होता है। शिखरिणी छंद के माध्यम से संसार के निष्कर्ष रूप की कथा को गाकर सुनाया है, जिससे हृदय हर्षित होता है।

बालक ध्रुव ने अपनी विमाता (सुरुचि) से अपमानित होने पर अपनी माता के सामने अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं। बालक ध्रुव कह रहा है-

"मैया । मोहि माता ने मारी ।

मोको कहि गोदवे उपजा, तेरे जो गोद नहिं मारी ॥ मैया ॥

यह मुँह नहीं गोद पितु लायक, चाहत पकरन सरग उनारी ॥ मैया ॥

मेरे गोद कहू जनमत यदि जो विधि लिखत लिलारी ॥ मैया ॥

तौ पितु गोद मिलत बेटा । तोहि ऐसे कहि नीचे बैठारी ।

बाँह पकरी भुँइया मह ठेली, क्रोधित मेरी ओर निहारी ॥

माता री ! दुख जान न सहि सो कोऊ जतन बताऊ हहारी ।

टपकत आंसु कहत ध्रुव बालक, गहि अञ्चल सारी ॥

सुंदर सुकवि बात सो छिद गई मन भीतर महतारी ॥"[१३]

कवि ने अत्यंत स्वाभाविक सरस शब्दों में बालक ध्रुव को ईष्ट तक पहुँचने का मार्ग सुझाया है,और कहा - अपने हृदय में अमल ब्रह्म जो चार भुजाधारी हैं, वनमाला धारण करने वाले हैं, उनका ध्यान करो, तुम्हें निश्चित ही प्रभु के दर्शन प्राप्त होंगे, सिद्धि मिलेगी और गति को प्राप्त होगे।

बालक ध्रुव ने श्रवण किया -

"सुनत सिख कान पे ध्यान के ईश

ऋषिराय के पाय पे शीश राखो तबे ।

कहत आनंद घने, तीन नाहिन बने

करत तप चरण इक, खड़े लाये जने ॥[१४]

यह काव्य संग्रह शर्मा जी की उत्कृष्ट कृति है। इसमें भाव की गहराई और कवि का ईश्वर प्रेम दृष्टिगत होता है, साथ ही उनकी दार्शनिक दृष्टि का साक्षात्कार भी होता है।

श्री राजीव क्षेत्र महात्म्य

श्री राजीव क्षेत्र महात्म्य उसी बहुचर्चित कवि कृति है, जिसे पं. सुन्दरलाल शर्मा के ज्येष्ठ पुत्र नीलमणि शर्मा ने सन् 1915 में श्री रामजीलाल शर्मा के हिन्दी प्रेस प्रयाग से मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया था। यह लघुकाव्य प्रायः लुप्तप्राय सा हो गया है।

श्री राजीव क्षेत्र महात्मय में कवि की वाणी भगवान राजीव लोचन की महिमा के गीत गाने में तथा छत्तीसगढ़ की जीवन दायिनी चित्रोत्पला गंगा महानदी, पावरि (पैरी नदी) और सुदवि (सोढ़ूर नदी) की बार-बार आराधना करने में अपने को धन्य मानती है । पवित्र त्रिवेणी पर बसे हुए ऐतिहासिक नगर राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग माना जाता है । 'इसका महात्म्य याज्ञवल्क्य संहिता के अड़तिसवें अध्याय मेंऔर अत्रि संहिता में वर्णित है ।'

पं. सुंदरलाल शर्मा ने केवल सत्रह वर्ष की अल्पायु में सन् 1898 में इस काव्य की रचना की । इसी राजिम में भगवान राजीव लोचन का जगत प्रसिद्ध देवालय है, जहाँ पर भगवान् विष्णु की अत्यंत शांतिदायिनी नयनाभिराम अद्वितीय मूर्ति है । प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा के पर्व पर पवित्र जगन्नाथ धाम प्रात: स्नान के बाद तीन-चार घंटों के लिए बंद रहता है, ऐसी जनश्रुति है कि उस अवधि में भगवान जगन्नाथ स्वामी के दर्शन राजीव लोचन मंदिर में होते हैं । राजिम को धार्मिक दृष्टि कोण से पांचवाँ धाम कहा जा सकता है ।

राजिम का प्राचीन नाम कमल क्षेत्र पद्मावती पुरी था । लोक-कथा के अनुसार इस अंचल में प्रकृति सुंदरी की रूप छटा अत्यधिक मनोहारी तथा मूर्तिमयी थी, जिससे मुग्ध होकर भगवान विष्णु ने क्षीर सागर का त्याग कर कुछ काल तक यहीं निवास किया एवं यहाँ एक रमणीय नगर और 'नारायण' नामक सरोवर का निर्माण कराया । कथा के अनुसार 'गजग्राह' की प्रसिद्ध पौराणिक घटना इसी सरोवर में हुई थी । भगवान राजीव लोचन की मूर्ति के दाहिने हाथ के नीचे की ओर गजग्राह का युद्ध उत्कीर्ण है । पं. सुन्दरलाल शर्मा ने अपने लघु प्रबंध काव्य 'श्री राजीव क्षेत्र महात्म्य' में गज के करुणा पूरित पुकार को प्रस्तुत किया है।

हा ! राधा मनहरण कन्हाइ । जोगी जाहि जपहिं मन लाई ॥
लक्ष्मीनाथ । मुकुन्द । मुरारी । गोपन हेत गोवर्धन धारी ॥
दीनदयाल । गरूड़ को गामी । डूबत नाथ उबारहु स्वामी ॥
आरति-हरण शरण सुखकारी । दौरहूं प्रभु कस करत अबारी ॥[15]

पं. शर्मा जी ने इस काव्य में भक्ति भावना से पूरित होकर भगवान राजीव लोचन की महिमा के बखान में रत दिखाई देते हैं, ये सच है कि जहाँ उन्होने उग्र व्यक्तित्व प्राप्त किया था, वहीं उन्हें हृदय की सरसता भी उपलब्ध थी। वह मिठास और लावण्यता है, उनके भक्त के रूप में छवि अपने आप इस लघु काव्य में दर्शनीय है । वे स्वयं भगवान राजीव लोचन के अनन्य भक्त थे । भगवान राजीव लोचन की महिमा को अपनी काव्यमय वाणी में पिरोया ।

प्रलाप-पदावली

प्रलाप पदावली पं. सुन्दरलाल शर्मा का भक्ति काव्य है। जिस प्रकार संत तुलसीदास ने परमात्मा के प्रति आत्म के निवेदन को 'विनय पत्रिका' के माध्यम से प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार पं. सुन्दरलाल शर्मा ने भौतिक संसार से त्रस्त आत्मा के प्रलाप पदावली के द्वारा परमात्मा के प्रति उनके प्रलाप को प्रस्तुत किया है । जिसका प्रकाशन 1917 में हुआ। आध्यात्मिक भावनाओं को आत्म निवेदन की शैली में प्रस्तुत किया । इसे पढ़कर ऐसा लगता है कि देश में अंग्रेजों से भयभीत जन को शांति प्रदान करने के लिए शर्मा जी ने इन भजनों को लिखा जिससे यहाँ की दुखी जनता थोड़ी संतुष्ट हो सके । इसके प्रत्येक शब्द में प्रलाप है, जिसमें कवि ने परमात्मा की प्राप्ति को स्वतंत्रता की प्राप्ति मानते हुए सुविधा में जीने और गुलामी में रहने को उचित नहीं मानते । जिसका प्रस्तुत अवतरण में इसी कड़ी में वर्णित है-

हमरो ऐसा दिन कब ऐहे ।
द्विविधा द्वैत सोच संशयमय जादिन देखि भगैहें ।
अति आनंद मुदित सुकृत, कहकरत बस मुनि करैहै ।
करि औ कीर भूप, मिषुक महजा दिन भेदन पे हैं ।
सुंदर सुकवि राम रस राते माते नहिं न उद्यैं है ।[16]

निम्नांकित पत्रिका के माध्यम से पं. सुन्दरलाल शर्मा की शेष कृतियों की प्रमाणिकता का बोध होता है-

1. करुणा पचीसी
2. स्फुट पद्य संग्रह
3. स्वीकृति भजन संग्रह
4. ब्राह्मण गीतावली

5. काव्य दिवाकर

6. सतनामी पुराण [१७]

समाजीवचन

जिस पर आप दयालु रहेंगे।

उसका दुश्मन दाह करेंगे ॥

काला मुख पर शत्रु मढ़।

पटक कर हार थकेंगे ॥ [१८]

'सतनामी भजन माला' शर्मा जी के द्वारा लिखित गुरु घासीदास द्वारा प्रवर्तित सतनाम सम्प्रदाय में प्रचलित प्रतिनिधि लोक काव्यों का संग्रह है। हरिजनों से शर्मा जी का आत्मीय संबंध था इसलिए इन्होंने इसकी रचना की। 'सदगुरु वाणी' इनके द्वारा लिखित अन्य काव्यों में से एक है, आत्मा और परमात्मा के साथ संबंध को सतवाणी काव्यों के द्वारा शर्मा जी ने उद्‌गारित किया। [१९]

सन् 1988 में शर्मा जी की कुछ कविताएँ 'रसिक मित्र' कानपुर से प्रकाशित हुई इसे हम पं. सुन्दरलाल शर्मा की प्रथम प्रकाशित रचना मान सकते हैं। इसे प्रकाशित कविता के कुछ अंश निम्न हैं -

यह पंथ विकट डिगनागत कहु अनंत भुन तलधर।

गति दमन चहुंस विरोठा, लागत कुम्मल जड़ संवत हरे॥

प्रिय रमन वच भागहु तनक करु, धरम कुमति जलाय है।

हिमपुरि आस कुरपुन, हति रहु राम पहल सहाय के॥ [२०]

करुणा पच्चीसी भी पं. शर्मा के द्वारा लिखे गये काव्यों में से एक है, इसमें पच्चीस ऐसे छंद हैं जो वास्तव में पं. शर्मा जी की विनय पत्रिका है। इस काव्य में पं. शर्मा जी के काव्योत्कर्ष को हमें देखने को मिलता है। स्वाधीनता संग्राम सेनानी और राजनेता होने के कारण शर्मा जी के साहित्य का समग्र मूल्यांकन की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। यह भी कहा जा सकता है कि जान-बूझकर उसकी उपेक्षा की गई पद्यों में कई बार कवि सुन्दरलाल सुकवि उपनाम का उपयोग करते थे और कई बार 'हिंगराजा' उपनाम का प्रयोग भी करते थे। हरि ठाकुर जी की एक पांडुलिपि से -

बासर पै बर बावड़ी पै वेणुहूँ, पैवीरवर विधि कापै
और बाजार पै बरात में

'सुंदर सुकवि' बरुहूँ पै बेलहू पै विरंदहू पै बिल्लरी पै
बनिता न हू के गाँव में

बसन पे बासन पै बलि पै बिलासन पै बायी चैवमि
पैवकी पैबरु पात में

बादर पै बाइन पै बयारि पै बगीचन पै बन पै पहार पै
बहार बरसात में। [२१]

पं. शर्मा हिन्दी नाटकों के कुशल निर्देशक और लेखक ही नहीं अपितु रंगमंच एवं मूर्तियों के माध्यम से तात्कालिक नाटक को नया रूप प्रदान करते थे। दुर्भाग्यवश इस रूप में उनका मूल्यांकन आज तक नहीं किया गया है। शर्मा जी ने हिन्दी के पांच नाटकों का प्रणयन किया है ये प्रायः सभी अध्यात्म से 'काव्य दिवाकर' पिंगल शास्त्र से संबंधित हैं। इस ग्रंथ की रचना शर्मा जी ने 1898 में की जिसकी पाण्डुलिपि स्मारक समिति के पास सुरक्षित है। हिन्दी के प्रथम पिंगलाचार्य जगन्नाथ प्रसाद भानु ने स्वयं स्वीकार किया था कि उन्हें पिंगल शास्त्र प्रस्तुत करने की प्रेरणा पं. सुन्दरलाल शर्मा से प्राप्त हुई। इससे यह स्पष्ट है कि शर्मा जी छंद के पारखी एवं मर्मज्ञ थे, उनका अध्ययन, मनन, चिंतन, साहित्य और सांस्कृतिक के विविध आयामों के लिए था। [२२]

प्रहलाद नाटक के नाटक के अतिरिक्त शर्मा जी ने सीता परिणय नाटक, विक्रम शशिकला नाटक, पार्वती परिणय नाटक की भी रचना की जो उपलब्ध नहीं है।

सम्प्रति तीनों नाटक कहीं भी उपलब्ध नहीं है, परन्तु उल्लेख पूर्व की पत्रिकाओं में किया गया है।

1. ***पार्वती परिणय नाटक***
2. ***सीता परिणय नाटक***
3. ***विक्रम शशिकला नाटक*** [२३]

दुलरुआ पत्रिका (केन्द्रीय कारावास रायपुर)

पं. शर्मा जी ने 'दुलरुआ' नामक पत्रिका का संपादन भी किया था। यह 1940 की पत्रिका है, इसके पूर्व उनकी स्थिति बीमारी की थी। उस समय उनकी इच्छा थी कि कला, साहित्य और संस्कृति की विकास कैसे हो, इसी विकास के लिए योजना बनाई जाती थी। इस पत्रिका में छत्तीसगढ़ के तीस बत्तीस साहित्यकारों का नामोल्लेख है। छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति को जागृत करने का अंतिम प्रयास था।

इन बातों के अतिरिक्त विकसित गाँवों का चित्रण है।इस तरह इस पत्रिका में हमें वैचारिक लेख उपलब्ध होते हैं।

भोला प्रसाद वर्मा नामक व्यक्ति का जिक्र इस पत्रिका में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने किया है, क्योंकि वह दानवीर था। आज वर्तमान में जो कुर्मी छात्रावास है, वह उसका स्वयं का बाड़ा था। इसके विकास के लिए भोला प्रसाद वर्मा ने जो भ्रमण कार्य किया, उसमें पं. सुन्दरलाल शर्मा ने योगदान दिया। पं. शर्मा ने कुर्मी बोर्डिंग के लिए स्वयं दान दिया और दान इकट्ठा करने में मदद की। उसी प्रकार राजिम में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने, जो ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना की, उसमें भोला प्रसाद ने एक बैलगाड़ी दान दिया जिससे अनाज वगैरह एकत्र किया जाता था।[२४]

श्री राजीव प्रेम पियूष

छत्तीसगढ़ की जीवनदायिनी चित्रोत्पला गंगा महानदी तथा उसकी सहायक पैरी (पावरि) और सोंढूर (शुंडवि) की पवित्र त्रिवेणी पर बसे हुए ऐतिहासिक नगर राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग माना जाता है। इसका महात्म्य याज्ञवल्क्य संहिता के अड़तीसवें अध्याय में वर्णित है।[२५]

17 वर्ष की अल्पायु में सन् 1898 को इस पत्रिका की रचना कर डाली। इस पत्रिका में पं. सुन्दरलाल शर्मा की वाणी भगवान राजीव लोचन के गीत गाने एवं चित्रोत्पला गंगा (महानदी) की आराधना करने में अपने को धन्य मानती है। अप्रकाशित इस पत्रिका में साहित्यकार का मन भक्ति रस से विभोर हो उठता है -

ठुमरी

श्री महानद तोरि दरस मोहि भावे।
पांवरि शुंडवि संग बहति है, लहरन की छवि धावै॥
जे अति अधम-अधम अघ, गिखिर हेर चिंहुयकि आवै।
देखत दरस परस जे गंगे, मज्जत सुरगति पावै॥
जे जड़मन क्रम वचन अभक्ता, केवल वारि अंचावै।
सुरगण तासु करत अगवानी, महिमा बरिन न जावै॥
'सुंदरलाल' दास चरणन की, हइसन गुणि गुण गावै।
जन्म मरण संसृत दुख खोवे, तीन्हू ताप बसावै॥ [२६]

पं. सुन्दरलाल शर्मा का राष्ट्रवादी साहित्य लेखन

पं. सुन्दरलाल शर्मा ऐसे ऐतिहासिक दौर की उपज हैं, जिसमें चेतनाशील रचनाकर्मी को कई दायित्वों का निर्वहण करना आवश्यक था और पं. सुन्दरलाल शर्मा मे किया भी वही। वस्तुतः उनका उद्देश्य देश को स्वतंत्र कराने के लिए राष्ट्रीय आंदोलन की गति तेज करना था, और इसके लिए उन्होंनें अनेक कोणों से अपनी रचनाशीलता का उपयोग किया। वास्तव में उनके सारे कर्म राष्ट्रीय आंदोलन को समर्पित थे। समाज सुधार और साहित्य कर्म राष्ट्रीय आंदोलन से किसी भी तरह अलग नहीं थे। अपने प्रमुख उद्देश्य की पूर्ति के लिए शर्मा जी ने इन कार्यों को भी अपने हाथों में लिया था। वे क्षेत्र की विश्रृंखलित और बिखरी हुई शक्ति को एकत्रित करके महाशक्ति का रूप देना चाहते थे, ताकि गुलामी का जुआ उतार फेंका जा सके जिसके लिए उन्होने दूर पड़ी हरिजन शक्ति को समाज और राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया और इस प्रयास के लिए उन्हें बदनामी भी झेलनी पड़ी थी। साहित्य के माध्यम से जन-जागृति और जन संस्कृति के प्रति प्रीति अंकुरित करने का कार्य उन्होने अपनी पूरी प्रतिभा के साथ संपादित किया। उन्होंने न केवल साहित्य सृजन किया, अपितु एक नयी रचनाशीलता को जन्म भी दिया।

पं. जी का जागरण अभियान बहुआयामी था। एक ओर वे सामाजिक परिवर्तन और परिष्करण का पक्ष रखते हुए अस्पृश्यता से मुक्ति का उद्यम कर रहे थे और दूसरी

ओर राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए सत्याग्रह का शुभारंभ कर रहे थे। उन्होने बड़ी गंभीरता से यह अनुभव किया कि बिना सामाजिक शुद्धि के स्वाधीनता संभव नहीं। वे चाहते थे- स्वाधीनता का संघर्ष शुरू करने के पहले सामाजिक शक्तियों का विन्यस्त कर लेना व सामाजिक विवादों को सुलझा लेना। अपने ही समाज में अपमानित एवं अप्रासंगिक होते आदमी को उन्होंने निरापद एवं भयमुक्त करने का महतर कार्य किया। उसे बंधनमुक्त करने का यत्न किया। उन्हें उन्मुक्त करने का प्रभावी प्रयास किया। वे अपने समकालीन समाज को राष्ट्रीय मुक्ति अभियान के लिए पूरी तरह समर्थ बनाना चाहते थे, जिससे राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतिष्ठा के लिए किये जा रहे अभियान का उसे विनम्र योद्धा बनाया जा सके। इस तरह की संकल्पना पं. सुन्दरलाल शर्मा जैसा विवेकवान व्यक्ति ही कर सकता है। यही कारण है कि उनका सम्पूर्ण जीवन मानव मुक्ति अभियान एक प्रतिमान बन गया।[२७]

पं. शर्मा छत्तीसगढ़ी साहित्य के युगप्रवर्तक साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। 20वीं सदी के प्रथम दशक में उनके साहित्यिक योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। उन्होंने जनभावना के अनुकूल राष्ट्रीयता, आध्यात्मिकता और पौराणिकता से युक्त भावनाओं को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर अंचल में राष्ट्रीय चेतना का विकास किया।

विक्टोरिया वियोग और ब्रिटिश-राज्य प्रबंध एवं प्रशंसा

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने 'विक्टोरिया वियोग' नामक इस जीवनी लेखन में ब्रिटिश सरकार की अच्छाइयों को प्रस्तुत किया है अर्थात् ब्रिटिश राज्य की प्रबंध व्यवस्था की प्रशंसा की है। विक्रम संवत् 1959 में श्रीयुत ठाकुर कुंवर बहादुर सिंह जी मुंसिफ (उड़नी पिपरिया, नरसिंहपुर सी.पी.) की आज्ञा से इस जीवनी लेखन कार्य को पूर्ण किया। शर्मा जी ने स्वयं कहा है कि

"राजभक्ति प्रचार करने के पवित्र उद्देश्य को लेकर मैंने इसकी रचना की थी। यदि उसमें सफलता हुई तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा।" [२८]

चन्द्रसूर, दिनाँक 13 अगँत 1916

विक्टोरिया वियोग शर्मा जी का एक ऐसा हस्तलिखित काव्य है जिसमें उन्होंने विक्टोरिया शासन की प्रशंसा की है। यह काव्य आगे चलकर लेखक के मन में विद्रोह की भावना भी भरती गई। कालान्तर में शर्मा जी उग्रवादी विचारधारा के समर्थक बन गये। 'स्वीकृति मात्र संग्रह' का भी बड़ा मधुर चित्रण उन्होंने किया है। इसमें भक्ति गीत भाव का मीठा संगम है।[२९]

विक्टोरिया के गुणों का बखान कर रहे है कि उनके शासनकाल में ऐसा लगता था, जैसे सुमेरू पर्वत का भार धरा ने वहन कर लिया हो, सूर्य प्रकाशवान है, मेघ अपने स्थान पर वर्षा कर रहे हैं, आकाश, जल और नक्षत्र से पूरित है, गंगा का अंग तरंगों से तरंगायित है।

आगे ब्रिटिश सरकार के गुण का वर्णन किया है। ब्रिटिश सरकार में ऐसी अनेक अच्छाईयाँ थीं जिसका बखान एक मुख से कम है। जहाँ हमें अनेक सुख साधन उपलब्ध हुए। पुलिस, अदालत, रेल, तार, जहाज, कल कारखाना, नल, बगीचा, सराय, कुँआ, सेटलमेंट, नहर, तालाब, अकाल-प्रबंध, पुल, कृषि, बैंक, धर्म, दुष्टदलन, रामराज्य, कोर्ट ऑफ वार्ड्स ऐसी अनेक व्यवस्थायें हैं जो हमें ब्रिटिश राज्य में उपलब्ध हुए, यही कारण है कि ब्रिटिश राज्य को प्रजागण ने इस प्रकार संबोधित किया-

छंद-

इहि प्रकार बहु भांति, विविध सुख सरस लहत जहँ,
सकल मुदित मन प्रजन चहति जय ब्रिटिश सिंह कहँ॥
सुख समृद्धि भरपूर दूर, कंटक समस्त हुव।
वृद्ध बाल नर नारि सुयश एडवर्ड कहत तुव॥ [३०]

इस जीवनी लेखन के माध्यम से लेखक का यही उद्देश्य रहा है कि अंग्रेजी हुकूमत एवं उनके साम्राज्य में जो निरंतर क्रूरता एवं हिन्दवासियों के पतन के उपाय होते रहे हैं, जिसके निष्कर्ष के रूप में हमें देशभक्ति एवं जनजागरण देखने को मिला एवं ऐसे वीर पुत्र जो अपनी माँ को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराना चाहते थे, उन्होने देश को आजाद करवाने का बीड़ा उठाया और हर एक सिपाही मिलकर जो वृहद फौज का निर्माण हुआ, जिससे अंग्रेजों के छक्के छूट गये और भारत आजाद हुआ।

स्वयं लेखक पं. सुन्दरलाल शर्मा वीर सिपाही थे और माँ भारती के अनन्य पुजारी। नकारात्मक तथ्यों के मध्य अंग्रेजी हुकूमत में कुछ अच्छाईयाँ भी थीं, जो 'विक्टोरिया वियोग' में उपलब्ध होता है कि किस तरह विभिन्न क्षेत्रों का द्रुतगति से विकास हुआ और जिस विकासात्मक रूप का लाभ आज भी हम प्राप्त कर रहे हैं। पं. शर्मा के अनुसार-

"बीज और बैल को चाहे जबै, कम ब्याजन ते रुपियान लियो करैं।
सांप्रत काल के बंचक साहन के कर में गिरवी न दियो करैं॥
जावें किसान अपान सबै, पुरुषान की भूमि बचायो कियो करैं।
ऐसो दयालु प्रभु कृषि-बैंक को, खोलनहार जुगान्त जियो करैं॥"[31]

छत्तीसगढ़ी दानलीला

(संवत् 1960)

छत्तीसगढ़ अंचल में स्वतंत्रता संग्राम के अग्रनायक तो पं. शर्मा थे ही साथ-साथ छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रथम रचना करने वाले भी पं. सुन्दरलाल शर्मा ही थे। शर्मा जी के द्वारा लिखित 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' साहित्य के क्षेत्र में जगमगाती हुई महान् विभूतियों की तरह छत्तीसगढ़ के साहित्य गाथाओं में गौरव का प्रतीक है।[32]

छत्तीसगढ़ी में लिखे गये इस प्रथम खंडकाव्य की रचना सन् 1906 में दानलीला प्रथम संस्करण में कवि ने इस ग्रंथ रचना के उद्देश्य को निम्न वाक्य में प्रकट किया है-

'मुझे वास्तविक आनंद तो उस दिन प्राप्त होगा जिस दिन हमारी यह प्यारी मातृभाषा भी अन्य देश भाषाओं की भाँति अपनी उन्नति का सन्मार्ग अवलम्बन करेगी।''
हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं पं. सुन्दरलाल शर्मा के मित्र पं. माधव राव सप्रे ने पत्र भेजकर इन शब्दों में इस लघु खण्ड काव्य की प्रशंसा की थी -

'मुझे विश्वास है कि भगवान कृष्ण की लीला के द्वारा मेरे छत्तीसगढ़ निवासी भाइयों का अवश्य कुछ सुधार होगा। मेरी आशा और भी दृढ़ हो जाती है, जब मैं देखता हूँ कि छत्तीसगढ़ निवासी भाईयों में आपकी इस पुस्तक का कैसा लोकोत्तर आदर है।2[33]

सन् 1915 के द्वितीय संस्करण की भूमिका में कवि ने अपने उद्देश्य को इन टिप्पणियों में प्रकट किया है -

'किसी भी प्रांत में मातृभाषा का प्रचार स्वाभाविक प्रेम और श्रद्धा के कारण शीघ्र ही हो सकता है। क्या इतने पर भी हमारे प्रांत के विद्वान लोग अपने अविद्या-अंधकार ग्रसित छत्तीसगढ़ भाइयों में विद्या के प्रचार करने वो अच्छे भावों को भरने के विचार से इस भाषा के साहित्य भंडार में अपनी शक्ति का कुछ सदुपयोग न करेंगे ?'

हम भी चाहते हैं कि 'राष्ट्रभाषा' हिन्दी ही हो। 'परन्तु प्रांतीय भाषा को उन्नति के उद्योगों के बिना शिक्षा का सर्वतोमुखी प्रचार होना कोरी कल्पना मात्र है। भारतवर्ष के अन्य भागों की तुलना में इस प्रांत का बहुत पीछे रहने का मूल कारण मातृभाषा के साहित्य का अभाव है।'

कवि के उपरोक्त विचारों से यह स्पष्ट होता है कि वे छत्तीसगढ़ को एक प्रांत मानते थे एवं छत्तीसगढ़ी को इस अंचल की मातृभाषा की मान्यता प्रदान कर शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते थे। इसी पावन उद्देश्य से प्रेरित होकर उन्होंने 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' की रचना की थी।[34]

जब छत्तीसगढ़ी दानलीला सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी तब उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राय बहादुर हीरालाल ने लिखा था- 'जउने हर अइसन बनइस हे तउने ह नाम कमाइस हे।' उनका यह कथन सर्वथा सार्थक है, क्योंकि भविष्य में जब भी छत्तीसगढ़ी भाषा का साहित्य लिखा जाएगा, उस दानलीला के कर्ता पं. सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ी के प्रथम कवि माने जाएंगे।[35]

छत्तीसगढ़ी दानलीला पं. सुन्दरलाल शर्मा की कृष्ण भक्ति की रचना है, उन्होने ब्रजभूमि को छत्तीसगढ़ में ही उतार दिया है। पूरा प्रबंध छत्तीसगढ़ की विशिष्ट ग्रामीण संस्कृति और सभ्यता को समेटे हुए है। कवि इस अंचल के रावत जाति में ही कृष्ण-राधा, ग्वाल-बाल तथा गोपिकाओं का दर्शन करते हैं।[36]

पं. सुन्दरलाल शर्मा का 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' नामक खंडकाव्य की रचना सन् 1912 में कर ली थी, किन्तु उसका प्रकाशन सन् 1913 में हो पाया। सन् 1924 तक उसके तीन संस्करण निकले। गोकुल प्रसाद ने 'रायपुर रश्मि' में शर्मा जी की दानलीला को छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रथम पद्यात्मक ग्रंथ बताया है।[37]

सन् 1906 से ही पं. सुन्दरलाल शर्मा स्वदेशी आंदोलन से जुड़े हुए थे। इसका प्रभाव भी उस खंडकाव्य पर पड़ा था। तत्कालीन परिस्थितियों में राष्ट्रीय एकता के लिए गाँधी जी ने हरिजन उद्धार पर विशेष बल दिया था। अपने छत्तीसगढ़ के दौरे पर उन्होंने अपने व्याख्यान में स्वीकार किया था कि उक्त आंदोलन के लिए पं. सुन्दरलाल शर्मा उनसे दो साल बड़े हैं। हरिजन उद्धार की ओर विशेष ध्यान देने के कारण शर्मा जी को सवर्णों द्वारा अपमानजनक संबोधन भी कहे गये।

इस खंड काव्य में उनके जाति विरोधी विचार स्पष्ट हैं -

"जात-पाँत में सबो बरोबर

न अय गोई घाट कोनो हर।"[३८]

समीक्षक डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा दानलीला के विषय जब यह कहते हैं इस खण्डकाव्य में अर्थवहन करने की अद्भुत क्षमता है तब यह स्पष्ट हो जाता है कि इस खण्ड काव्य में कोरी कृष्ण भक्ति नहीं है वरन् राष्ट्रभक्ति का आह्वान भी है।

प्रहलाद नाटक

(संवत् 1961)

'प्रहलाद नाटक' की रचना पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा सन् 1906 में की गई थी। यह छत्तीसगढ़ी में लिखा गया ऐसा प्रथम नाटक है, जिसका छत्तीसगढ़ के प्रमुख कस्बों तथा नगरों में सफल मंचन हो रहा है। इसके प्रकाशक स्व. शर्मा जी के अभिन्न मित्र धमतरी निवासी देशभक्त स्व. नारायण राव विट्ठल फड़नवीस (बाद में मेघावाले) थे। उन्होंने ग्रंथ की भूमिका में निम्नलिखित विचार व्यक्त किये-

"भगवान की दया से यह प्रहलाद नाटक जितना उत्तम और सर्वांगपूर्ण हुआ है, वह किसी नाटक मर्मज्ञ पुरुष से छिपा नहीं रहेगा। इसके कई अभिनय खेले जा चुके हैं। पात्रों के मर्मस्पर्शी भाषण और भावपूर्ण गीतों से जितना आनंद व्यक्त होता है, वह आगे चलकर हमारे प्रेमी प्रेक्षक और पाठकों को अवश्य विदित हो जावेगा। यह नाटक प्रसंग पर खेलने के लिए निर्माण किया गया था। कतिपय मित्रों के आग्रह से प्रसिद्ध करना ही उपयुक्त समझा गया। आशा है, हमारे काव्य प्रेमी महाशय हमारे मित्र की इस प्रथम भेंट की स्वीकृति कर उत्साहित करेंगे।"

काशी क्षेत्र,

भवदीय

अश्विनी शुक्ल-5

नारायण राव विठ्ठल

"फड़नवीस"

वि.सं.-1969

धमतरी निवासी

इस प्रकार नाटककार द्वारा नाटक के आरंभ में सूत्रधार की वाणी से देशवासियों के हृदय को संतप्त तथा दुखी कहलवाना धर्म की रक्षा के लिए ईश्वर के लिए पुनः अवतार की प्रतीक्षा की चर्चा करवाना तत्कालीन शासन अर्थात् अंग्रेजी कुशासन एवं शोषण की तुलना राक्षसों से करना इस बात की ओर इंगित करता है कि नाटककार ने अंग्रेजी हुकूमत की तुलना अपरोक्ष रूप से अन्यायी राक्षस राजा हिरण्य कश्यप से की है तथा भक्त प्रहलाद की तुलना निरीह तथा शोषित देशवासियों से की है। इस प्रकार प्रारंभ से अंत तक लोगों को यह संदेश है कि जिस तरह भक्त प्रहलाद ने यातनायें सहकर अन्यायी हिरण्य कश्यप का मुकाबला किया, उसी तरह देशवासी अंग्रेजी हुकूमत के अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करें। [३९]

पं. सुन्दरलाल शर्मा प्रहलाद नाटक को मंचस्थ करने में स्वयं भिड़े रहते थे तथा उसका निर्देशन भी वे किया करते थे। नाट्य शास्त्र पर आधारित उस नाटक पर 4 अंक हैं तथा लगभग 26 गीत, सवैया और कवित्त हैं। कथोपकथन तत्कालीन समाज की रुचि के अनुसार है, नाटक के अंत में निम्नांकित समाजी वचन भी है-

जिस पर आप दयालु रहेंगे।

उसका दुश्मन काह करेंगे॥

काला मुख कर शत्रु साले, मूंड़ पटक कर हाथ थकेंगे।

है, यह सत्य नहीं, कुछ तो भी, उसका बार उखार सकेंगे।

अंग्रेजों के विरुद्ध नाटककार का आक्रोश प्रकट होता है-

"जावै रामदयालु है, ताहि बिगारे कोय,

सिर मारे मर जायेंगे, पर बार ला बाका होय।"[४०]

पं. सुन्दरलाल शर्मा की पत्रकारिता

हिन्दी के पत्रकारों में पं. सुन्दरलाल शर्मा का अपना उल्लेखनीय स्थान है। उनकी अपनी पत्रिका 'कृष्ण जन्म' 'दुलरुआ' (केन्द्रीय कारावास रायपुर से) 'श्री राजिम प्रेम पियूष' पत्रिका (राजिम से) विशेष रूप से उल्लेखित है, जिसकी प्रमाणिकता को बरकरार रखा गया है। पत्रकारिता के माध्यम से पं. सुन्दरलाल शर्मा ने राष्ट्र प्रेम, समाज प्रेम, संस्कृति प्रेम की भावना को जीवंत रखा है। उनका जुझारू व्यक्तित्व जो सर्वत्र लेखनी चलाने में अपनी सक्षमता को दर्शाता है, इनका प्रतिरूप हम इन पत्रिकाओं में प्राप्त करते हैं, जहाँ उनकी चित्रात्मकता को भी स्थान मिला है। जन-जन के प्रेमी नेता, साहित्यकार, समाज सुधारक के रूप में हम उन्हें देख सकते हैं। ऐसी विशेषता एक ही व्यक्ति में उपलब्ध होना साधारण बात नहीं। उनके जैसा असाधारण व्यक्तित्व अत्यंत दुर्लभ है और धन्य वह धरती जिन्होंने ऐसे सपूत को जन्म दिया और धन्य है वह माँ जिसकी कोख में ऐसे रत्न पलते हैं, जिसके हर एक पदचाप से यह धरा भी ऋणी हो जाती है और उसकी छाती पद ध्वनिमात्र से प्रफुल्लित हो जाती है।

कृष्ण जन्म पत्रिका

सन् 1922 में जेल से यह पत्रिका प्रकाशित हुई थी। इस पत्रिका में उस समय की मौजूदा सम्पूर्ण परिस्थिति को लिया गया है। इसके मुख्य पृष्ठ पर जो चित्र बनाया गया है, वह स्वयं पं. सुन्दरलाल शर्मा ने बनाया है। यह गुनाहखाने का चित्रण है। जब भगवती प्रसाद मिश्रा को उठाकर अंग्रेजी सिपाहियों द्वारा ले जाया जा रहा था, उसी अवसर का है। यह चित्र ज्यों का त्यों मुख्य पृष्ठ पर अंकित है।

कारावास अवधि में अंग्रेजों की कड़ी निगरानी के बावजूद उन्होंने जेल से ही हस्तलिखित पत्रिका निकालना प्रारंभ किया। इस पत्रिका का नाम 'श्रीकृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्र' नाम दिया। यह 'द्विमासिक' थी तथा एक वर्ष तक निकलती रही। इसका छठवां अंक उपलब्ध है। इस अंक के मुख पृष्ठ में ईश स्तवन एवं देश की दुर्दशा का वर्णन मिलता है।[४१]

'कृष्ण जन्म पत्रिका' में राष्ट्रीय आंदोलन का जिक्र है एवं उस समय अंग्रेजों द्वारा जो अत्याचार किया जाता था और भारतीयों एवं भारत वर्ष के संबंध में जो विचार विमर्श होता था, वह इस पत्रिका में समाचार पत्र के रूप में छप जाता था।

उक्त पत्रिका में लेख और कविताओं का संग्रह किया गया था। पूरी पत्रिका को दो कालम में विभक्त किया गया था, एक ओर इस पत्रिका में जहाँ साहित्यिक रसों का उल्लेख था, तो दूसरी ओर जेल की घटनाओं का समाचार था। वर्तमान समय में यह पत्रिका साहित्यिक महत्व तो रखती है, साथ ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सजीव चित्र भी प्रस्तुत करती है।

पत्रिका के प्रारंभ में कवि ने परम्परानुसार प्रभु की वंदना की है जो इस प्रकार है-

प्रभु तुम क्यों अब लौं चुपकाये ?
तेरी जन्मभूमि भारत यह पालै परयो पराये,
लाखों वह परे सेवक, सब नित प्रति जात सताए
जहं सब सुखी समृद्धशाली वहं दुख दीन परत दिखाये
आज अनाज हीन अप्रभावित ताड़ित सब अकुलाये,
चूसत रक्त ऋषिन के राकस चाहत धरम मिटाये
हा ! हा ! नित अनाथ इन गौवें जात कटाये,
सम्हलो ! उठो ! अबौ दौरो प्रभु कछु नहिं अंवहुँ नसाये।
नातरू दीन बंधु दिन द्वै में परिहे फिर पछताये।

इससे कवि की आंतरिक भावनाओं का पता चलता है कि उन्होंने अपनी आंतरिक वेदना को प्रभु के समक्ष वंदना के माध्यम से स्पष्ट कर दी है। श्री कृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्र के माध्यम से शर्मा जी ने साहित्य और

पत्रकारिता को समन्वित कर राष्ट्रीय भावधारा से इस अंचल को संपृक्त किया। आजकल के समाचार पत्रों में जिस प्रकार 'छपते-छपते' कालम रहता है, जिसमें नवीनतम समाचार होता है, उसी प्रकार जेल पत्रिका (श्री कृष्ण जन्म-स्थान समाचार पत्र) में 'पुरौनी समाचार' का कॉलम भी रहा करता था, जिसमें रोचक समाचार होते थे।

जेल के भीतर की घटना विशेष उल्लेखनीय है। हँसी-मजाक, धार्मिक, राजनैतिक चर्चा का उल्लेख इस पत्रिका में है। व्रत, अगर आ जाये तो उसका वर्णन उपलब्ध होता है। किस तरह कवियों से व्यवहार किया जाता था, उनकी तकलीफें, हाथ से पानी निकालना, चक्की पीसना आदि।

नाटक खेलने में शर्मा जी की अभिरुचि का पता चलता है, 'कृष्ण जन्म', 'सत्य हरिश्चन्द्र' जैसे नाटक लिखकर उसका मंचन करना उनकी अभिरुचि के अंतर्गत आता है। 'कृष्ण जन्म' नाटक में उन्होने वासुदेव की भूमिका निभाई है और टोकनी में बाल कृष्ण को दिखाया है, वह मूर्ति भी उन्हीं के द्वारा निर्मित है जो हूबहू बालक के समान दिखता है। इससे सिद्ध हो जाता है कि वे मूर्तिकार के रूप में भी स्थापित थे। इसका उल्लेख 'कृष्ण जन्म' पत्रिका में प्राप्त होता है।

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने 'कृष्ण जन्म पत्रिका' में एक सुझाव दिया है कि साहित्यकारों को उपाधि वितरण करो, जिससे प्रोत्साहन मिले।' लघु रूप में व्रत, उपवास के संबंध में जो बोला जाता था, उसका चित्रांकन किया गया है। इस पत्रिका से इस बात का पता भी चलता है कि सुन्दरलाल शर्मा वीणा, पखावज बजाते थे एवं उर्दू के विद्वान कवि साहित्यकार थे।

इस प्रकार इस तथ्य की जानकारी हो जाती है कि सुन्दरलाल शर्मा जेल में रहते हुए अपनी राष्ट्रीय भावना को जीवंत रखते हुए अपनी साहित्यिक प्रतिभा को बनाये रखने में कमी नहीं की। 'कृष्ण जन्म पत्रिका' में जेल की सम्पूर्ण झांकी दिखाई देती है। [४२]

सन् 1922 में रायपुर की अदालत में शर्मा जी को जेल की सजा हुई। पं. सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ के सच्चे सपूत थे। उन्हें जेल भेजते हुए माता ने आशीष दिया जा बेटा, गऊ माता अऊ पिरथी माता के सेवा करबे।' शर्मा जी ने माँ के इस आशीर्वाद को सदैव आदेश की तरह माना। किसी जाति, क्षेत्र और नस्ल की सीमा को उन्होने महत्व नहीं दिया।

11 जनवरी 1923 को पं. सुन्दरलाल शर्मा को रायपुर जेल से मुक्ति मिली। इसी कृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्र, में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने 'रथ पर जुलूस की अबर' शीर्षक से एक समाचार भी दिया है, जो इस प्रकार है- 'रथ पर जुलूस की अबर' आश्रम में भी आ पहुँची। धमतरी निवासी श्रद्धालु जनता ने अपने श्रद्धेय कर्मवीर सच्चे देशभक्त पं. नारायण राव जी फड़नवीस का भव्य स्वागत किया है, उसको सुनकर मुर्दादिल भी एक बार फड़क उठेगा।' यह समाचार पं. नारायण राव जी मेघावाले की अत्यधिक लोकप्रियता का द्योतक है। कितने नेताओं को ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है ? अभिनंदन पत्र की भाषा से यह स्पष्ट है कि पं. सुन्दरलाल जी शर्मा, पं. नारायण राव जी में अटूट स्नेह और परस्पर आदर भाव था। साथ ही शर्मा जी के प्रत्येक शब्द में जैसी स्फूर्तिदायी प्रेरणा है, जिसे प्राप्त कर समूचा छत्तीसगढ़ संगठित होकर रणक्षेत्र में जूझ पड़ा था।

इसी प्रकार भगवती प्रसाद जी मिश्र को तपस्वी और दृढ़-निश्चयी कहकर संबोधित किया गया है, जो उनके व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। जेल यात्रियों की सूची देखने से स्पष्ट है कि सन् 1921 के आंदोलन में हिन्दू और मुसलमानों ने कंधा से कंधा भिड़ाकर अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा ठाना था। पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा अपनी उपर्युक्त जेल पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में पूर्णतः सफल रहे। [४३]

कंस वध खंड काव्य (संवत् 1967)

कंस वध खण्ड काव्य के माध्यम से पं. सुन्दरलाल शर्मा ने अपने समय के वर्तमान परिस्थितियों को चित्रित करने का प्रयास किया है, चूँकि वे एक सच्चे देशभक्त थे और कुशल राजनीतिज्ञ थे निःसंदेह अपने साहित्य के माध्यम से अपनी भावनाओं को जनमानस तक पहुँचाना था। कंस को अंग्रेजी हुकूमत के प्रतीक के रूप में उद्धृत किया है। कंस

की क्रूरता और उसकी राक्षसी वृत्ति से उनके प्रजागण परेशान, दुःखी रहा करते थे, ठीक उसी तरह अंग्रेजों का भारत वर्ष में आगमन और उनकी हृदय दहला देने वाले कारनामें किसी से छिपे नहीं है। बच्चे तक कहानियों के माध्यम से अपने देश की परतंत्रता की कहानी सुनते हैं, अर्थात् सम्पूर्ण भारतवर्ष अपनी इस गुलामी से परिचित है।

ऐसा ही चित्र देखिए-

''कंसराय दरबार में बइठे आसन मार,
मुह जोहत ठाढ़े जहाँ, बड़े-बड़े करिहार''। ४४

'' कंसवध'' वास्तव में एक प्रतीकात्मक खंडकाव्य है, जिसमें वर्तमान शासन व्यवस्था और अन्यायी शासक का चित्र उतारा गया है। पं. सुन्दरलाल शर्मा जहाँ 'विक्टोरिया वियोग' जैसे जीवनी लेखन कर सकते हैं - जो ब्रिटिश राज्य की अच्छाई को प्रस्तुत करता है, वहीं वे उसकी दोषपूर्ण नीतियों को भी प्रस्तुत कर सकते हैं- जो कंसवध खंडकाव्य में है।

नारद के आगमन से कंस अचंभित हो जाते हैं, सभी दरबारी उठ खड़े होते हैं, और चरण छू-छूकर प्रणाम करने लगते हैं, लेकिन मुनिराज कहते हैं हम आशीर्वाद देने नहीं आये है, बल्कि तुम्हें बात बताने आये हैं। प्रतीकात्मक स्वरूप यह है, कि जो सही रुप से देश की सेवा में लगे थे, वे अंग्रजों के वाग्जाल में लिप्त नही हुए, बल्कि उन्हें इस देश से खदेड़ा। यही इस खंडकाव्य का मूल है।

" तुम ही मुनिमन में सिरनामी, करेंव पवित्र मोर घर आई।
सुनते नारद मूड़ हलाईन, मुसकाईन और बात बताईन। ४५

जहाँ एक ओर शर्मा जी ने 'विक्टोरिया वियोग' जैसे जीवनी लेखन कर ब्रिटिश हुकूमत की प्रशंसा ईस्ट इंडिया कंपनी शासन की अपेक्षा की है वही दूसरी ओर 'कंसवध' खंडकाव्य के माध्यम से अंग्रेजी दूषित नीति का खुला प्रदर्शन किया है।

प्रलाप पदावली

इसका प्रकाशन 1917 में हुआ। आध्यात्मिक भावनाओं को आत्म निवेदन की शैली में इन्होने प्रस्तुत किया है। 'प्रलाप पदावली' में विभिन्न छंदों और भजनों को संग्रहित किया गया है। इसे पढ़कर ऐसा लगता है, कि देश में अंग्रजों से भयभीत जन को शांति प्रदान करने के लिए शर्मा जी ने इन भजनों को लिखा। जिससे यहाँ दुखी जनता थोड़ी संतुष्ट हो सके।

जिस प्रकार संत तुलसीदास ने परमात्मा के प्रति आत्मनिवेदन को 'विनय पत्रिका' के माध्यम से प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार पं. सुन्दरलाल शर्मा ने भौतिक संसार त्रस्त आत्मा के प्रलाप को प्रस्तुत किया है। इसमें प्रत्येक शब्द में प्रलाप है, जिसमें कवि ने परमात्मा की प्राप्ति को स्वतंत्रता की प्राप्ति माना है-

हमारी बनी जै है, पभु तनिक दया ने ॥ टेक ॥
नाहक कहुनाथ रामपथ जाहत सुरपुर, बासन चाहिए ॥
लालचन ही मुक्ति पदवी कर भोग-विलास न चाहिए
जौ लौ जीवत रहू , जगत में पर उपकार करार
द्वापर हित निर्भय निश्चित हरषित नित उभर बिताऊ
इतनी तनक अरज सुंदर को, बड़ी बात नहि कोई
चाहो तो अबहि बनि जावैं बिनु भृकुटी बिलतोई ॥

सुविधा में जीने और गुलामी में रहने को उचित नहीं मानते। जिसका प्रस्तुत अवतरण इस कड़ी में वर्णित है -

हमरो एसा दिन कब ऐहे।
द्विविधा द्वेत सोच, संशयमय जादिन देखि भगै हैं।
अति आनंद मुदित सुकृत कहंकरत बस मुनि करैं हैं।
करिऔ कीर भूप, भिषुक महजा दिन भेदन पें है।
सुंदर सुकवि राम रस राते माते नहीं न उदैं हैं ॥ ४६

राष्ट्रीय चेतना विषयक कृतियों के अलावा पं. शर्मा जी की अन्य साहित्य रचनायें उनके सम्प्रेषणीय गुणों के दर्शन करती है। साहित्यका समाजसेवी और राजनीतिज्ञ इन तीनों आयामों का उनमें अद्भुत मिश्रण एवं समन्वय था, इन तीनों क्षेत्रों में वे सफल भी हुए। उनकी कामयावी में सम्प्रेवणीय गुणों के योगदान को स्वीकार करना होगा। अपनी कृतियों के माध्यम से न केवल साहित्यक सेवा की अपितु समाज में शैक्षणिक बोध जागृत किया जिससे लोगों के मन में राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई।

संदर्भ सूची

1. नायक टी.बी. छत्तीसगढ़ में गाँधी जी, पृष्ठ -44.
2. पं. सुंदरलाल शर्मा जी की डायरी, पृष्ठ - 7 पं. भुवनलाल मिश्र राजिम के निजी संगृहालय में संग्रहित
3. मिश्र, भुवन लाल छत्तीसगढ़ी गाँधी पं. सुन्दरलाल शर्मा पृष्ठ 1-2.
4. पं. विश्वनाथ प्रसाद पाठक का जीवन चरित्र, लेखक पं. सुन्दरलाल शर्मा संवत् 1961 कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी रविवार, पृष्ठ-9
5. डॉ. श्रीमती सविता मिश्रा- उत्तर भारतेंदु युगीन हिंदी साहित्य के परिपेक्ष्य में पं. सुन्दरलाल शर्मा की संपूर्ण रचना धर्मिता का मूल्याकन , पृष्ठ- 52
6. सुन्दरलाल शर्मा कृत रघुराज कीर्तन, पृष्ठ- 1
7. श्री रघुराज गुण कीर्तन, श्री नीलामणि शर्मा, जमींदार चंद्रसूर, पो. राजिम, जिला-रायपुर सी.पी. संवत् 1964, पृष्ठ- 1
8. कालजयी शर्मा जी की साहित्य साधना- पुरुषोत्तम अनासक्त, पृष्ठ- 6 सन् 1981
9. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्‌विकास- डा. नरेंद्र देववर्मा, प्रकाशक जीत मल्होत्रा, रचना प्रकाशन 45-ए. सराय खुल्दाबाद, इलाहाबाद-1 न्यू ब्रह्मा प्रेस 170, नयारसूलवाद इलाहाबाद-4, प्रथम- पृष्ठ- 104
10. छत्तीसगढ़ी रामायण अप्रकाशित, पृष्ठ- 1
11. शताब्दी जयंती समारोह राजिम, छत्तीसगढ़ी गाँधी स्व. पं. सुन्दरलाल, भुवनलाल मिश्र, राजिम, स्मारक समिति द्वारा प्रकाशित, नवापारा राजिम, दिनांक 26.12.1981, पृष्ठ- 2
12. नीलमणि शर्मा (प्रकाशक) ध्रुव चरित आख्यान, राजिम दिनांक 13.8.1973 विक्रम संवत्
13. श्री ध्रुव चरित आख्यान, प्रकाशक नीलमणि शर्मा जमींदार चंद्रसूर, जिला- रायपुर, पृष्ठ- 5
14. श्री ध्रुव चरित आख्यान: प्रकाशक, श्री नीलमणि शर्मा, जमींदार चंद्रसूर पो. राजिम, जिला-रायपुर वि.स. 197 3, पृष्ठ- 10
15. श्री राजीव क्षेत्र महात्म्य- पं. सुन्दरलाल शर्मा, प्रकाशक श्री राजीव लोचन, श्रीमती सावित्री मिश्रा के शोध-प्रबंध से उद्‌धृत, अंश पृ. ट्रस्ट कमेटी, राजिम सन् 1898. पृष्ठ- 65
16. पं. सुंदरलाल शर्मा, त्रिवेदी-प्रलाप पदावली, पृष्ठ- 6
17. भुवनलाल मिश्र राजिम- शताब्दी जयंती समारोह राजिम- छत्तीगसढ़ी गाँधी स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा, 26.12.1981 पौषबदी अमावस्या, संवत् 2038, पृष्ठ- 2
18. युगधर्म- 18 मई 1981 रविवारसीय, पृष्ठ- 1
19. डॉ. अशोक शुक्ल- छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक चेतना का विकास, पृष्ठ- 36
20. रसिक मित्र- 1898, पृष्ठ- 15
21. देवी प्रसाद वर्मा- हमारे साहित्य निर्माता, पृष्ठ- 88
22. रसिक मिश्र- 1898, पृष्ठ- 15
23. भुवनलाल मिश्र- शताब्दी जयंती समारोह राजिम, छत्तीसगढ़ी गाँधी स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा, 20.12.1981
24. डॉ. सविता मिश्रा- पूर्वोक्त, पृष्ठ- 100
25. स्वामी विद्यातीर्थ- महाराष्ट्र कुल वंशावली, सन् 1998, पृष्ठ- 3
26. राजिव प्रेम पियूष- सुन्दरलाल शर्मा, सन् 1998 (डा. श्रीमती सविता मिश्र के शोध प्रबंध से उल्लिखित)
27. डॉ. बिहारीलाल साहू- दलित मुक्ति चेतना के संवाहक पं. सुन्दरलाल शर्मा, 2003 पृष्ठ- 46
28. डॉ. सविता मिश्रा- पूर्वोद्‌धृत, पृष्ठ- 55
29. पं. सुन्दरलाल शर्मा-स्वीकृति भजन संग्रह, पृष्ठ- 4
30. विक्टोरिया वियोग और ब्रिटिश राज्य प्रबंध प्रशंसा प्रणेता- पं. सुन्दरलाल शर्मा 'त्रिवेणी' प्रकाशक-श्री नीलमणी शर्मा जमींदार चंद्रसूर वि.स. 1973, पृष्ठ- 10
31. विक्टोरिया वियोग और ब्रिटिश राज्य प्रबंध प्रशंसा प्रणेता- पं. सुन्दरलाल शर्मा, प्रकाशक-श्री नीलमणी शर्मा जमींदार चंद्रसूर वि.स. 1973, पृष्ठ- 10
32. श्रीमती प्रभा पांडेय- छत्तीसगढ़ में राजनैतिक एवम् सांस्कृतिक जन जागरण के प्रणेता-पं. सुन्दरलाल शर्मा

एक मूल्यांकन डॉ. रामनिहाल शर्मा- साक्षात्कार का अंश, दिनांक 7. 11. 1987, पृष्ठ- 146

33. पं. माधवराव सप्रे का पत्र पं. सुन्दरलाल शर्मा को दिनांक 17.7.1917
34. श्रीमती साविता मिश्रा- पूर्वोद्धृत, पृष्ठ- 80
35. डॉ.चितरंजन कर- छत्तीसगढ़ी दानलीला, पं. सुन्दरलाल शर्मा, पृष्ठ- 3, 1981
36. डॉ. चितरंजन कर- छत्तीसगढ़ी दानलीला पं. सुदरलाल शर्मा. हिन्दी साहित्य परिषद् शासकीय राजीव लोचन महाविद्यालय राजिम 1981, पृष्ठ- 3
37. डॉ. जीवन यदु- पं. सुन्दरलाल शर्मा का छत्तीसगढ़ी साहित्य में योगदान (संदर्भ इतिहास का) छत्तीसगढ़ के गाँधी पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा 2004, पृष्ठ- 86
38. डॉ. चितरंजन कर- (सं.) छत्तीसगढ़ी दानलीला एक समीक्षा, परिशिष्ट-1
39. प्रहलाद नाटक- पृष्ठ- 19
40. प्रहलाद नाटक- पृष्ठ- 23
41. पं. सुन्दरलाल शर्मा, श्रीकृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्र, मुख पृष्ठ, बैशाख, छठवाँ अंक, प्रथम वर्ष (पांडुलिपि- पं. रधुनाथ शंकरदत्त मिश्र स्मृति संग्रहालय एवं ग्रंथालय) 1923
42. पं. सुन्दरलाल शर्मा- श्री कृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्र, वर्ष-1, अंक-6 एवं डॉ. रमेंद्रनाथ मिश्र का भाषण पं. सुन्दरलाल शर्मा ग्रंथागार, रायपुर दिनांक 14.12.1999
43. प्रो. रमेंद्रनाथ मिश्र- स्वतंत्रता संग्राम में 'श्री कृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्र की भूमिका' पूर्वोद्धृत, पृष्ठ- 106-107
44. कंसवध- (अप्रकाशित) पृष्ठ- 1
45. कंसवध खंडकाव्य (अप्रकाशित) पृष्ठ- 2
46. पं. सुन्दरलाल शर्मा- प्रलाप पदावली, राजिम, पृष्ठ- 6

छ सहायक प्राध्यापक (संविदा),
इतिहास अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर

पं. सुन्दरलाल शर्मा

पं. सुन्दरलाल शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

• श्रीमती प्रतिमा तिवारी

पं. सुन्दरलाल शर्मा संवत् 1939 (सन्1881) के पौष अमावस्या को रायपुर जिले में महानदी के पूर्वी तट पर स्थित राजिम क्षेत्र (पद्मावती पुरी) के चमसूर (चन्द्रसूर) ग्राम में पं. जियालाल तिवारी के घर हुआ था। पं. जियालाल तिवारी कांकेर रियासत में वकीली का कार्य करते थे। पं. जियालाल तिवारी के दो ही संतान थे, एक पुत्र सुन्दरलाल शर्मा एवं दूसरी पुत्री रोहिणी तिवारी। पं. सुंन्दरलाल शर्मा के दो पुत्र तथा पांच कन्याएं थीं।

पं. सुंन्दरलाल शर्मा की प्रारंभिक शिक्षा राजिम के पाठशाला से ही संपन्न हुई। पांचवीं दर्जा पास करने के पश्चात् इन्होंने विद्यालय का परित्याग किया। शर्मा जी ने घर में ही संस्कृत, उड़िया, भाषाओं का स्वयं अध्ययन किया। हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, और बंगला भाषाओं के शर्माजी विद्वान थे। सात वर्ष की उम्र में ही इन्होंने रामायण का अध्ययन करने लग गये थे। 12 वर्ष की उम्र में उन्होंने कविता करना प्रारंभ कर दिया था।

शर्मा जी ने1915 में छत्तीसगढ़ में सर्वप्रथम राइस मिल अपने नेतृत्व में स्थापित किया, उसका नाम था। "श्री लुटुराम जियालाल राइस हॉलर एण्ड लोर मिल वर्क्स "नयापारा राजिम।[1]

राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव उन पर बचपन से पड़ने लगा था। वे साहित्य के माध्यम से राजनीति में आये। सन् 1898 अर्थात् 17 वर्ष की उम्र से ही शर्मा जी की कविता प्रकाशित होने लगी। श्शर्माजी की कृतियों संख्या 24 बतलायी जाती हैं–उनमें राजीव प्रेम पीयूष (अप्रकाशित) राजीम क्षेत्र महात्क्य, काव्यामृत वर्षिणी, विश्वनाथ की जीवनी, छत्तीसगढ़ी रामायण (अप्रकाशित), छत्तीसगढ़ी "दान लीला", प्रहलाद चरित नाटक, प्रलाप पदावली, श्री रघुराज गुणकीर्तन, ध्रुव चरित्र आख्यान, ब्राम्हण गीतावली, करुणा पच्चीसी, कृष्ण जन्म, आख्यान, स्पुट पद्य संग्रह, कंस वध, सीता परिणय विक्रम शशिकला पार्वती परिणय विक्टोरिया वियोग, सच्चा सरदार, एडवर्ड राज्याभिषेक, बूढ़वा मंगल (अप्रकाशित) स्वीकृति भजन संग्रह, सतनामी पुराण है।

विलक्षण प्रतिभा, अद्भूत व्यक्तित्व अंकुठित कर्मण्यता दुर्दमनीय जिजीवशा–वे इन सबके पर्याय थे शर्माजी राजनीति में थे परंतु राजनीति छल प्रपंच से कोसो दूर थे। वे गांधीवादी से पहले गांधीवादी थे। हरिजनो द्वारा तथा स्वदेशी प्रचार को कार्य इस समय प्रारंभ किया तब महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति में पदार्पण भी नहीं हुआ था।[2]

पं. सुंन्दरलाल शर्मा ने आरंभ से ही रचनात्मक कार्यों के द्वारा जन–जागरण का निर्माण किया। स्वदेशी प्रचार–प्रसार तथा हरिजनों द्वारा का कार्य उस समय प्रारंभ किया गया तब महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति में पर्दापण भी नहीं हुआ था।[3]

हरिजन समाज में हेय के दृष्टि से देखे जाते थे। पं. सुन्दर लाला शर्मा ने उन्हें ऊपर उठाने का कार्य किया, सन् 1917 से प्रारंभ किया था। अर्थात् गांधी जी के 9 वर्ष पूर्व ही शर्मा जी ने इस क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। स्व. शर्मा जी गांधी जी के अग्रगण्य गुरू थे। ऐसा स्वंय गांधी जी स्वीकारा है।[4]

छत्तीसगढ़ में यह कार्य सफलता पूर्वक संचालित होता रहा। शर्मा जी ने सतनामियों की उन्नति और जागृति के लिये जो कार्य किये हैं वे अद्भुत हैं।[5] हरिजनों के उत्थान और संगठन के लिये गांव–गांव धूमकर हरिजनों की हीन भावना दूर करने के लिये उन्हें जनेऊ पहनाया इस सुधार कार्य में शर्मा जी को जातियों का अपमान पूर्ण व्यवहार सहना पड़ा। राजीव लोचन मंदिर में हरिजनों का प्रवेश का लेकर रूढ़िवादी पड़ितों का कोपभाजन होना पड़ा।

यद्यपि कांग्रेस सरकार ने मंदिर प्रवेश का स्वतंत्रता मिलने के बाद किया, किन्तु वही कार्य शर्मा जी ने सन् 1925 के आसपास प्रारंभ कर दिये थे। पं. रविशंकर

शुक्ल राजीव लोचन ट्रस्ट कमेटी के मंत्री थे, तथा अध्यक्ष राजिम निवासी केदार नाथ मिश्र थे। शर्मा जी ने अक्टूबर 1925 को नोटिस दे दी कि वो भोई जाति के लोगों को लेकर मंदिर प्रवेश करेंगें चूंकि इस जाति के लिये एंव अन्य जातियों के लिये मंदिर प्रवेश मनाही थीं। इस लिये ट्रस्ट कमेटी में आवश्यक बैठक हुई तथा निर्णय दिया गया कि मंदिर प्रवेश की अनुमति न दी जावे शर्मा जी पर उक्त निर्णय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे भोई जाति के लोगों को लेकर मंदिर के द्वार पर खड़े हो गये परंतु केदार नाथ मिश्र ने सशस्त्र पुलिस, मजिस्ट्रेट, कप्तान आदि की सहायता से उनकी प्रवेश करने से रोक दिया। मिश्र जी जो विचार से उनकी सतनामी तथा शर्मा जी के निकटतम संबंधी थे। विद्रोह की आग को कब तक दबाया जा सकता हैं, वह तो अग्नि की ज्वाला निकालेगी ही। शर्मा जी ने इन भोई जातियों के अतिरिक्त और भी अन्य अस्पृश्य जातियॉ जो छत्तीसगढ़ में रहते हैं, उनके उद्धार के लिये शर्मा जी ने अथक परिश्रम किया था।[6]

अछूतोद्धार कर्ता के रूप में शर्मा जी का नाम अग्रगण्य था। दर्रेशा, डोंगरगढ़, बिलासपुर, रायगढ़, जबलपुर आदि स्थानों के अछूत ने उन्हें अपने मार्ग दर्शन के लिये अपनाया, कुछ लोग तो इन्हें अपना नेता मानने लगे। गांधी जी उनके इस ठोस कार्य के कारण उनकी प्रशंसा करने लगे। शर्मा जी सतनामियों के घर,जाकर उनसे मिलते थे, उन्हें ईश्वर की आराधना सत्यनिष्ठा से करना, मांसाहार त्याग, नशीली वस्तुओं के त्याग प्राणीमात्र पर और सत्य बोलने का संदेश दिया करते थे। उनके घर में उनका दिया हुआ दूध निःसकोच किया करते थे। सतनामियों के घर में "सत्य नारायण की कथा" कहने के लिये अपने सहयोगियों के बीच से ही प्रगतिशील पौरणिक भी तैयार कर लेते थे। इन सबके बदले शर्माजी को अपने सामाजिक संबंधों का बलिदान कर देना पड़ा। समाज ने उसे बहिष्कृत कर दिया, किन्तु शर्मा जी कठिनाइयों के बावजूद अपने सिंद्धातों के सहारे अडिग रहे कभी भी अपने पथ से विचलित नहीं हुये। शर्मा जी के प्रभाव के परिणाम स्वरूप सतनामी समाज के धर्मगुरु ने बहुत ही व्यापक समाज सुधार का आंदोलन प्रारंभ कर दिया। सतनामी समाज के समाज सुधारक अगमदास गुणवसियों एवं राज महंत नैनदास महिलांग आगे आये।[7]

महंत नैनदासने शर्माजी के संपर्क में जाकर अपने समाज के लोगों को आदेश दिया कि शराब व मादक वस्तुओं का सेवन बंद करें। राजनांदगांव के श्री छबिराम चौबे ने छुआछूत के विरोध में 21 दिनों का उपवास किया जो उल्लेखनीय हैं। सतनामी समाज की पवित्रता को देखकर इन्हें द्विज का अधिकार देने के लिए 1917 में जनेऊ संस्कार का आयोजन किया गया जिसका समर्थन 1942 में कानपुर के कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गाधी बैरिस्टर भुंजे, मदन मोहन मालवीय, स्वामी ब्रम्हानंद आदि ने की और उस दिन से सतनामी समाज ने जनेऊ धारण किया। जिसे कायम रखने के लिये इस समाज को बहुत बलिदान करना पड़ा।[8]

सन् 1924 में राजिम में सतनामी आश्रम की स्थापना की थी, रायपुर स्थित हरिजन छात्रावास, हरिजन पुत्री स्कूल अनाथालय आदि का आरंभिक आंदोलन पं. सुंदरलाल शर्मा ने ही किया। भोला कुर्मी छात्रावास की स्थापना शर्मा जी ने किया। ब्रम्हचर्य, आश्रम राजिम, संस्कृत विद्यालय राजिम, हिन्दू अनाथालय रायपुर, सर गंगाराम विधवा आश्रम रायपुर इन संस्थाओं के अध्यक्ष भी रहे है। शर्मा जी के नेतृत्व में अनाथालय के संचानल हेतु सन् 1925 में छत्तीसगढ़ के अनेक ग्रामों में खाली हडिया टांगी गई थी। गृहस्थ लोगो से अनुरोध किया गया था कि प्रति दिन वो मुट्ठी भर चांवल बचत कर उक्त हंडी में छोड दिया करें। गांव भर से चांवल संचय हो जाने पर उसे अनाथालय के उपयोग में लाया जाता था। उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त मोतीराम संस्कृत पाठशाला धमतरी, पं. मन्नूलाल मेमोरियल पब्लिक लायब्रेरी राजिम का भी निर्माण शर्माजी के प्रयासों से ही हुआ। शर्माजी ने अपने अभिन्न मित्र की स्मृति में राजिम में वाचनालय की स्थापना की। शर्माजी के अनुयायियों में इसी वाचनालय का नाम अब पं. सुन्दर लाल शर्मा

वाचनालय रख दिया है।

शर्माजी ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार के लिए अपनी के लिए अपनी संपत्ति लगाकर राजिम, धमतरी तथा रायपुर में दुकानें खोलीं और उनका संचालन किया। उनके इस कार्य में उनके मित्र श्री नारायण राव मेघावाले भी थे परन्तु व्यावसायिक दृष्टि से ये दुकाने अधिक दिनों तक चल नहीं सकी और अंत में उठाना पड़ा। इस घाटें की पूर्ति के लिये शर्मा जी को अपना चन्द्र–सूर और नारायण राव मेद्यावाले को अपना गांव मुचनाइन बेचना पड़ा। स्वदेशी वस्तुओं का इतना अधिक प्रचार करने वाले बहुत कम व्यक्ति मिलते हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ में सर्वप्रथम राइस मिल की स्थापना भी की थी। उसका नाम था "लुटुराम" जियालाल राइस हॉलर एण्ड लोर मिल वर्क्स" नयापारा राजिम।

शर्माजी ने अन्य समाज की तरह ब्राम्हण समाज में भी कुछ परिवतन करना चाहा। ब्राम्हणों के सुधार की जिम्मेदारी भी वे अपने कंधे पर लिये। ब्राम्हण समाज में व्याप्त कुरीतियों को वे जड़ से उखाड़ फेकना चाहते थे। विवाह, मृत्यु आदि के आधार पर फैली बुराइयों को दूर करने के लिये संगठित प्रयास के फलस्वरुप उन्हें पग–पग पर विरोध का सामना करना पड़ा। विवाह, व्रतबंध मृत्युभोज पर अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करना वे हमारे देश की कुरीति मानते थे। उनका कहना था कि ब्राम्हण साहूकार से कर्ज लेकर विवाह, मृत्यु और व्रतबंध मे अनावश्यक खर्च करता है जिससे एक दिन उस साहूकार के चंगुल में फंसा रहता है और उसी तरह वह अपनी पूंजी उसके हाथों समर्पण कर देता है। इस धारणा को बदलने के मृत्युभोज से ही पीढ़ी तरण हीती है, के लिये बैठक में विचार किये जाने लगे। इन कुरीतियों को दूर करने के लिये उपाय सोच जाने लगे और अन्य समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाने लगा।[9]

शर्माजी को ब्राम्हण समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में सफलता भी प्राप्त हुई मृत्यु के समय तेरहवी बंद करने में इनका महत्वपूर्ण प्रभाव था, विवाह के समय प्रचलित बड़ा–बड़ा का फिजूल खर्च बंद ही कर दिये। शर्माजी ने अपनी रचना "ब्राम्हण गीतावली" में इन समस्त बातों एवं अनावश्यक खर्च किये जाने वाले कार्यो का वर्णन किया है। ब्राम्हण समाज की भी स्थापना भी की थी, सामूहिक व्रतबंध शर्माजी ने ही चलाया था। कन्या शिक्षा के वे प्रबल समर्थक थे, वे वर–कन्याओं की पूरी सूची तैयार करके रखते थे। उन दिनों बहुत सारी कुप्रथा भी हमारे समाज में व्याप्त थी जैसे–बाल विवाह, बेमेल विवाह, सती प्रथा, आदि। बाल विवाह रोकने हेतु शारदा बिल एक्ट बनाया गया था। उसमें शर्माजी का योगदान था। अपनी प्रतिभा के बलपर उन्होने बेमेल–विवाह को रोकने हेतु एक नाटक की रचना की। शर्माजी स्वयं अपने इस नाटक "बुढ़वा मंगल" कर मंचन करते थे। उन दिनों यह नाटक बहुत लोकप्रिय हुआ और छत्तीसगढ़ के अनेक गांव में यह खेला जाने लगा। बेमेल –विवाह का वह रूप जिसमें 9–10 साल की कन्या का विवाह 70 साल के बुढ्ढे से किया जाता है और उसका परिणाम बाल विधवा, आत्म हत्या आदि दिखाकर लोगों के मन मे बेमेल विवाह की बात समाप्त करने में बहुत हद तक सफल हुये। फलस्वरुप सती प्रथा भी बंद सी हो गयी। दहेज प्रथा का भी विरोध शर्माजी ने किया।

शर्माजी के नेतृत्व मे छत्तीसगढ़ में 1917 से गोवध बंद करों आंदोलन प्रारंभ हो गया था। महंत नैनदास और मदन ठेठवार ने भी इसका नेतृत्व किया।

छत्तीसगढ़ में अनाथों एवं अछूतों की सहायता कर शर्माजी ने बढ़ते हुये ईसाई धर्मातंरण को तीव्र गति से रोका। यदि उन्होनें यह कार्य न किया होता तो छत्तीसगढ़ के अधिकांश अछूत तथा अनाथ संभवतः दूसरे धर्म के हो जाते। धमतरी और बिलासपुर क्षेत्र में आदिवासी एवं छोटी जाति के इसाई मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तन का शर्माजी ने संगठित विरोध किया। इस काम में उन्हें श्री नारायण राव मेघावाले, नत्थू जगताप, छोटेलाल बाबू गिरधारी लाल पुरोहित इन सज्जनों ने सहयोग दिया। एक स्वामी अग्निदेव भी इस कार्य में लगे हुये थे। धमतरी कोल पुरोहित इन सज्जनों ने सहयोग दिया। एक स्वामी अग्निदेव भी इस कार्य में

लगे हुये थे। धमतरी के आसपास के अनेक हिन्दू जो ईसाई तथा मुसलमान हो गये थे उनहे वैदिक मंत्री द्वारा शुद्धता दी गई एवं पुनः हिन्दू बनाया गया। ऐसे बहुत से अभिलेख एवं पत्र है जिनमें यह पता चलता है कि वे शर्माजी ने लोगो को धर्म परिवर्तन से रोका था।

चरखा और तकली का कोई महत्व आज भले ही न हो किन्तु सन् 1920 और 1930 के बीच राष्ट्रीय आंदोलन के कारण उसका बहुत महत्व था चरखा प्रचार के कार्य को संगठित करना एक कठिन काम था किन्तु पं. सुन्दरलाल शर्मा ने समस्त छत्तीसगढ़ में चरखा प्रचार के लिये कार्यकताओं का जाल सा बिछा दिया। खादी और गाँधी की पहुँच छत्तीसगढ़ के घर–घर में हुई। चरखा द्वारा काता गया सूत अनेक गाँवों से एकत्रित किया जाता था फिर स्वदेशी दुकानों में बिक्री के लिये लाया जाता था। शर्माजी का यह प्रभाव छत्तीसगढ़ तक ही नहीं वरन् सागर जबलपुर मंडला, नागपुर उड़ीसा का कालाहांडी क्षेत्र तथा पुराने रजवाड़ों के क्षेत्र भी प्रभावित हुये।[10]

गाँधीवाद को प्रोत्साहन देने के लिये रायपुर में पं. सुन्दरलाल शर्मा स्व. पं. रविशंकर शुक्ल बिलासपुर में बैरिस्टर, स्व. छेदीलाल, दुर्ग में पं. रत्नाकर जैसे नेता मिले गये और उन्होने जन जीवन में गाधीवाद को ऐसा प्रतिष्ठित किया कि अन्य वाद अभी तक छत्तीसगढ़ में ठीक से नही पनप सके।[11]

शर्माजी ने अजादी की चाह उत्पन्न करने के लिये प्रयास किया। सन् 1921 में गाँधी जी अब प्रथम बार रायपुर आये तो शर्माजी के बार–बार आग्रह करने पर आये थे। शर्माजी स्वयं उन्हें लाये थे। रायपुर स्टेशन पर गाधीजी का भव्य स्वागत हुआ। उनमें पं. रविशंकर शुक्ल ठाकुर प्यारेलाल सिंह, पं. सखाराम दुबे, वामनराव जी लाखे आदि उपस्थित थे। गाधी जी ने जिस मैदान में उस दिन भाषण दिया उसी दिन से उसका नाम गाँधी चौक हो गया। भाषण का मुख्य विषय देश की स्वतंत्रता, एकता और सत्याग्रह थे। उन्होंने कहा कि "ध्येय जितना मूल्यवान होने चाहिये। स्वतंत्रता को यदि हम प्राणपण से चाहेगें तो उसका मिलन निश्चित है।[12]

शर्माजी गाँधी जी को लाने 2 दिसम्बर 1920 को कलकत्ता गये थे परंतु वहाँ उनकी भेट नही हो सकी। परंतु धमतरी तहसील के कण्डेल गांव के नहर सत्याग्रह का पूर्ण परिचय कराकर धमतरी लाने में सफल रहे।[13]

गाँधीजी जब प्रथम बार रायपुर आये तब कुरुद धमतरी और रायपुर मे आम सभाओं को संबोधित किया। समस्त कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के साथ ही सतनामी आश्रम से भी भेंट की जिसकी स्थापना पं. सुन्दर लाल शर्मा राजिम वाले की प्रेरणा तथा प्रयत्न में संभव हुयी। शर्माजी ने छत्तीसगढ़ में सतनामियों को ऊपर उठाने में कोई कसर नहीं रखी थी। जिसे देखकर गाँधीजी के मुख से यह शब्द निकला कि "हरिजनों के उद्धार विषय ़ कार्य में पं. सुन्दरलाल शर्मा राजिम वाले मेरे दो वर्ष बड़े है। जिन्होने देश के महत्वपूर्ण कार्य को मेरे इस मिशन के पूर्व सम्पादित कर संचालित करने में एक आदर्श उपस्थित किया।[14]

गाँधीजी ने हरिजन उद्धार के संदर्भ में स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा को अपना गुरु निरुपित किया क्योंकि यह कार्य शर्माजी ने पहले ही शुरु कर दिया था। शर्माजी रायपुर जिले के राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम जेल यात्री थे। जेल उन्होने अनेक यातनायें सही। एक बार उन्होने जेल में अनशन प्रारंभ कर दिया जेलर ने उन्हें रबर की नली द्वारा जबरदस्ती दूध पिलाया फलस्वरुप उनके मुंह से रक्तस्त्राव होने लगा। सन् 1921 में जेल से छूटकर जाने के पश्चात् रायपुर की जनता ने उनका भव्य स्वागत किया।[15]

सन् 1905 में बंग–भंग के कारण देश व्यापी आंदोलन हुआ, तब शर्माजी सक्रिय रुप से राजनीति के क्षेत्र में कुद पड़े। उन्होनें इस क्षेत्र में जन सभाओं एवं भाषणों के द्वारा राजनीतिक जागरण का कार्यारंभ कर दिया। सन् 1908 में शर्माजी सूरत कांग्रेस में सम्मिलित हुये और लौटकर देश की दिन–रात सेवा और जन जागरण के कार्यों में लग गये। उस समय छत्तीसगढ़

में शर्मा के अन्य सहयोगी नेता श्री नारायण रावजी मेघावले, एवं श्री नत्थू जगताप थे।[16]

बाद में ठाकुर प्यारेलाल सिंह, छोटेलाल बाबू, रतनलालजी, महंत लक्ष्मीनारायण दास, डॉ. खूबचंद बघेल जैसे कर्मठ नेताओं का तभी सहयोग प्राप्त हुआ और छत्तीसगढ़ में स्वातंत्रय आंदोलन की गति निरंतर तीव्र होती चली गई।[17]

गाँधीजी ने देश की सामयिक परिस्थितियों का सुंदर चित्रण किया जिसमें कंडेल गाँव के नहर सत्याग्रह तथा उसके प्रेरक पं. सुन्दरलालजी शर्मा, श्री नारायण रावजी मेघावाले, श्री नत्थूजी जगताप तथा श्री छोटेलाल बाबू आदि को संबोधित करते हुये कहा कि अन्याय तथा अत्याचार का सामना संगठन, दृढ़ता तथा सत्यता के साथ सतत् अहिंसात्मक तथा शांतिमय का अवलम्बन करने से ही देश की उन्नति सन्निहित हैं।[18]

सन् 1921 में गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन की घोषणा कर दी रायपुर जिले में इस आंदोलन का नेतृत्व पं. सुन्दरलाल शर्मा ने किया और इसी आंदोलन के सिलसिले में उन्हें तथा उनके अन्य साथी पं. नारायण राव मेघावले, अब्दुल रउफ खाँ, भगवती प्रसाद मिश्र को जेल की सजायें भुगतनी पड़ीं।

सन् 1920 के असहयोग आंदोलन के प्रथम सत्याग्रही के रुप में जो पांच व्यक्ति जेल में गये थे उनमें से एक पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। 1920 से 1932 के बीच उन्हें कई बार जेल की यात्रायें पड़ी।

मार्च 1923 में जब शर्माजी जेल से छूटकर जब राजिम आये तो वहां के वासियों द्वारा उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया। राजिम की जनता ने उन्हें रथ पर बिठाया और अपने हाथों से खींचते हुये विशाल जुलुस के रूप में उन्हें नगर का भ्रमण कराया। फूलों की माला के जगह नोटो की माला से उनका स्वागत किया। जेल से छूटते ही शर्माजी और उनके साथ पुनः नागपुर झंड़ा सत्याग्रह के कार्यो में संलग्न हो गये। सत्याग्रहियों के रेल पर सवार होने से अंग्रेज शासन ने प्रतिबंध लगाया तब सत्याग्रही सैकडों की संख्या में पैदल ही नागपुर चल पड़े।[19]

सन् 1933 में गाँधीजी का पुर्नगमन हुआ उस समय गाँधीजी ने अपना प्रमुख लक्ष्य हरिजन को बनाया था। इसी दौरे में रायपुर के पुरानी बस्ती स्थित एक नया मंदिर हरिजनों के लिए खोला दिया गया। गांधीजी स्वंय हरिजनों को लेकर इस मंदिर मे प्रवेश किया। दुर्भाग्य यह है कि यह मंदिर आज उपेक्षित पड़ा है किन्तु हरिजनों के प्रति जनता के दृष्टिकोण मे अवश्य ही परिवर्तन आया। गांधीजी के दौरे के पूर्व पं. सुन्दर लाल शर्मा के नेतृत्व में हरिजन उद्धार का कार्य 1918 में ही आरंभ कर दिया था। शर्माजी के इस कार्य की सराहना स्वयं गांधीजी ने की थी।[20]

पं. सुन्दर लाल शर्मा के जीवन के दो महत्वपूर्ण उद्धेश्य थे–

1. देश को पराधीनता से मुक्त कराना।
2. छत्तीसगढ़ को सर्वागीण उन्नति करना।

डॉ. खूबचंद बघेल छत्तीसगढ़ के उन्नायकों में तीन महान संत पुरुषों का उल्लेख करते थे। गुरु घासीदास, पं. सुन्दरलाल शर्मा तथा त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारे लाल सिंह।

स्व. शर्माजी ने साहित्यिक क्षेत्र में "दुलरुवा" नामक पत्रिका निकलवाई और प्रत्येक गांव को स्वावलंबी गांव बनाने के लिये एक बार पुनः शक्ति बटोरेने का प्रयत्न करने लगे। इसके पूर्व अपनी सारी आक्रोश को जनहित के लिये शंकरजी की तरह वो गरल बनाकर पी गये। वे राजीव लोचन को काशी विद्यापीठ की तरह परिवर्तित करना चाहते थे। इस कार्य में पं. रविशंकर शुक्ल ने पूर्ण सहयोग देने का वचचन दिया था। राजीव लोचन में सांस्कृतिक क्रांति का शंखनाद फूलने की तैयारी कर अपनी जीर्ण–शीर्ण आर्थिक और सामाजिक सुधार के आंदोलन में अपनी सर्वस्व खो चुके थे। कांकेर रियासत के 12 गांव और धमतरी तहसील के 3 गाँव बिक चुके थे। थोड़ी सी जमीन चमसूर में वह भी साहूकार मित्रों के रहन में डूब गया। बगीचे उजड़ गये, मिल बिक गये बच्चों की पढ़ाई छूट गयी थी। उनके नीलमणी नामक विद्वान पुत्र दिवंगत हो गये सहयोगी पत्नी दिवंगत हो चुकी थी।[21]

कुष्ट सेवी संत का शरीर कुष्ट रोग से पीडित हो गया था। सफेद दाग पूरे शरीर में छा गये थे, फिर भी नये उत्साह से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जागरण के लिये प्रांगण में कूद पड़े थे। इस समय तक देश मे राष्ट्रीय आंदोलन की हलचल पुनः प्रारंभ हो चुकी थी।[22]

पं. सुन्दर लाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय चेतना तब जागृत किया, जब स्व. रविशंकर शुक्ल और अन्य नेता रंगमंच पर नहीं आये थे। अनेक प्रयत्नों से अखिल भारतीय नेता रायपुर आते रहे एवं जनता में आजादी की भावना का प्रसार होता रहा। आज भी शर्माजी के अनेक सहयोगी जीवित है, तथा उनके बारे में अनेक अचरज भरी बातें सुनाया करते है।

देश और समाज के लिए बहुत कुछ कर जाने की तीव्र बैचेनी लिए शर्माजी निरन्तर विपरीत परिस्थितियों से जूझते रहे। उनमें अदभुत आग थी, प्रखर ऊर्जा थी और थी उनमें अकूत कर्मशक्ति। इस जर्जर होते हुये शरीर से भी वे विदेशी शक्ति से निरन्तर संघर्ष करते रहे।[23]

शर्माजी ने मृत्यु के पूर्व रुसो की तरह लगभग "गो बैक टू नेचर" वाला सिद्धांत अपना लिया था। चंद्रसुर स्थित अपनी अट्टालिका का त्याग कर महानदी के पवित्र तट पर एक पर्णकुटी बनवा ली थी एवं वहीं निवास करते थे। उनके सहयोगी तथा स्नेही जब इस पर्णकुटी में आकर मिलते थे। स्वतंत्रता संग्राम के इस छत्तीसगढ़ी महारथ, अंग्रेजी शासन से निरंतर संघर्ष करते हुये पौष अमावस्या को ही सन् 1940 में ब्रम्हलीन हो गये।

ब्रम्हलीन होने से पूर्व इस अंचल के लोगों के मन में उन्होंने अपने लिए एक आदर और संभ्रम का स्थान बना लिया था। अपूर्व त्याग, सतत कर्मण्यता और जनसेवा एवं देशसेवा के कारण इस क्षेत्र के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता के रुप में पं. सुन्दर लाल शर्मा की पहचान बन चुकी थी। पं. सुन्दर लाल शर्मा जी छत्तीसगढ़ में नवीन सामाजिक चेतना और नवीन जग जागरण के अग्रदूत भी थे और वैतालिक भी।

संदर्भ–ग्रंथ :

1. श्री प्रेमशंकर शास्त्री–निजी संस्करण–18/92.
2. हरि ठाकुर–छत्तीसगढ़ के रत्न–कर्मवीर पं. सुन्दर लाल शर्मा पृ. 34–35, 1971.
3. श्री हरि ठाकुर –छत्तीसगढ़ के रत्न कर्मवीर पं शर्मा पृ. 34–35 सन् 1971.
4. भुवन लाल मिश्रा–"शताब्दी जयंती समारोह" छ. ग. के गाँधी स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा 1981.
5 मंहत लक्ष्मीनारायण दास –एक संस्मरण 17/3/78.
6. भुवन लाल मिश्र–"छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय ओदोलन के सूत्रधार" पृ 4,9 सन् 1967.
7. हरि ठाकुर छत्तीसगढ़ में गांधी–छत्तीसगढ़ में गाँधी जी के व्यक्तितत्व का प्रभ व पृ. 4
8. श्री केयूर भूषण मिश्र–एक संस्मरण 5/4/78.
9. भुवन लाल मिश्र–छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्राधार पृ. 4,9 सन् 1967
10. भुवन लाल मिश्र–छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्राधार पृ. 4,9 सन् 1967
11. श्री केयूरभूषण मिश्र–एक संस्मरण 3/4/278
12. श्री रामशरण तम्बोली छ.ग. में गाँधी "जब ताले का आंतक भी विपल हुआ हो गया" 34 रविशंकर में प्रकाशन
13. श्री हरि ठाकुर–स्वाधीनता आंदोलन में रायपुर नगर का योगदान पृ. 3 नगर पालिका निगम रायपुर वार्षिक विवरण1971–72.
14. श्री भुवन लाल मिश्रा "छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्राधार पृ. 8, 1967
15. डॉ. शोभाराम देवांगन–छ. ग. में गाँधी सतनामी शिष्ट मंडल के बीच पृ. 44 पं. रविशंकर से प्रकाशन 1970
16. श्रीमती एस. मिश्रा छ. ग. राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्राधार पृ. 9 सन् 1967.

17. श्री हरि ठाकुर–छत्तीसगढ़ के रत्न कर्मवीर पं. सुन्दर लाल शर्मा पृ. 34
18. श्रीमती प्रकाश वती मिश्रा–छ. ग. में गाँधी मेरी राष्ट्रीय चेतना के प्रणेता पृंत्र 85 पं. रविशंकर प्रकाशन 1970
19. डॉ. शोभाराम देवांगन–छ.ग. मे गाँधी "धमतरी में गाँधीजी" पृ. 42 पं. रविशंकर मे प्रकाशन 1970
20. श्री हरि ठाकुर छ. ग. के रत्न "कर्मवीर पं. सुन्दर लाल शर्मा पृ. 37–38.
21. श्री हरि ठाकुर "सवाधीनता आंदोलन में रायपुर नगर का योगदान" पृ.43–50
22. छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय जागरण में धमतरी तहसील का योगदान 1976–77
23. श्री महंत लक्ष्मीनारायण दास एक संस्मरण 17/3/78

■ एन 8, दौलत स्टेट,
डंगनिया, रायपुर (छ . ग)

पं. सुन्दरलाल शर्मा एवं अन्य का दुर्लभ चित्र

छत्तीसगढ़ के स्वप्नदर्शी : पं. सुन्दरलाल शर्मा

• डॉ. गोधूलि दुबे

छत्तीसगढ़ के प्रेरणा के स्रोत है-कर्मवीर पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा'। छत्तीसगढ़ के अछूतोद्धार और स्वदेशी का प्रचार का कार्य पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा ने उस समय किया जब गाँधी जी ने भारतीय राजनीति में प्रवेश नहीं किया था। सामाजिक अवरोधों के बावजूद पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा ने दलितोद्धार के कार्य में अपना जीवन खपा दिया। सन् 1920 के स्वराज्य आंदोलन में जेल जाने वाले छत्तीसगढ़ के वे प्रथम पुरुष थे। देश-सेवा और त्याग की वे महान प्रतिभा थे। छत्तीसगढ़ साहित्य निर्माण के वे प्रथम प्रणेता थे और स्वयं छत्तीसगढ़ी के प्रथम कवि थे। पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा जी ने हमें-'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का मंत्र दिया'।[1]

छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता-आंदोलन, समाज-सुधार आंदोलन और साहित्य-सेवा तीनों एक साथ पूरी समग्रता के साथ करने वाले तपस्वियों में पं. सुन्दरलाल शर्मा सबसे अग्रणी रहे। छत्तीसगढ़ी साहित्य के नींव-स्तंभों में वे सबसे अग्रणी है। 'छत्तीसगढ़ दानलीला' उनकी महत्वपूर्ण कृति है। यह छत्तीसगढ़ी का प्रथम प्रबंध काव्य है। इस प्रबंध-काव्य के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन समाज को जागरूक किया।

पं. सुन्दरलाल शर्मा राजनीति में सन् 1905-06 में सक्रिय हुए। उसके पूर्व वे पूर्णतः साहित्य को समर्पित थे। सन् 1900 के पूर्व राजिम साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र था। साहित्य-सृजन को गतिशील बनाने के उद्देश्य से शर्मा जी ने राजिम में -'कवि समाज' नामक संस्था की स्थापना की। शर्मा जी उक्त समिति के महामंत्री थे।

पं. सुन्दरलाल शर्मा जी ने अनेक ग्रंथों को प्रणयन किया। छत्तीसगढ़ी में लिखी रचना-'दानलीला' अपनी गुणवत्ता के कारण इस अंचल की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना मानी जाती है। इस ग्रंथ में छत्तीसगढ़ी की ग्राम्य-संस्कृति पर आधारित कृष्ण-चरित्र का सुंदर वर्णन किया गया है। इसी प्रकार रामकथा को लेकर उन्होंनें 'छत्तीसगढ़ी रामायण' का सृजन किया। छत्तीसगढ़ी भाषा के उपर्युक्त दोनों काव्य उत्कृष्ट कोटि के ग्रंथ है। 'इसके साथ ही शर्मा जी ने निम्नलिखित ग्रंथों की रचना की –

1. काव्यामृत वर्णिनी- काव्य
2. राजिव प्रेम पियुष- काव्य
3. सीता परिणय- नाटक
4. पार्वती परिणय- नाटक
5. प्रहलाद चरित्र- नाटक
6. ध्रुव आख्यान- नाटक
7. करुणा पच्चीसी- नाटक
8. श्रीकृष्ण जन्म-काव्य
9. सच्चा सरदार- उपन्यास
10. विक्रम शशिकला- नाटक
11. कंस-वध- काव्य खंड
12. एडवर्ड राज्यभिषेक
13. विक्टोरिया वियोग
14. राजीव स्रोत महात्म
15. स्फूट पद्य-संग्रह
16. स्वकृतिभजन-संग्रह
17. रघुराज गुण कीर्तन
18. प्रलाप पदावली।'[2]

पं. सुन्दरलाल शर्मा अपने नाटकों का मंचन अपने निर्देशन में कराया करते थे। उन्होंने 'दुलरुवा' नामक छत्तीसगढ़ी पत्रिका का भी संचालन किया। उनके साहित्यिक मित्रों में श्री लक्ष्मीधर जी बाजपेयी, श्रीमाखन लाल चतुर्वेदी, श्री जगन्नाथ प्रसाद भानु, पं. लोचन प्रसाद पांडेय एवं स्वामी सत्यदेव परिव्राजक प्रमुख थे।

सन् 1924 में सतनामी आश्रम, हरिजन छात्रावास,

हरिजन पुत्री स्कूल, अनाथालय आदि की स्थापना पं. सुन्दरलाल शर्मा ने ही किया। स्वर्गीय महंत लक्ष्मीनारायण दास ने इन संस्थाओं के विकास में सहयोग दिया।

स्वदेशी प्रचार की दृष्टि से शर्मा जी ने पूरे छत्तीसगढ़ चरखा प्रचार के काम के लिए कार्यकर्ताओं का जाल-सा बिछा दिया। खादी और गाँधी की पहुँच छत्तीसगढ़ के घर-घर में हुई। चरखा द्वारा अनेक गाँवों में काता गया सूत एकत्रित कर स्वदेशी दुकान में बिक्री के लिए लाया जाता था। इस क्षेत्र में शर्मा जी का प्रभाव छत्तीसगढ़ के अतिरिक्त सागर, जबलपुर, मंडल, नागपुर, उड़ीसा का कालाहांडी क्षेत्र एवं पुराने रजवाड़ों पर भी पड़ा।

'सन् 1922 में जेल-यात्रा के समय पं. सुन्दरलाल शर्मा ने जेल में एक कविता लिखी, जो देश-भक्त दीवानों की भावना का चित्रण करती है-'

यह भारत जो लौ नहीं फिर स्वंत्र हो जाय।
चाहे मर मिट जाइये, मत बैठिबे थिराये॥
तनबल, जनबल, बुद्धिबल, यह जीवन अऊ प्राण।
भारत माँ के चरण में करे रोजे बलिदान॥
जो लौ रंग में शांति है, तन में जो लो प्राण।
सोबत जागत रैन दिन, रहे देश का ध्यान॥
भारत कीरत ध्वजा, जग में फहराय।
रामराज सतयुग बहुरि फिर एक बार दिखाय॥"[3]

इतिहासकारों के अनुसार पं. सुन्दरलाल शर्मा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संचेनता के संग्राहक थे। वे अद्भुत साहसी एवं त्यागी जननेता थे, जिन्होंने अपना सर्वत्र देशहित में अर्पण कर दिया। गुरु घासीदास के सामाजिक न्यायपूर्ण मानवतावादी दृष्टिकोण, वीर नारायण सिंह के अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष एवं त्याग की भावना तथा तिलक की दृढ़ता को आत्मसात कर छत्तीसगढ़ में अंग्रेजी राज के विरुद्ध संघर्ष किया। छत्तीसगढ़ का हित-चिंतन उनका सहज भाव था। वे एक कुशल चित्रकार, कोमल हृदय कवि एवं उग्र विचारक साहित्यकार थे। वे मानवतावादी सही ईमानदार छत्तीसगढ़ के युगद्रष्टा महापुरुष थे, जिन्होंने मजदूर, किसानों, सदियों से शोषित समाज को उत्थान एवं सामाजिक समानता तथा न्याय की दृष्टि से जागृत किया। कंडेल नहर सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, स्वराज जागृति, सविनय अवज्ञा आंदोलन में उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही। इटली के महान देश-भक्त 'गेरीबाल्डी' की तरह पदमोह त्याग कर पं. सुन्दरलाल जी शर्मा अपने को पद से हमेशा मुक्त रखा और कृषि-कार्य करते हुए जीवन के अंतिम क्षणों में अपने को महानदी की घाटी की माटी में समर्पित कर दिया।

राजिम छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाता है। पवित्र चित्रोत्पला नदी के किनारे चमसूर गाँव में पौष अमावस्या संवत् 1938 अर्थात् 21 दिसंबर 1881 को एक दिव्य आत्मा का अवतरण हुआ। शस्य श्यामल धरतीर की कोख उस दिव्य आत्मा को जन्म देकर धन्य हो गई। इसी दिव्य आत्मा की भौतिक पहचान पं. सुन्दरलाल शर्मा के रूप में बनी। पं. सुन्दरलाल शर्मा के पिता का नाम श्री जियालाल तिवारी था। पं. जियालाल तिवारी तत्कालीन कांकेर रियासत में वकील थे।

कानून के अच्छे जानकारी के रूप में उनके प्रतिष्ठा थ। पं. जियालाल तिवारी साहित्य-सृजन के क्षेत्र में भी दखल रखते थे। बालक संदर लाल की प्रारंभिक और औपचारिक शिक्षा मात्र प्रायमरी तक ही थी, किन्तु प्रतिभा औचारिक शिक्षा मात्र प्रायमरी, तक नहीं थी, किन्तु प्रतिभा औचारिक शिक्षा की गुलाम नहीं हुआ करती। शर्मा जी को बहुभाषा का ज्ञान था। संस्कृत, उड़िया, बंगाल, मराठी, उर्दू एवं गुजराती आदि भाषाओं पर उनका अधिकार था। उन्हें अपने घरू परिवेश से ही साहित्य का संस्कार प्राप्त हुआ था। राजिम के सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश ने उनके कवि, नाटककर, चित्रकार, मूर्तिकार की सोई प्रतिभा को विकसित होने के लिए अनुकूल स्थितियाँ दी।

छत्तीसगढ़ के सामाजिक जागरण की दिशा में की गई उनकी पहल महत्वपूर्ण रही है। गाँधीजी के हरिजनों द्वारा कार्यक्रम के बहुत पहले ही छत्तीसगढ़ में इस कार्यक्रम क एक निश्चित पहल पं. सुन्दरलाल शर्मा के द्वारा की जा चुकी थी। इस अंचल की सतनामी जाति की जागृति एवं उन्नति के लिए सुन्दरलाल शर्मा के कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन

के कार्यों का लेखा-जोखा हरिठाकुर के शब्दों - 'हरिजन के उत्थान एवं संगठन के लिए गाँव-गाँव घूमकर हरिजनों की हीन-भावना दूर करने के लिए उन्हें जनेऊ पहनाने का कार्य अपनाया। इसी प्रकार राजीव लोचन मंदिर में हरिजनों के प्रवेश को लेकर रूढ़िवाद पंडितों का कोपभाजन भी उन्हें बनना पड़ा था।'[4]

पं. सुन्दरलाल शर्मा देश के समाज सुधारकों के मध्य निःसंदेह महत्वपूर्ण स्थान पाने के हकदार हैं । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने समाज को एक नई दिशा दी है । वे अच्छे चित्रकार थे, प्रकृति प्रदत्त पुष्पों से भी वे चित्रांकन करते थे । उनकी परिकल्पनाओं ने छत्तीसगढ़ की सामाजिक जागृति को ऐसा चित्रित किया है कि जब तक सृष्टि है, उनके कार्य अमर रहेंगे ।

संदर्भ-सूची :

1. छत्तीसगढ़ भ्रातृ संघ की भूमिका स्पष्ट करते हुए डॉ. खूबचंद बघेल के भाषण का अंश ।
2. रचनाकार पं. सुन्दरलाल शर्मा : रामस्वरूप शर्मा (छत्तीसगढ़ में जन संचेतना के संवाहक - पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा), छत्तीसगढ़ जनसंपर्क संचालनालय द्वारा प्रकाशित ग्रंथ, रायपुर पृ. 49 से उद्धृत ।
3. जेल पत्रिका, रायपुर, 1923 ।
4. एक दिव्य आत्मा से जुड़े कतिपय प्रसंग : बाबूलाल शुक्ल, (छत्तीसगढ़ में जनसंचेतना के संवाहक - पं. सुन्दरलाल लाल शर्मा), छत्तीसगढ़ जनसंपर्क संचालनालय द्वारा प्रकाशित ग्रंथ, रायपुर, पृ. 10.

■ सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शास. कन्या महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.)

पं. सुन्दरलाल शर्मा कृत रेखाचित्र

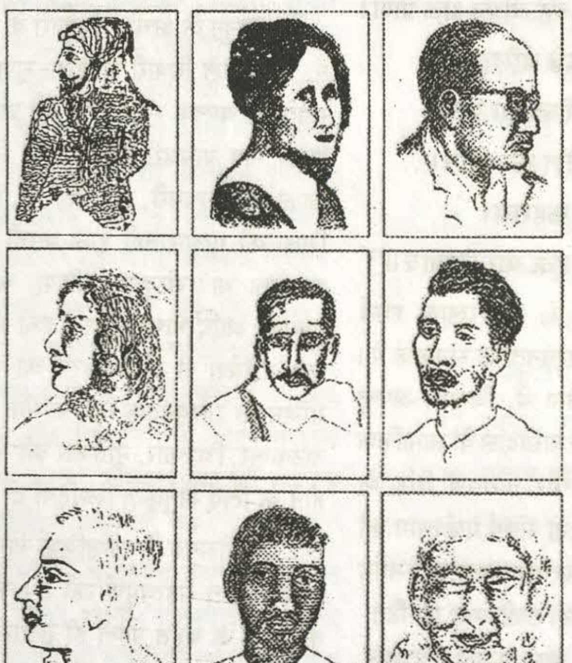

सौजन्य एवं स्वत्वाधिकार : डॉ. सरिता मिश्रा, कैलाशपुरी रायपुर के शोध प्रबंध से उद्धृत

मेरे प्रेरणास्रोत पं. सुन्दरलाल शर्मा

• श्री. रेशमलाल जांगड़े

बचपन में जब रायपुर लारी (सप्रे) स्कूल में पढ़ता था तब छात्रावास में रहता था, पहले फाफाडीह चौक के पास, महावीर गौशाला, राष्ट्रीय विद्यालय, नहर पारा क्षेत्र में कई पढ़ने वाले बच्चे रहते थे। बाल आश्रम भी वहाँ पर थीं। कार्यक्रम के अवसर पर हम सभी छात्र पं. सुन्दरलाल शर्मा के विचारों को सुनते थे और उनसे हम प्रभावित हुए। वे आधुनिक कवि थे, तुरंत बोलते थे लोग लिखते थे। सामाजिक जागृति और राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित उनकी कविताएँ रहती थी। मेरे बड़े भाई ने पं. शर्मा पर अनेक रचनाएँ लिखी थी। उनकी रचनाओं को भी संग्रहित किया था पर गाँव में उपद्रव के समय सब नष्ट कर डाला गया। हम शर्मा जी की रचनाओं को गाते थे, उनका व्याख्यान होता था फिर लोग सहयोग राशि छात्रावास एवं संस्था हेतु स्वेच्छा से देते थे। नाँदघाट की एक सभा में 300 रुपए तत्काल इकट्ठा हो गया था।

सतनामी परिवार के बच्चे पढ़ने के लिए जिस छात्रावास में रहते थे, उसकी स्थापना पं. सुन्दरलाल शर्मा ने की थी। कई मौके पर हम लोगों के साथ बैठकर खाना खाते थे, जमीन पर सोते थे। छात्रावास में कटोरा रखा रहता था। जिसमें स्वेच्छा से लोग अनाज देते थे। जिससे व्यस्था बनी रहती थी। मैं छोटा था इसलिए रायपुर के बाहर उनके साथ कम गया। रायपुर के कार्यक्रमों में उपस्थित रहता था। उनका कार्यक्षेत्र अधिकतर चमसुर, राजिम, मेघा, धमतरी था।

पं. सुन्दरलाल शर्मा सतनामी समाज की सेवा में जागृति में सतत लगे रहते थे। यद्यपि उन्हें उनके समाज से उलाहना भी मिलती थी। पर वे परवाह भी नहीं करते थे। वे गाँव के गरीब किसानों के साथ उठते-बैठते थे एवं उनकी समस्याएँ सुनते थे। राजिम में उन्होंने किसान सम्मेलन भी कराया था।

छत्तीसगढ़ एवं छत्तीसगढ़ी के लिए समर्पित थे। उनकी छत्तीसगढ़ी दान लीला देश भर में चर्चित रही।

पं. सुन्दरलाल शर्मा राजनीति और पद लिप्सा से हमेशा दूर रहे। उनका एकमात्र उद्देश्य था छत्तीसगढ़ में सामाजिक जागृति लाना। इसलिए जब महात्मा गाँधी रायपुर आए थे तो उन्हें जानकारी दी गई पं. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में छुआछुत की भावना को दूर कर सामाजिक समरसता का कार्य किया है। विशेषकर सतनामी भाईयों को जागृत किया है। तब गाँधी जी ने कहा था कि इस कार्य में वे मुझसे बड़े हैं।

पं. सुन्दरलाल शर्मा की रचनाओं में जेल पत्रिका की चर्चा होती है। वे एक महापुरुष थे। आज छत्तीसगढ़ के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया। मैं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित था। उनका जीवन सादा था, विचार उच्च थे, वे अक्सर कोट पहनते थे सफेद तो नहीं नीला आदि रंग का होता था और उनका भाषण भी प्रभावशील होता था। यही कारण है कि लोग स्वेच्छा से उनके साथ जुड़ते गए और उनके सभी कार्यों में सहयोग प्रदान किया। मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ। मुझे बुद्धि उन्हीं से मिली। मेरे जीवन पर उनका अत्याधिक प्रभाव रहा आज के युवकों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये ताकि हमारा छत्तीसगढ़ और हमारा देश आगे बढ़े। ■

पं. सुंदरलाल शर्मा द्वारा निर्मित रेखाचित्र

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सूरज प्रसाद सक्सेना जी का संस्मरण

• अर्चना कोरी

माननीय सुन्दरलाल शर्मा जी से जब मेरी पहली मुलाकात राजिम में हुई थी, उस वक्त मेरी उम्र मात्र 10–11 वर्ष थी। राजिम में हम सपरिवार रहा करते थे। यहीं से सन् 1935–36 में मैंने प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई की। उस समय हाई स्कूल केवलं रायपुर और धमतरी में थे। राजिम में हिन्दी मीडियम स्कूल था। जिसमें सातवीं कक्षा तक पढ़ाई होती थी। प्राईमरी शिक्षण के पश्चात् बालकों को आगे की शिक्षा के लिए बाहर जाना पढ़ता था तथा बालकों की शिक्षा के लिए अत्याधिक खर्च करना पड़ता था। बच्चों को दूर रख पढ़ाई के लिए बाहर भेजना सम्भव नहीं था ।

ऐसे समय पर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पं. सुंदर लाल शर्मा जी ने ही सोचा कि राजिम में इंग्लिश मिडिल स्कूल शुरू किया जाये। इसके लिए धन की आवश्यकता थी। साधारणतः लोग निर्धन थे। उसी समय पर पं. सुंदर लाल शर्मा जी द्वारा आंग्ल वर्नाकुलर मिडिल स्कूल 1934–35 में राजिम में खोला गया, जहां पर अंग्रेजी का एक विषय अनिवार्य होता था। उस समय पं. सुंदर लाल शर्मा जी महीने में दो – तीन दफे राजिम आया करते थे, और वहाँ के वाचनालय में बच्चों से चर्चा किया करते थे। प्रमुख रूप से वे चार विद्यार्थियों से मिलते थे, और उनसे चर्चा किया करते थे, सौभाग्य से उनमें से मैं (श्री सूरज प्रसाद सक्सेना) भी एक था।

समय चक्र के साथ लगभग 1935–36 के बाद पिताजी का स्थानांतरण होने से मैं महासमुंद चला गया । वहाँ पर एक वर्ष रहने के पश्चात् मैं धमतरी आ गया, और वहाँ से मेनोनाइट मिशन हायर सेकेण्डरी स्कूल से मैट्रिक पास करने के बाद जुलाई 1942 में मैंने रायपुर छत्तीसगढ़ कालेज में प्रवेश लिया । मैं 1937 में धमतरी में विद्या अध्ययन करते हुए कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेता रहा। सबसे पहले 1937 में धमतरी में मेनोनाइट मिशन स्कूल में अध्ययन करते हुए स्वर्गीय छोटेलाल श्रीवास्तव, भोपाल राव पवार, स्व. हेजी बाई के सम्पर्क में आया, और नियमित रूप से प्रतिदिन एक घंटे शाम को श्री छोटेलाल जी श्रीवास्तव के निवास स्थान पर चर्खा चलाया करता था। धमतरी में ही कई बार स्वर्गीय मोहम्मद अब्दुल रऊफ, महंत लक्ष्मीनारायण दास आदि नेताओं के भी सम्पर्क में आया (उनके दौरे के समय) । प्रभात फेरियों में भी मैं नियमित रूप से भाग लेता था।

1940–41 में कांग्रेस दल के कार्यक्रम, आंदोलन जब उस समय हुआ करते थे तब मेरी भी रूचि आंदोलन होने के कारण मैं भी वहाँ जाया करता ा। इस तरह अक्सर पं. सुंदर लाल शर्मा जी से मेरी मुलाकात होती थी। अक्सर मैं शर्मा जी के अछूतोद्धार, समाजहित राष्ट्रसेवा आदि से संबंधित विचारों को सुनता था जिससे मैं काफी प्रभावित होता था।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी एक उच्च कोटि के राष्ट्रभक्त समाज सुधारक, कवि हृदय साहित्यकार, कुशल चित्रकार, बुद्धिजीवी, और सत्य अहिंसा के पुजारी थे । ऐसे व्यक्तित्व के धनी पं. सुंदरलाल शर्मा जी छत्तीसगढ का गौरव है। पं. सुंदरलाल शर्मा जी हरिजनों के उद्धार के लिए हमेशा प्रयासरत् रहे । उन्होंने विशेषतः सतनामी समाज के लिए कार्य किया और उन्हें जनेउ धारण करवाया । इस प्रकार उनको समाज में सम्मानीय स्थान दिलाया। इस कार्य के लिए वे सदा याद किए जाते है । गाँव–गाँव जाकर शर्मा जी सभायें किया करते थे। वे तथाकथित अछूतों से किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करते थे।

उस समय सामाजिक दशा कुछ ऐसी थी कि, सतनामियों की एक अलग बस्ती हुआ करती थी अलग से सतनामी पारा हुआ करता था । सतनामियों को घर के अन्दर नहीं आने दिया जाता था । अगर किसी काम से वे घर के अन्दर आ जाते तो उनके जाने के बाद उस

स्थान पर गंगाजल छिड़का जाता था । पानी पीने के लिए बर्तन नहीं दिए जाते थे । पानी भरें जाने वाले मिट्टी के बर्तन अगर उनसे छू जाते तो उन्हे फोड़ दिया जाता था । सतनामी समाज में चर्मकार कार्य नहीं किया जाता था । पं.सुन्दरलाल शर्मा जी ने सभी वर्ग की लड़कियों को शिक्षित करने पर जोर दिया । पं. सुन्दरलाल शर्मा जी सभाओं के द्वारा सभी समाज की लड़कियो को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया । पं. सुन्दरलाल शर्मा जी सतनामियों के साथ बैठा करते थे, उनके साथ भोजन किया करते थे । सुबह से शाम तक देहातों का दौरा किया करते थे । उनके इन व्यवहार से पूरा ब्राम्हण समाज पं. सुन्दरलाल शर्मा जी के खिलाफ हो गया । परन्तु ब्राम्हण समाज में भी एक पढ़ा लिखा वर्ग था वो लोग पं. सुन्दरलाल शर्मा जी का समर्थन कर रहे थे । तथाकथित अछूत नीच वर्ग की ये हालत थी कि यदि कोई मर जाता तो उन्हे उठाने वाला कोई भी नही होता था। समाज में व्याप्त कुरीतियों से स्वंय पं. सुन्दरलाल शर्मा जी भी पीड़ित थे जब वे हरिजनों से मिलकर वापस घर लौटते, तो घर की महिलाएं उन्हे वस्त्र बाहर ही उतारकर स्नान करने के लिए कहती । फिर घर में प्रवेश मिलता था । फिर भी पं. सुन्दरलाल शर्मा जी इन बातों की परवाह नहीं करते थे । विषम परिस्थितियों में तालमेल बिठाते हुए वे अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे । समाज सेवा, राष्ट्र सेवा उनका मुख्य ध्येय था । निश्चित रूप से उनके विचार सिद्धान्त हम सबको देशप्रेम की प्रेरणा देते है ।

मैं स्वयं पं. सुन्दरलाल शर्मा जी के विचारों से बहुत प्रभावित था । शायद उनकी इसी प्रेरणा से मैंनें भी भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया । इसी दौरान सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ । जिसमे मैंने भाग लिया । मुझे दिनांक 16.09.1942 को रायपुर जेल में भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरतार किया गया और मै 23.09.1943 तक कारावास में रहा। कारावास में रहते हुए प्रो0 जयनारायण पांडे, प्रो0 रणवीर सिंह शास्त्री, दशरथ लाल चौबे, कन्हैयालाल, पं0 गंगाधर प्रसाद पांडे, रामकृष्ण ठाकुर आदि साथियों के साथ जेल में रहा । रायपुर जेल में 1943 में मुझे रिहा कर दिया गया । वहाँ सभी के विचारों का आदान–प्रदान होता था । 1945 में मेरें पिताजी का स्वर्गवास हो गया। पूरे परिवार की जिम्मेदारी मुझ पर आ गयी । पढ़ाई मुझे बीच में ही छोड़नी पड़ी । नौकरी में रहते हुए मध्यप्रदेश शिक्षा मण्डल, भोपाल से इन्टरमीडिएट की परीक्षा पास की । 1964 में सागर विश्वविद्यालय से बी. काम. किया तथा 1966 में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेजुएशन के पढ़ाई की ।

जेल यात्रा के दौरान साथियों के विचारों का जो आदान–प्रदान होता था, ऐसा लगता था कि सभी सेनानी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने को तत्पर है । अंग्रेजी दासता से मुक्त होकर देश को आजाद करने का संकल्प सभी के विचारों से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था । विशेष रूप से पं. सुन्दरलाल शर्मा जी ने तो देश को आजाद कराने, समाज की बुराईयों को दूर करने के लिए अपना तन–मन–धन सर्वस्व अर्पण कर दिया । जिस पर सारा समाज गर्व का अनुभव करता है कि ऐसे महान विभूति का जन्म हमारें छत्तीसगढ़ की पावन धरती पर हुआ । मेरा भी सौभाग्य है कि उनका दर्शन लाभ मुझे मिला । उनके विचारों से मुझे प्रेरणा मिली । वास्तव में उनके द्वारा किए गए कार्य उन्हे गॉधीजी के दर्जे में लाकर खड़ा करते है । यही कारण है कि गॉधीजी ने अपने रायपुर प्रवास के दौरान उन्हे अपना गुरू कहा है, क्योंकि हरिजनोंद्धार का कार्य गाँधीजी से पूर्व प्रारम्भ करने का श्रेय उन्हे है । निश्चित रूप से देश की आजादी में पं. सुन्दरलाल शर्मा जी का योगदान अविस्मरणीय है जिन्हे कभी भुलाया नही जा सकता । उन्हें मेरा शत् शत् शत् नमन है........................ ।

■ शोध छात्रा
इतिहास अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ के गाँधी – पं0 सुन्दरलाल शर्मा

• डॉ0 सविता मिश्रा

महान देशभक्त, समाज सुधारक, बहुभाषाविद्, कवि, साहित्यकार, मूर्तिकार, चित्रकार छत्तीसगढ़ के गाँधी के नाम से विख्यात पं0 सुन्दरलाल शर्मा का जन्म विक्रम संवत 1983 के पौष अमावस्या (तदानुसार 21 दिसम्बर 1881) को छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक नगर राजिम में हुआ था । पिता श्री जियालाल तिवारी कांकेर रियासत में वकीली का कार्य करते थे ।

बाल्यकाल में शर्माजी की शिक्षा–दीक्षा राजिम की पाठशाला में हुई । पाँचवीं हिन्दी पास करने करने के बाद उन्होंने विद्यालय का परित्याग कर दिया । घर में ही संस्कृत, उडिया, बंगला, मराठी, महाजनी, उर्दू आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया । बंगला भाषा के प्रति इनका सहज अनुराग एवं आधिपत्य था ।

पं0 सुंदरलाल शर्मा की जन्मभूमि राजिम है, लेकिन उनकी कर्मभूमि धमतरी नगरी क्षेत्र रही है । सन् 1916–17 में जब महात्मा गाँधी ने बिहार प्रांत में आंदोलन का नेतृत्व किया तब उन्हीं दिनों पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने सिहावा के दुर्गम वन तथा कंदराओं ।में राजनैतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बनाया । वहाँ के आदिवासियों को संगठित कर जंगल विभाग, पुलिस विभाग के शोषण, दमन चक्र और अत्याचार के विरूद्ध असहयोग आंदोलन का श्रीगणेश किया । इस राष्ट्रीय कार्य में उनके सहयोगी श्री नारायण विट्ठल फडनवीश (बाद में मेघावाले) नत्थूजी जगताप और बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव थे।

मई सन् 1922 में पं0 सुन्दरलाल शर्मा धारा 108 जा. फौ. (राजद्रोह) के तहत ब्रिटिश हुकूमत द्वारा गिरतार कर लिए गए । उन्हें एक वर्ष कठोर कारावास की सजा दी गई ।

प0 सुंदरलाल शर्मा एक महान समाज सुधारक थे । उन्होंने जीवन पर्यन्त दलित, पीडित एवं शोषित जातियों के लिए संघर्ष किया । हरिजन भाईयो के घर जा कर श्रीमद् भागवत का आयोजन करवाया करते थे, यही कारण है कि, उन्हें कोपभाजन का शिकार होना पडा । उन्हें ''सतनामी ब्राम्हण'' कहकर सार्वजनिक उपहास किया गया ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा मूलतः एक आशु कवि एवं उत्कृष्ट साहित्यकार थे । छत्तीसगढ़ में जिन साहित्य मनीषियों ने उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदी के संधिकाल में हिन्दी की सेवाएँ प्रारंभ की, उसे सजाया संवारा, उनमें पं0 सुन्दरलाल शर्मा का नाम अविस्मरणीय रहेगा।

प0 सुन्दरलाल शर्मा बहुभाषाविद थे । उन्होंने नाटक, जीवनी, उपन्यास, कहानी, काव्य ग्रंथ एवं सैकड़ों स्फुट पद्य लिखकर हिन्दी साहित्य में अपना योगदान दिया है । इसके अतिरिक्त उन्होने छत्तीसगढ़ी भाषा में भी काव्य ग्रंथ की रचना की ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ी के आदि कवि है । उन्होंने ही छत्तीसगढ़ी सदृश्य ग्रामीण बोली को भाषा का रूप प्रदान किया । वे छत्तीसगढ के पुरोधा और पुरूष्कर्ता हैं । सन् 1906 में उनकी अमरकृति ''छत्तीसगढ़ी दानलीला'' प्रकाशित हुई । जिसने पूरे छत्तीसगढ़ में धूम मचा दी । इस खण्डकाव्य ने उन्हें जनकवि बना दिया यह रचना सरस कवि हृदय का प्रेम प्रकाश था ।

उत्तर भारतेन्दु युगीन परिस्थितियों को अगर हम ध्यान से देखें तो पं0 सुन्दरलाल शर्मा की सम्पूर्ण रचनाधर्मिता को आसानी से समझा जा सकता है । उनकी रचना में उत्तर भारतेन्दु काल की ही भाँति व्यक्तित्व एवं कृतित्व दिखाई देता है ।

प0 सुन्दरलाल शर्मा द्वारा राजिम नगर में छत्तीसगढ़ी किसानों की सभा ली गई थी । ब्रिटिश हुकूमत के नहर विभाग द्वारा सिंचाई कर वसूली में जो किसानों के साथ अत्याचार किया जाता था एवं नहर

पानी देने में जो अन्यायपूर्ण कार्यवाही की जाती थी, उस पर भी सभा में विचार किया गया । इस प्रकार हम देखते है कि पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने समाज की कुरीतियों, बुराईयों, रूढियों को दूर करने के लिए संगठित प्रयास किया ।

महाकोशल कांग्रेस की प्रांतीय परिषद 1923 में बैतूल में आयोजित किया गया । उस समय महाकोशल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इं. राघवेन्द्र राव थे, उनका झुकाव स्वराज्य दल की ओर था । उनकी रूचि आंदोलनों की ओर न होने के कारण बैतूल परिषद की अध्यक्षता तपस्वी सुन्दरलाल शर्मा को करनी पडी ।

सन् 1923 के मध्य तक आंदोलन की गतिविधियाँ शांत हो गई । इस बीच सुन्दरलाल शर्मा ने अछूतोद्वार का अभियान तेज कर दिया । उनके साथ ठाकुर प्यारेलाल और घनश्याम सिंह गुप्ता भी सक्रिय थे । पं0 शर्मा के प्रयासों से रायपुर में सन् 1924 में "सतनामी आश्रम" की स्थापना छात्रों की सुविधा और सतनामियों में राष्ट्रीय भावना तथा सामाजिक चेतना जागृत करने के लिए की गई ।

सन् 1897–98 में पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने 17 वर्ष की अल्पायु में राजिम में कवि समाज की स्थापना की थी, जिसके कवियों की कीर्ति कालांतर में पूरे देश में फहराने लगी । सितम्बर 1911 में प्रयाग सम्मेलन में राजिम कवि समाज की जो छवि बनी थी वह जबलपुर के सपतम सम्मेलन 1916 में और निखर गई ।

अप्रकाशित पाण्डुलिपि में फुटकर कविता, राजनीतिक सामाजिक पत्र देखे जा सकते है । पं0 सुन्दरलाल शर्मा के नाटक राजिम एवं छत्तीसगढ़ के अन्य नगरों के रंगमंच में खेले जाते रहे हैं तथा लोकप्रिय भी हुए हैं । पं0 सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ी पद्य के प्रवर्तक हैं । सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ी में ग्रंथ रचना इन्होंने ही की । छत्तीसगढ़ी में भी साहित्य सर्जन किया जा सकता है, इस धारणा को सत्य प्रमाणित किया ।

माधवराव सप्रे निम्नलिखित टिप्पणी 17.07.1917 में लिखकर इसकी प्रशंसा की – "मेरा विश्वास है कि भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र की लीला के द्वारा मेरे छत्तीसगढ़ निवासी भाईयों का अवश्य सुधार होगा । मेरी आशा और भी दृढ हो जाती है जबकि मैं देखता हूँ कि, छत्तीसगढ़ निवासी भाईयों में आपकी इस पुस्तक का कैसा लोकोत्तर आदर है ।"

"वे छत्तीसगढ के भारतेन्दु युगीन कवि एवं साहित्यकार हैं । सन् 1895 तक जितनी भी रचनाएँ हुई, उनमें से 'एडवर्ड काव्य' नामक खण्ड काव्य विशेष विश्रुत हुआ । जिसका प्रकाशन श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से 1903 में हुआ था । जो सी.पी. एण्ड बरार में अंग्रेज सरकार द्वारा प्राइज बुक के रूप में स्वीकार किया गया था । श्री ए.बी.नेपियर, डिप्टी कमिश्नर रायपुर ने अंग्रेज होकर भी इस काव्य के प्रकाशन का व्यय वहन किया तथा राजिम कवि समाज के तत्कालीन अध्यक्ष कवि विश्वनाथ दुबे का सार्वजनिक सम्मान किया गया ।"

महात्मा गाँधी और सुन्दरलाल शर्मा के कार्य एवं इनके व्यक्तित्व में काफी कुछ समानताएँ थी । दोनों ही सत्य के पुजारी थे । एक दिव्य आत्मा का प्रादुर्भाव साबरमती में हुआ था तो दूसरे का छत्तीसगढ के ऐतिहासिक नगर राजिम में । एक भारत केसरी था तो दूसरा माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में "छत्तीसगढ़ केसरी" । दोनों ने दलित, पीडित और शोषित जातियों को हृदय से लगाया । दोनों अमर है ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा उत्कृष्ट कोटि के विचारक थे । जहाँ वे दार्शनिक थे, वहीं उनकी विचार करने की उत्कृष्टता थी । हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर थे । सन् 1924 में इनके विशेष प्रयास से धमतरी में एक भीषण साम्प्रदायिक दंगा होते होते रूक गया ।

सन् 1923 में एक वर्ष की सजा भुगतने के बाद जब शर्माजी जेल से बाहर आए, तब रायपुर, धमतरी आदि स्थानों में अभूतपूर्व स्वागत किया गया । उसी अवसर पर उनके जेल का आदमकद चित्र छपवा कर वितरित किया गया था । इस चित्र के नीचे नारा छपा था – "सत्य के लिए मत डरो–चाहे जियो या मरो" । इसे संयोग कहिए या कुछ और किन्तु इस नारे का अंतिम पद ही सही सन् 1942 में गाँधीजी का नारा

बन गया – "डू ऑर डाई" । शर्मा जी उच्च कोटि के कवि एवं साहित्यकार थे । उनका सिद्वांत उनकी काव्यमय वाणी में भी मुखरित होता था । एक उदाहरण नीचे उद्धृत किया जाता है–

"सबको परतीत जरूर ही है, हम झूठ बनाय कहेंगे नहीं ।
धड़ से सिर हूँ कटि जाय न क्यों, सच को कहने से डरेंगे नहीं ।
कवि सुन्दरजू हम ठीक कहैं, हमारे व्रत जीवन केर यही ।
खुश होउ, कोउ रिश होउ, कोउ चापलूसी की चाल चलेंगे नहीं ।"

पं0 सुन्दरलाल शर्मा निर्भीक वक्ता, गंभीर चिंतक, सिद्वांतवादी, कट्टर समाज सुधारक एवं भविष्य द्रष्टा थे । आजादी के सिलसिले में उन्हें अनेक बार जेल यात्रा करनी पड़ी और हरिजन, आदिवासियों के जागरण का जो कार्य किया उसमें उनकी बहन रोहिणी एवं माता देवमती का पूर्ण सहयोग रहता था ।

छत्तीसगढ सोलहवीं शताब्दी से ही हिन्दी भाषा और साहित्य साधना में निरत है । पं0 सुंदरलाल शर्मा के समकालीन नाट्य लेखकों में पं. अनन्तराम वर्मा के "कपटी मुनि" के प्रकाशन से शुभारंभ माना जा सकता है । जो सन् 1903 में प्रकाशित हुआ था । मालिक रांम त्रिवेदी, लोचन प्रसाद पाण्डेय, डॉ0 बलदेव प्रसाद मिश्र, पं0 रामदयाल तिवारी, डॉ0 खूबचंद बघेल आदि यहाँ के पुराने उल्लेखनीय नाटककार है। पं0 शर्मा के "प्रहलाद नाटक" तथा "ध्रुव चरित" इसी समय की सफल नाट्य रचनाएं है।

भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों में पं0 सुन्दरलाल शर्मा का उत्कृष्ट स्थान है। स्मरणीय है कि वे नव जागरण के अंतर्गत नारी जीवन संबंधी सामाजिक सुधार परिष्कार पर ध्यान केन्द्रित करने पर वे किसी स्थान पर अपने लक्ष्य "देशभक्ति" से स्खलित नहीं होत।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ी के प्रथम नाटककार के रूप में जाने जाते है। समवाय के नाटक खण्ड का सम्पादन पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के भूतपूर्व उपकुलसचिव श्री कृष्ण किशोर श्रीवास्तव द्वारा किया गया है । उन्होने एक नाटककार के रूप में शर्माजी का स्मरण किया है। उन्होंने नाटक खण्ड में नेपथ्य में लिखा है – सुन्दरलाल शर्मा द्वारा लिखा गया "प्रहलाद नाटक" उन बहुत कम लिखे गए नाटकों में से एक है जो हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल में लिखे गए थे । "प्रहलाद नाटक" नाटक के अतिरिक्त "विक्रम शशिकला नाटक", "पार्वती परिणय नाटक" की भी रचना की थी ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा का जीवनी लेखन भारतेंदु युगीन एवं भारतेन्दुयोत्तर जीवनी लेखन के समकक्ष देखा जा सकता है। "विश्वनाथ पाठक की काव्यमय जीवनी" 1905 में प्रकाशित हुई । इसमें राजिम कवि समाज के संस्थापक अध्यक्ष (तब पं0 सुन्दरलाल शर्मा संस्थापक सचिव थे) विश्वनाथ प्रसाद दुबे, उपनाम – पाठक (भूषण कवि) का काव्यमय व्यक्तित्व चित्रित है–

"कान्यकुब्ज ब्राम्हण बिशद, पंडित सुयश प्रकाश ।
सदाशिव दुबे तहाँ, द्विजवर करत निवास ।"

"रीवा महाराज रघुराज सिंह की काव्यमय जीवनी" । इसमें रघुराज सिंह का काव्यमय व्यक्तित्व है । इसमें आद्योपांत यशोगान किया गया है एवं बान्धवेश का सम्बोधन किया गया है । इसका प्रारंभ कवित्त से होता है, जिसे पढ़कर रीतिकालीन कवि "पद्माकर" एवं भूषण की स्मृति हो जाती है।

"सुंदर सुकवि कविवान पै कलान पै,
गियान पै और दान पै जहान पै पसरगे ।
टरगे यहाँ ते पै हूँ करगे कहाँ ते नाम,
कीरति करोरन धराके बीच धरगे ।"

"विक्टोरिया वियोग" नामक जीवनी लेखन में ब्रिटिश सरकार की अच्छाईयों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें ब्रिटिश राज में सुख का वर्णन है। रानी विक्टोरिया के प्रेम को भारतवासियों के प्रति दिखाकर उनके गुणों को उभारा है। एक ओर जहाँ भारतमाता की आजादी का उत्साह हैं, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश की समस्त विकासात्मक रूपरेखा की

झांकी प्रस्तुत की गइ है।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा कृत "विश्वनाथ पाठक का जीवन चरित्र" नामक काव्य जीवनी उनकी प्रथम रचना है, जो सन् 1904 में प्रकाशित हुआ था । पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने 15 खण्ड काव्य, 4 नाटक, 1 उपन्यास की रचना की । इसके अतिरिक्त और भी रचनाएँ है । छत्तीसगढ़ी रामायण भी है जो अप्रकाशित है ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा के समकालीन कवियों में हीरालाल माधवराव सप्रे, माखनलाल चतुर्वेदी, लक्ष्मीधर बाजपेयी, सत्यदेव परिव्राजक, जगन्नाथ भानु, लोचनप्रसाद पाण्डेय हैं । शर्माजी पं0 माधवराव सप्रे के समकालीन साहित्यकार माने गए है। सन् 1920 एवं 1930 के बीच में छत्तीसगढ के बिलासपुर, दुर्ग स्थित साहित्यकारों का उन्होंने संगठन किया एवं इन्हें सर्जनात्मक प्रेरणा दी ।

इसके अतिरिक्त पं. गोपाल प्रसाद तिवारी, पं0 रामदयाल तिवारी, श्रीयुत कुलेश्वर साव जी, पं0 गणपति चौबे, पं0 बद्रीप्रसाद पुजारी, सेठ ज़गन्नाथ प्रसाद, पं0 ज्वाला प्रसाद पाण्डेय, पं0 रामकृष्ण तिवारी, पं0 सुर्यदत्त शर्मा, सेठ चम्पालाल, रामकिशन जी, श्रीयुत रामदास नायक, पं0 गौरीशंकर दुबे, रामरतन लालजी, डिग्वेकर जी, पं0 रविशंकर शुक्ल, देव साहब वकील, बलदेव प्रसाद मिश्र थे । इसके अतिरिक्त अलग–अलग क्षेत्रों से पं0 सुन्दरलाल शर्मा के समकालीनों के नाम गिनाए जा सकते हैं ।

इसके द्वारा रचित "ध्रुव चरित्र–आख्यान" कीर्तन शैली पर आधारित काव्य संग्रह है । इसमें राजा उत्तानपाद की कहानी के साथ–साथ ईश्वरीय आस्था का संकलन है । इस आख्यान में भाव की गहराई है । इसमें कवि का ईश्वर प्रेम दृष्टव्य है । भाषा ब्रज संस्कृतनिष्ठ है ।

"श्री राजीव क्षेत्र महात्म्य" उसी बहुचर्चित कवि की कृति है जो सन् 1915 में श्री रामजीलाल शर्मा के हिन्दी प्रेस प्रयाग से मुद्रित एवं प्रकाशित था। इसमें कवि ने भगवान राजीव लोचन की महिमा के गीत गाने तथा छत्तीसगढ की जीवनदायिनी चित्रोत्पला गंगा महानदी, पांवरि (पैरी नदी) और संडवि (सोंढूर नदी) की बार–बार आराधना करने में अपने को धन्य माना है।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा का भाव पक्ष अपनी गहनता का परिचायक है । एक ओर उनका व्यक्तित्व उग्र था, दूसरी ओर उनके हृदय में सरसता, सरलता भी दृष्टव्य है । उनकी अपनी कुँवारी कविता का अर्पण भगवान के चरणों में किया है –

"बन छवि वरणत बनत नहि,
सुमति रहत सकुचाय ।
भक्त उदय जिमि तिमि कछुक, कहत
यथामति गाय ।"

प्रलाप पदावली पं0 सुन्दरलाल शर्मा का भक्ति काव्य है । इसमें उनकी ईष्ट के प्रति भक्ति की प्रवाहमयता है । उन्होंने स्वयं कहा है–प्रभो आपके साथ बकझक करने में भी बडा आनंद आता है । इसमें जीवन दर्शन का उल्लेख किया गया है । जगत के स्वामी के शरण में जाने के लिए व्याकुल है–

"हौं शरण पाहि तारण तरण
शान्ति–सदन पंकज–चरण
दुख–द्वन्द्वकुन्द करू बन्द कवि,
सुन्दर को सुन्दर–वरण ।"

पं. शर्मा की "छत्तीसगढी रामायण" एक प्रबंध काव्य है। पूरी रचना छत्तीसगढ़ की आंचलिक संस्कृति और सभ्यता का प्रमाणिक दस्तावेज है। जनजीवन की प्रतीकात्मक झाँकी इसमें प्रस्तुत है। साथ ही ग्रामीण जीवन की सुमधुर मिठास व्याप्त है ।

"असने बाल चरित अनुसरही गम्मत रकम रकम के करहीं,

नाचन कूदत दउरत कदइकत गिर गिर उठत हंसत कभू उनगत् ।"

"कृष्ण जन्म आख्यान" पं0 सुन्दरलाल शर्मा की छत्तीसगढ़ी काव्य कृति है। इसमें कृष्ण के जन्म और उसकी बाल–सुलभ प्रवृत्तियों का सुन्दर चित्रण हुआ है। वे चाहते थे कि छत्तीसगढ़ी बोली का

प्रचार–प्रसार हो, एवं छत्तीसगढी व्याकरण पुष्ट हो ।

''कंसवध'' खण्डकाव्य के माध्यम से अपने समय के वर्तमान को जीवंत किया है । वे कंस को अंग्रेजी हुकूमत के प्रतीक के रूप में चित्रित कर ब्रिटिश सरकार का बिम्ब जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है।

हिन्दी की पत्रकारिता में पं0 सुन्दरलाल शर्मा का उल्लेखनीय स्थान है। उनकी अपनी पत्रिका ''कष्ण जन्म स्थान'' (केन्द्रीय कारावास रायपुर से), श्री राजिम प्रेम पीयूष पत्रिका, (राजिम से), विशेष रूप से उल्लेखित है। पत्रकारिता के माध्यम से पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने देश प्रेम, समाज प्रेम, संस्कृति प्रेम की भावना को जीवन्त रखा है । उनका जुझारू व्यक्तित्व जो सर्वत्र लेखनी चलाने में अपनी सक्षमता को दर्शाता है, इसका प्रतिरूप हम इन पत्रिकाओं में प्राप्त करने हैं, जहाँ उनकी चित्रात्मकता को स्थान मिला है । ''कृष्ण जन्म स्थान'' 1922 में जेल में प्रकाशित हस्तलिखित पत्रिका है । इसमें उस समय की मौजूदा स्थितियों का सुन्दर चित्रांकन किया गया है। इसके मुख पृष्ठ के चित्र पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने स्वंय बनाया था । इस पत्रिका में राष्ट्रीय आंदोलन, अंग्रेजों का भारतवासियों के प्रति दृष्टिकोण, जेल के भीतर की घटना विशेष उल्लेखनीय है । शर्माजी रंगमंचीय कलाकार थे, इस बात का परिचय भी प्राप्त होता है ।

''दुलरूआ'' सन् 1940 की हस्तलिखित पत्रिका है । पंडितजी के स्वर्गवास के कुछ ही दिन पूर्व की पत्रिका है । उनकी इच्छा थी कि कला, साहित्य, संस्कृति का विकास कैसे हो? जिसके लिए वे निरंतर प्रयासरत रहे ।

निष्कर्ष–पं0 सुन्दरलाल शर्मा एक अच्छे वैद्य भी थे । बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं छत्तीसगढ़ में पुनर्जागरण के अग्रदूत थे । मूलतः वे उत्कृष्ट साहित्यकार थे, किन्तु जब 1905 में बंग–भंग के कारण देशव्यापी आंदोलन शुरू हुआ तब उन्होंने इस पिछडे हुए अंचल में स्वतंत्रता संग्राम का श्रीगणेश किया । वे छत्तीसगढ़ की आजादी की लडाई के सेनापति एवं प्रथम जेल यात्री थे । कट्टर समाज सुधारक, दलित, पीडित व हरिजनों के अनन्य हितैषी एवं उनके उद्धारक, कृषि वैज्ञानिक, चित्रकार, मूर्तिकार, नाटककार साहित्यकार, कवि, रंगमंच कलाकार, वास्तुविद्, बहुभाषाविद् थे । स्वतंत्रता संग्राम में अनेक बार जेल यात्रा करनी पडी । महात्मा गाँधी को छत्तीसगढ में दो बार लाने का श्रेय इन्हें है । स्वदेशी आंदोलन, हरिजन उद्धार तथा स्वतंत्रता आंदोलन के खातिर पं0 सुन्दरलाल शर्मा को अपनी समूची जमींदारी बेच कर कुर्बानी देनी पडी, जो उनके त्याग और तपस्या का परिणाम था ।

■

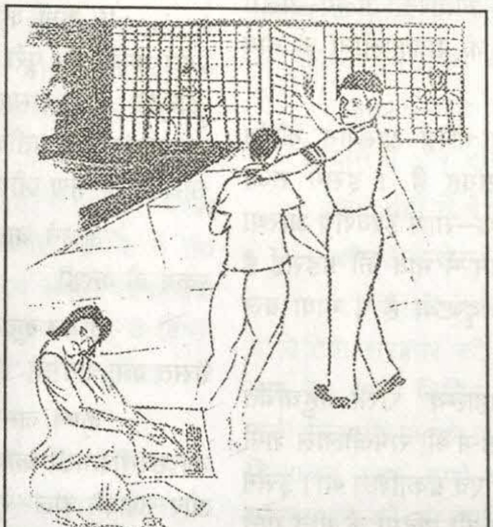

पं. सुंदरलाल शर्मा द्वारा निर्मित रेखाचित्र

डॉ0 दुर्गा सिंह सिरमौर (वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)

से लिया गया साक्षात्कार दिनांक 12.12.2009 को (उनके निवास पर आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र द्वारा पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय हेतु लिया गया ।)

पं0 सुन्दरलाल शर्माजी के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए श्री सिरमौरजी ने पं0 सुंदरलाल शर्मा जी छत्तीसगढ़ के महान पुरूष है । उन्होंने त्याग एवं तपस्या से छत्तीसगढ़ के चरित्र को बहुत उज्जवल किया है। उनके जैसे तपस्वी नेता आज देश को मिले तो देश उज्जवल हो जायेगा आज मुझे गर्व है कि उनके जैसे महान् नेता छ0ग0 को मिले ।

मुझे पं0 सुन्दरलाल शर्मा के व्यक्तित्व से प्रेरणा मिली । सुन्दरलाल शर्माजी काम जो कहने लायक है उसे कह देता हूँ । सुन्दरलाल शर्मा के जीवन त्यागमय गरीबों के लिए, आदिवासियों के लिए दुखित पीडितों को सहायता करने के लिए, सुविधा प्रदान करने के लिए शर्माजी में तडप थी उनकी आत्मा की आवाज थी । शर्माजी के काम करने का तरीका अतुलनीय आदर्श सम्मानीय, सराहनीय थे उनके गुणो को बखान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है ।

समाज व साहित्य के प्रति उनका योगदान सराहनीय मूल्य है । समाज के प्रति बहुत बार त्याग किए बहुत त्याग किए । शर्मा जी हरिजनों के मोहल्ला जाते थे उनके यहाँ जाकर सत्यनारायण की कथा कहते थे । ब्राम्हण समाज के लोग उन्हें सतनामीयों का ब्राम्हण कहते थे ।

पं. सुंदरलाल शर्मा द्वारा निर्मित रावणप्रतिमा

छूआ–छूत के निवारण के प्रति शर्माजी के मन में गाँधीजी के पहले नाम आता है । इसलिए गाँधीजी ने रायपुर में कहा था कि इस कार्य में शर्माजी मेरे गुरू है, जो काम मैं करना चाहता था, उसे शर्माजी ने पहले ही कर दिया है। सिरमौर जी ने चर्चा करते हुए कहा की मैं 1939 में कवंधा आश्रम गया था उनके साथ 1 साल रहा मेरे जीवन में गाँधीजी न शर्माजी का अतुलनीय प्रभाव पडा ।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के अंतर्गत ये बाते देखने में आती है कि गाँधीजी से प्रेरित होकर शर्माजी ने अखिल भारतीय गौ सेवा संघ, खादी संघ, चरखा संघ की स्थापना इस रास्ते पर चलने के कारण शर्माजी के 18 गाँव बिक गए । तन, मन, धन, देश के लिए उन्होंने समर्पित कर दिया था।

गाँधीजी के हर काम को शर्माजी ने आगे बढाया इसलिए उनको छ0ग0 का गाँधी कहा जाता है । मेरे जीवन में भी इनका व्यापक प्रभाव पडा । ■

साक्षात्कार कर्ता –
आचार्य रमेन्द्र नाथ मिश्र
पूर्व अध्यक्ष, पं0 लखन लाल मिश्र
(स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शोधपीठ)
(बख्शी शोध पीठ एवं
पं0 सुंदर लाल शर्मा शोधपीठ)
पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छ0ग0)

श्री रेशम लाल जांगड़े (वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)

से लिया गया साक्षात्कार दिनांक 12.12.2009 को (उनके निवास पर आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र द्वारा पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय हेतु लिया गया।)

1. बचपन में मैं जब पढ़ने के लिए रायपुर आया और छात्रावास में रहने लगा तभी पं0 सुन्दरलाल शर्मा से प्रभावित हुआ व उनके सम्पर्क में आया ।

राष्ट्रीय महाविद्यालय में पढ़ता था महावीर गौशाला एवं विद्यालय तथा छात्रावास स्थापना में शर्माजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उस महावीर गौशाला राष्ट्रीय विद्यालय व उसके आगे फाफाडीह के आस पास छात्रावास भवन था । बागड़ीकर वकील के घर के आस पास धर्मशाला में था फिर बाद में शीतला मंदीर के पास हरिजन छात्रावास में हम छात्र लोग रहते थे । जमीन में सोते थे व स्वंय भोजन बनाते थे ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा भी हम लोगों के साथ खाना खाते थे व जमीन में सोते थे । वे बहुत उदारवादी थे सबसे ज्यादा शर्माजी जो अपनाया वह सतनामी भाइयों को आगे बढ़ाने का काम था गंज में कटोरे में चावल इकट्ठा किया जाता था ।

शर्माजी के ओजस्वी भाषण से लोग स्वेच्छा से राशि देते थे जिसे एकत्रित कर छात्रावास का संचालन किया जाता था । वे तुरंत कविता या चना खाते खाते हुए कविता या तुकबंदी बनाते थे वे आशु कविताएँ कहा करते थे ।

"4 लाख सतनामी भाईयो, लगा दो दो बेड़ापार
जब तक लइका मन पढ लिखके नहीं हुये होशियार"

शिक्षा के प्रति शर्माजी का प्रेरणास्पद प्रयास था ।

2. शर्माजी व उनके सहयोगियों के कहने पर गाँधी छ0ग0 प्रवास के समय सामाजिक जागृति के लिए मुंगेली से बिलासपुर बैलगाडी से यात्रा की ।

साहित्य – शर्माजी बहुत से कविता का संग्रह, गाँधी के प्रति विचार पर लेख व छ0ग0 के विकास के लिए लेख लिखे, सतनामी पुराण लिखने का विचार था पर समायाभाव के कारण नहीं लिख पाये ।

जांगड़ेजी का कहना है हमे बुद्वि का ज्ञान शर्माजी से मिला ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा के हृदय में छ0ग0 के प्रति समर्पण की भावना थी उन्होंने छ0ग0 भाषा बोली के लिए छ0ग0 वासियों के लिए बहुत कुछ किया । वे बहुत बडे विद्वान थे ।

छ0ग0 में सामाजिक सद्भाव के लिए वे जातिविहीन समाज चाहते थे तथा सतनामी भाइयों को आगे बढ़ाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे । उनका यह कार्य कट्टरपंथीयों के लिए अनुकरणीय था ।

पं0 खुबचंद बघेल भी पं0 सुन्दरलाल शर्मा व ठाकुर प्यारेलाल सिंह से प्रभावित थे । वे भी सामाजिक समन्वयक के पक्षधर यद्यपि तत्कालित सामाजिकजनों ने इन्हें बहिस्कृत करने का प्रयास किया था । जबकि ये समाज सुधारक अपने उद्वेश्यों में अडिग रहे ।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा ने सतनामी भाइयों को जनउ पहनाकर सामाजिक जागृति का एक बहुत बड़ा काम किया था इस कार्य में नयन दास महंत ने काफी सहयोग दिया था । यद्यपि समाज के कुछ लोग उलाहना देते थे ।

अंग्रेजो के द्वारा परसाभदर में पशुओं को काटा जाता था जिसे बंद करवाने के लिए उस समय के बलौदाबाजार व भाटापारा के सामाजिक कार्यकर्ता लगे हुए थे, नयनदास, बिसौहा दास,

दुर्जन सिंह, बलभद्र प्रसाद शुक्ला आदि लगे हुए थे । ये गौरक्षक भी थे छ0ग0 में सामाजिक जाग्रति का बहुत बड़ा उदाहरण है ।

इस प्रयास के बाद वहां पशुवध बंद हो गया ।

3. पं0 सुन्दरलाल शर्मा के समय ठाकुर प्यारेलाल सिंह भी गरीबों के चिंतक थे, मसीहा थे। इनका स्वभाव शर्माजी के समान था ।

पं0 शर्मा राजनीति से दूर रहकर समाज सेवा में लगे रहे, ठाकुर प्यारेलाल सिंह राजनीति में एवं प्रखर व्यक्तित्व वाले नेता थे। वे कुछ समय के लिए मंत्री बने पर अपने ही लोगों ने उन्हे आगे बढ़ने नही दिया पर ठाकुर साहब व शर्माजी अपने उद्वेश्य व सेवा कार्य में अडिग रहे।

आज के संदर्भ में जब हम शर्माजी के कार्यो को व्यवहीतृत स्वरूप में देखना चाहते है तब लगता है कि कुछ लोग शर्माजी की पूजा तो करते है पर उनके विचारों को अपना नहीं रहे।

छत्तीसगढ़ के लिए शर्माजी का व्यक्तित्व अनुकरणीय है ।

साक्षात्कार कर्ता –
आचार्य रमेन्द्र नाथ मिश्र
पूर्व अध्यक्ष, पं0 लखन लाल मिश्र
(स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शोधपीठ)
(बख्शी शोध पीठ एवं
पं0 सुंदर लाल शर्मा शोधपीठ)
पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छ0ग0)

पं. सुंदरलाल शर्मा द्वारा निर्मित रेखाचित्र

सामाजिक संचेतना की प्रथम किरण
रायपुर जेल से देशभक्त पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा हस्तलिखित
"श्रीकृष्ण समाचार पत्र"

• आचार्य रमेन्द्र नाथ मिश्र

भारतीय राष्ट्रीय संचेतना के विकास के इतिहास में मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्वांचल छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण केंद्र रायपुर का विशिष्ट योगदान रहा है। लोकमान्य तिलक के विचारों का इस अंचल पर व्यापक प्रभाव रहा। उनकी मृत्यु के पश्चात महात्मा गाँधी के द्वारा देशव्यापी संपर्क एवं अहिंसा की दिशा में आंदोलन की ओर उनके बढ़ते हुए कदम का इस अंचल ने भी स्वागत किया।

20 दिसंबर 1920 को छत्तीसगढ़ गौरवान्वित हुआ, महात्मा गाँधी के रायपुर में प्रथम पदार्पण से, पं. सुन्दरलाल शर्मा के प्रयासों से वे कलकत्ता से यहाँ आए थे। कंडेल का किसान आंदोलन एक प्रेरक प्रसंग था।

गुजरात के बारडोली पूर्व रायपुर जिले के धमतरी क्षेत्रांतर्गत कंडेल ग्राम में नहर सत्याग्रह हुआ था। अंग्रेजों द्वारा सावन के महीने में भी ग्रामीणों पर नहर पानी, चोरी से खेतों में ले जाने का आरोप था। उन पर अर्थदंड किया गया। पर महात्मा गाँधी के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए किसानों ने कर एवं अर्थदंड देने से इंकार कर दिया। उनके जानवर बाजारों में नीलाम हेतु ले जाए गए, पर ग्रामीणों की एकता के कारण कोई भी वहाँ बोली लगाने वाला नहीं मिलता था। अंग्रेजों ने अर्थदंड कम करने का प्रस्ताव दिया, किंतु ग्रामीण कर न देने के अपने निर्णय पर अड़े रहे। अंततः अंग्रेज सरकार को अपना निर्णय रद्द करना पड़ा। महात्मा गाँधी के आगमन के समाचार से भी वे भयभीत थे। कंडेल गाँव के किसानों की जीत हुई। कंडेल गाँव के मालगुजार बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव को आंदोलन से अलग करने का अंग्रेजों का यह एक प्रयास असफल हो गया। पं. सुन्दरलाल शर्मा, पं. नारायणराव मेघावाले के कुशल नेतृत्व ने आंदोलन को मजबूत बनाए रखा। गाँधी जी ने यहाँ आने पर गाँव वालों को सफल आंदोलन के लिए बधाई दी। रायपुर में गाँधी जी को तिलक स्वराज्य कोष हेतु महिलाओं से धन, आभूषण आदि के रूप में महत्वपूर्ण सहयोग मिला। यहाँ से गाँधी जी नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में गए, जहाँ असहयोग आंदोलन की घोषणा हुई थी। वस्तुतः कंडेल नहर सत्याग्रह असहयोग आंदोलन का पूर्वाभ्यास था। जन आंदोलन की पृष्ठभूमि थी। सामाजिक संचेतना का प्रतीक थी।

छत्तीसगढ़ में असहयोग आंदोलन के तहत प्रथम जेल यात्रियों में पं. सुन्दरलाल शर्मा प्रमुख थे। जेल की दीवारों से घिरे हुए अंग्रेजों के पहरे के मध्य बैठकर भी उन्होंने अपने विचारों को कैद नहीं रखा, वरन समसामयिक चिंतन एवं जानकारी से युक्त एक हस्तलिखित द्वैमासिक "श्रीकृष्ण जन्म स्थान समाचार पत्रिका" निकाला। अंग्रेजों के कड़े सुरक्षा के मध्य इस पत्रिका का निकलना निर्भीकता एवं साहस का द्योतक है। वैचारिक अभिव्यक्ति की शक्ति को एवं कलम के प्रयोगास्त्र को अंग्रेज नहीं रोक पाए।

श्रीकृष्ण जन्म स्थान पत्रिका के छह अंक निकले थे, जिनमें न केवल जेल के अंदर की घटनाओं का विवरण था, अपितु राजनीतिक चिंतन और धारणाओं, जनता के कर्तव्य-पालन, दायित्व-पालन के प्रति प्रेरणापरक जानकारियाँ होती थीं। यह समाचार पत्र इतिहास में राजनीतिक संचेतना के विकास का एक महत्वपूर्ण अस्त्र साबित हुआ। गाँधी युग के प्रारंभिक चरण में उनकी अभिव्यक्ति की प्रस्तुति निसंदेह एक स्तुत्य प्रयास था। 1922-1923 में देश में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव परिलक्षित हो रहा था। असहयोग आंदोलन ने एक स्फूर्त चेतना जन मानस को सौंपा था। पत्रिका का छठवां अंक देखने को मिला जिसमें 18 पृष्ठ दो कालम पर लिखे गए हैं, कविता, लेख, जेल के अंदर की दशा का वर्णन, जेलर द्वारा आंदोलनकारी, पं. भगवती प्रसाद मिश्र के साथ दुर्व्यवहार का ढंग वर्णित एवं चित्रित है। चित्र पं. सुन्दरलाल शर्मा ने स्वयं बनाया है। चित्र में पं. मिश्र का निर्भीक चेहरा तथा उभरे हुए सुडौल सीने तथा गठीले शरीर

का चित्रण है, जो यह प्रकट करता है कि वे प्रत्येक अत्याचार का निर्भीकता से सामना करने हेतु कृतसंकल्प हैं। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई है एवं सिपाहियों ने उन्हें पकड़ रखा है। पत्रिका के प्रारंभ में ईश वंदना है, जिसमें अंग्रेजकालीन भारत की दुर्दशा से ईश्वर को देश की रक्षा करने की प्रार्थना की गई है।

पं. नारायणराव मेघावाले एवं पं. भगवती प्रसाद मिश्र के जेल से छूटने के उपलक्ष्य में अभिनंदन किया गया है जो क्रमश: 11 जनवरी एवं 7 फरवरी 1923 का है। देशभक्त पं. नारायणराव फड़नवीस (मेघावाले) एवं दृढ़निश्चयी पं. भगवती प्रसाद मिश्र (अंधियारखोर वाले) से देशहित में भारतमाता के चरणों में सर्वस्व अर्पण करने की अपेक्षा की गई है, ताकि देश का दुख-दर्द दूर हो, जनता सुखी हो, भारत का यश फैले। निवेदक के रूप में प्रथम अभिनंदन पत्र में पं. सुन्दरलाल शर्मा, हामिद अली, पं. भगवती प्रसाद 1मश्र, अब्दुल रउफ खां का नाम है एवं द्वितीय अभिनंदन पत्र में पं. सुन्दरलाल शर्मा, अब्दुल रउफ खान, हामिद अली का नाम उल्लिखित है। समाचार पत्रिका जागृति का संदेशवाहक था।

गाँधी युग के प्रथम बड़े आंदोलन के स्थगित होने से प्रतिफलस्वरूप परिस्थितियों से सबक भी हमें इसमें दृष्टिगत होता है। पं. सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ में गाँधीवादी विचारधारा के प्रमुख प्रवर्तक थे, जिन्होंने इस अंचल में जनचेतना को विकसित किया एवं महानदी घाटी के अरण्यांचल में लोगों को आत्मबोध, स्वाभिमान, तथा साहस की दिशा में एक नई रोशनी दी। अस्पृश्यता निवारण के क्षेत्र में वे अग्रणी रहे। कानपुर, लखनऊ यात्रा एवं सम्मेलन संगोष्ठी के अवसर पर सतनामियों को जनेऊ धारण करवा कर उनमें आत्मविश्वास एवं सामाजिक सदभाव का सार्वजनीन बोध कराया। अस्पृश्यता निवारण के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है । उनके इस कार्य की महात्मा गाँधी, पं. मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, पं. रविशंकर शुक्ल, बैरिस्टर छेदीलाल, पं. रत्नाकर झा, वामनराव लाखे, अंजोर दास जी, यति यतनलाल एवं अब्दुल रउफ खान आदि ने सराहना की थी। सामाजिक संचेतना के प्रति समर्पण भाव के वे प्रशंसक थे। महात्मा गाँधी को छत्तीसगढ़ में यह आभास हुआ कि उनसे पहले यह कार्य पं. सुंदरलाल शर्मा ने किया है।

श्री कृण जन्म स्थान पत्रिका से पंडित शर्मा का समग्र व्यक्तित्व उजागर होता है। वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार, चित्रकार एवं राजनीतिक सामाजिक चिंतक व एक निर्भीक नागरिकों के जनप्रतिनिधि थे। अंग्रेजों के अन्याय के प्रति सतत संघर्षशील रहे । वे सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे। सत्य के लिए प्राणपण से निर्भीक होकर संघर्ष करो यह युवकों के लिए उनका संदेश था। छत्तीसगढ़ के समाज को आजादी की लड़ाई में भाग लेने हेतु आह्वान करते रहे।

पं. शर्मा एक व्यंग्यकार भी थे। समाचार में एक अत्याचारी जेल में स्थानांतिरित होने पर उन्होंने लिखा - ''पतलून प्रसाद चल बसे।''

छपते-छपते कालम के लिए उन्होंने पुरोनी समाचार शब्द का प्रयोग कर छत्तीसगढ़ी के प्रति अपनी अभिव्यक्ति प्रदर्शित की है।

गाँधी युग में यह जेल से लिखी गई प्रथम हस्तलिखित समाचार पत्रिका है, जिसका जेल में जलियांवाला बाग कांड को स्मरण कर अपनी भावाभिव्यक्ति को ''राष्ट्रीय दिवस'' के रूप में आयोजित किया गया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक चार दशक तक पं. सुंदरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के संवाहक बने रहे। ■

- पूर्व अध्यक्ष, पं. लखनलाल मिश्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शोधपीठ, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर

संप्रति : सदस्य छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, छ.ग. शासन, रायपुर

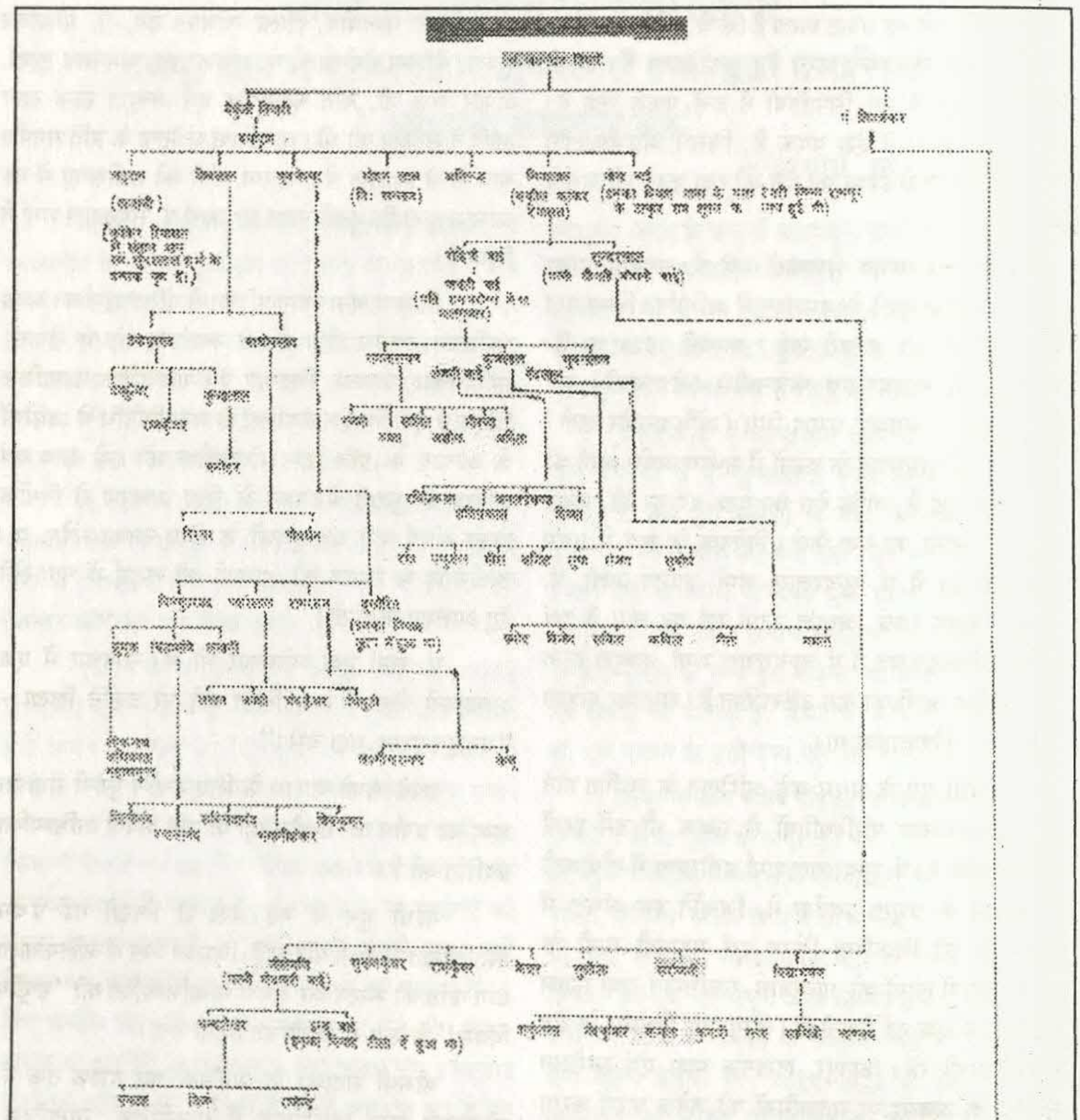

राष्ट्रीय जागरण के प्रणेता पं. सुन्दरलाल शर्मा

●केयूर भूषण

छत्तीसगढ़ अंचल को सुसंस्कृत बनाने में तीन महापुरुषों का सर्वाधिक योगदान है। प्रथम गुरु घासीदास जी ने आध्यात्मिक चेतना जागृत की। सत्य, प्रेम, करूणा जो छत्तीसगढ़ के जन–जन में समाहित है वह उन्हीं की देन है। अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्ति के साथ भूख से मुक्ति का संघर्ष वीरनारायण सिंह ने प्रारंभ किया। जिसमें वे बलिदान हुए। तीसरा युग पं. सुन्दरलाल शर्मा का आता है। जिन्होंने सुसुप्त छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय चेतना जगायी। जिसके लिए उन्होंने जागरण के सभी विधाओं का प्रयोग करते हुए अपना सब कुछ अर्पण कर दिया। हम कुछ नहीं कह सकते कि देश के किस नेता से उनकी तुलना करें।

इस अंचल की कला और संस्कृति की जागरण में वे रविन्द्र नाथ टैगोर के समकक्ष आते हैं, तो स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा के रूप में लोकमान्य तिलक को सत्याग्रहियों के रूप में महात्मा गाँधी के समकक्ष बैठते हैं तो समाज सुधार के कार्यों में ज्योतिबा फुले के वैज्ञानिक रूप में कृषि वैज्ञानिक थे। ऐसे बहुआयामी व्यक्ति भारत में कोई और हुआ होगा वैसा मुझे अब तक सुनने में नहीं आया है। इस शताब्दी के अन्दर जितने कार्य पं. सुन्दरलाल शर्मा ने किए हैं, और जिसका प्रभाव इस अंचल के जनमानस में पड़ा है उतना किसी के कार्य का नहीं। उनके किए कार्यों को अगर हम एक किनारे रख दें तो हमें छत्तीसगढ़ अंचल में शून्यता दिखाई देगी। दुर्भाग्य हमारा था कि हम लोग राजनैतिक महत्वाकांक्षी स्वार्थ के पीछे उन्हें विस्मृत कर बैठे थे। पर क्रांति की चिनगारी कभी बुझती नहीं। भले राख की ढेरी में दबी रह जाए। हवा के बहाव में जब राख उड़ जाती है तब वह दबी चिनगारी ज्योति बनकर जागृत होती है। जिसके आलोक में सारा अंचल आलोकित हो उठता है। वहीं पं. सुन्दरलाल शर्मा की राख की ढेरी से निकली चिनगारी छत्तीसगढ़ राज्य के रूप में प्रगट हुई है। वह पूरे अंचल के खरपतवारों को दूर कर देती। उनका खुशहाल और समृद्ध छत्तीसगढ़ का सपना पूरा होगा, जिसके लिए वे जीवन दिए।

पं.सुन्दरलाल शर्मा जी का जन्म छत्तीसगढ़ के प्रयाग त्रिवेणी संगम राजिम में हुआ। जहाँ भगवान राजीवलोचन विराजमान हैं। उनके पाँव पखारने तीनों नदियाँ महानदी, पैरी और सोंढूर एक साथ जल अर्पित कर रही हैं। कैसा अनुपम दृश्य है वह मानो कला, साहित्य और भक्ति एक साथ अपने को समर्पित कर रही है। आँखों के सामने मीरा उतर आती है। जिनकी आँखों के प्रेमाश्रु बह रही है कन्ठ से गीत और पाँवों में थिरकन। मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। एक बार जाकर राजीवलोचन का दर्शन तो कर आइए भक्त मंडली में वही समर्पण पायेंगे।

राजिम पं. सुन्दरलाल शर्मा जी की जन्मस्थली, हैय–हैयवंशीय राजाओं के काल में बना मंदिर और उसके साथ ही बसा भाहर कई राजाओं के इतिहास को अंकित करते, मराठा काल में भी अपने गौरव को अक्षुण्य रखते, राधोबा महाडिग के काल में पं. सुन्दरलाल शर्मा के पिता पं. जियालाल जी तिवारी उनके दरबार के प्रमुख सामंत थे। महाडिग जी बहुत उदार और कलाप्रेमी थे। स्वयं भक्त तो थे ही भगवान राजीवलोचन की पूजा अर्चना उसी परम्परा से होती है जो परम्परा जगन्नाथपुरी में भगवान जगन्नाथ की होती है। उनकी तीनों रूपों की आरती। उनकी तीनों समय के भोग। कथा–भागवत। उसके अनुसार, श्रृंगार, कोठारी, माली, पण्डा, पुजारी की बस्ती,पं. जियालाल जी की स्थिति एक सामन्त की थी। उस समय के मुताबिक एक अच्छे कानूनविद् भी थे। कांकेर राजदरबार में उनकी मान्यता थी– वहाँ के सलाहकार भी थे। वहाँ भी उनकी 22 गाँवों की जागीरी थी। राजिम के आसपास तीन बड़े गाँव थे। एक तरह के वे स्वयं भी जागीरदार थे।

उनके एकमात्र पुत्र थे पं. सुन्दरलाल जी। पिता भी कवि एवं संगीतज्ञ थे। पखावज बजाया करते थे। बाहर से आने वाले अतिथि कलाकारों के साथ संगत भी किया करते थे।

उनका परिवार भी बहुत ही सम्पन्न और कलाप्रेमी था। वही पं. सुन्दरलाल शर्मा जी को विरासत में मिला। सत्याग्रह की वृत्ति कैसे जागी, वह प्रभाव उनमें कैसे आया, खोज का विषय है। संभव है अक्खड़ साधुओं से वह वृत्ति मिली हो। क्योंकि कबीर पंथ एवं सतनामी पंथ का इस क्षेत्र में व्यापक प्रभाव था। वे मांसाहार के खिलाफ उपदेश दिया करते थे। छत्तीसगढ़ का अधिकांश परिवार देवी उपासक होता था। वे बलिप्रथा के मानने वाले होते थे। देवी के प्रसाद के रूप में उसे ग्रहण करते थे। उनमें ब्राह्मण भी होते थे। अपने दस वर्ष की उम्र में ही घर में मांसाहार बन्द करने के लिये सत्याग्रह कर बैठे। खाना–पीना छोड़कर रूठ गए। खूब मान–मनौवल हुई, बहिन समझाई, पिताजी समझाए। माँ ने प्यार भरी वाणी से दुलार कर समझाया। पर हठी बालक सुन्दरलाल मांस छुड़ाकर ही रहे। उसी दिन से पं. सुन्दरलाल भार्मा के परिवार में मांस खाना बंद हुआ। वे आशु कवि थे। प्रायमरी में ही कविता करने लगे थे। अद्भूत प्रतिभा थी। आड़ी–खड़ी चौखड़ी बनाकर बच्चों से कहते तुम किसी भी खण्ड में उंगली रखो, मैं शब्द लिखता हूँ। सभी खण्ड के पूरा होते ही एक कविता बन जाती थी। उसी कविता ने आगे चलकर सोलह किताबों की रचना की। छत्तीसगढ़ी और हिन्दी दोनों में समान रूप से लिखते थे। उनकी छत्तीसगढ़ी दानलीला ने तो हलचल मचा दी थी। वे एक भक्त कवि थे। नाटक भी लिखे, उसे खेले भी। स्वयं कलाकार के रूप में भाग भी लेते थे। मूर्तिकला एवं चित्रकला में भी उनकी महारत थी।

कृष्णलीला में कृष्ण जन्म के समय का दृश्य दिखाते समय, पीछे के परदे में जमुना का चित्र वहाँ की हरियाली गोचरण आदि से गोकुल का दृश्य दिखाई देता। उसी में वसुदेव जब जमुना पार करते समय टोकरी में बालक को लिए निकलते, उस समय टोकरी का मिट्टी का बना कृष्ण किसी जीवित बालक से कम नहीं दिखाई देता। जब वे 1922 में रायपुर जेल के बन्दी हुए, वहाँ अपने साथी भगवती प्रसाद मिश्रा को दण्डस्वरूप गुनारखाना ले जाने लगे तब उनका जल्लादों के साथ पकड़े हुए चित्र को, अपने जेल के पत्रिका जिसे उन्होंने कृष्ण जन्म नाम दिया था, उसके प्रथम चित्र में दिए। जो केवल पेन्सिल से बनाया हुआ चित्र है। उसका पत्रिका में जेल का पूरा वर्णन है। राष्ट्रीय आन्दोलन का वह दस्तावेज है। वे इस अंचल के प्रथम सत्याग्रही थे।

गाँधी जी के अस्पृश्यता निवारण आंदोलन को छत्तीसगढ़ में उनसे पूर्व ही प्रारंभ कर दिये थे, जिसके कारण गाँधी जी ने उन्हें अपना गुरू माना था। सामाजिक समता के आंदोलन के साथ ही साथ किसानों के शोषण के खिलाफ संघर्ष किये जो कंडेल सत्याग्रह के नाम से प्रसिद्ध है। जिसके कारण गांधी जी प्रथम बार छत्तीसगढ़ आए, जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किये। स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी योद्धा तो थे ही। अंचल के वैज्ञानिक विकास में भी अगुवा थे। कृषि में रोपा खेती का प्रारंभ वे ही किए। महानदी से उदवहन कर जल अपने बाग में ले जाते। विभिन्न प्रकार के फल उनके बाग में होते। प्रथम राईस मिल की स्थापना वे ही किये। उनके त्याग की पराकाष्ठा तो इसी में प्रगट होती है कि उनके 24 गाँव की खेती और जमीदारी राष्ट्रीय आजादी के आंदोलन में समाप्त हो गयी।

अपने अंतिम समय में भी सुसंस्कृत और सम्पन्न छत्तीसगढ़ देखना चाहते थे। इसलिये उन्होंने दुलरूवा नामक हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन किया। वह भी छत्तीसगढ़ के स्थिति का दस्तावेज था। इस छोटे से लेख में उनके कार्यों का वर्णन कर सकूँ वह असम्भव है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि जिन्होंने छत्तीसगढ़ की संस्कृति की पहचान बनाई, जिसके आधार पर आज छत्तीसगढ़ प्रान्त का निर्माण हुआ, उसके प्रेरणास्रोत कोई और नहीं पं. सुन्दरलाल शर्मा ही थे।

— पूर्व सांसद एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी,
सुंदरनगर, रायपुर

PUNDIT SUNDERLAL SHARMA
60
भारत INDIA
पंडित सुन्दरलाल शर्मा
1990